श्री

ज्योतिष्मती

त्रैमासिक

वर्ष
२३
सं० २०३७

संख्या
४
श्रावण











वार्षिक
मूल्य
१५.००

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

इस अङ्क का
मूल्य ४.००

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१	राष्ट्र अभ्युदयाय प्रार्थना	अथर्ववेद	३
२	राष्ट्र-चिन्तन	सम्पादकीय विचार	४–९
३	दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	१०–१२
४	श्री हरिरामजी साबूका पुण्यस्मरण	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	१३–१६
५	वैज्ञानिक अन्धविश्वास	श्री कुमार दैवज्ञ मोहनगुप्त	१७–२३
६	साधना और सिद्धिः	काव्यतीर्थ श्रीपं० चन्द्रभूषणजी शास्त्री	२४–२६
७	भारत दर्शन-गिरिनार (१)	डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री	२७–२९
८	भारतीय कल्पनामें भयिष्यका महत्त्व (२)	श्री प्रह्लादराय व्यास	३०–३२
९	भाग्यरेखा (२)	श्रीराधाकृष्ण शर्मा श्रीमाली	३२–३४
१०	ज्योतिष आराध्या श्री पंचांगुली महादेवी	श्री भारतभूषण भारद्वाज स्नातक	३४–३५
११	आयुर्वेदके अनुभव सिद्ध योग	श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा	३६–३७
१२	अचूक चांस तीन माहके	श्री पं० नरोत्तमदेव दीक्षित ज्योतिषी	३८
१३	त्रैमासिक राशि भविष्य	श्री पं० ओंकारनाथ त्रिवेदी ज्यो०	३९–४८
१४	त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	४९
१५	त्रैमासिक वाणिज्य व्यवसाय (दैनिक)	श्री मोतीलाल जैन ज्योतिषी	५०–५५
१६	वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य	श्री प्रेमचन्द जैन पोरसा वाले	५६–५७
१७	त्रैमासिक व्यापार भविष्य	श्री पं० ओंकारप्रसाद ज्योतिषी	५७–५८
१८	श्री शंकर व्यापार भविष्य	पं० श्री शिवचरणलाल शर्मा रमला.	५९–६३
१९	त्रैमासिक व्यापार सन्देश	ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन ज्यो०	६४–६७
२०	मृत्युञ्जयमहामंत्रका अनुभूत प्रयोग	श्री कन्हैयालाल शर्मा उपाध्याय	६८
२१	नवग्रह शान्तिका अनुभूत तान्त्रिक विधान	'ज्योतिष्मती' वर्ष १९ अंक ३ से	६९

आवश्यक निवेदन

इस अङ्कमें 'ज्योतिष्मती' का २३वां वर्ष पूर्ण हो रहा है। जो सज्जन इस वर्षके प्रथमाङ्कसे गतवर्ष ग्राहक बने थे उनका वार्षिक मूल्य इस अंकमें समाप्त है। आगामी २४वें वर्षके लिए छपा हुआ मनीआर्डर फार्म उनको इसी अंकमें साथ भेजा जा रहा है। कृपया वे अपना वार्षिक मूल्य पन्द्रह रुपये ३० सितम्बर १९८० तक शीघ्र भेज दें ताकि समय पर नववर्षाङ्क उन्हें प्राप्त हो सके।

भरसक प्रयत्नकरने और बढ़ाहुआ अधिक मूल्य देने पर भी दिल्लीसे हमें इस अंकके लिए पूरा सफेद कागज समय पर उपलब्ध न हो सका अतः इस अंकमें दो तरहका कागज लगाना पड़ा, इसका हमें खेद है। यदि सफेद कागजकी प्रतीक्षा करते तो यह अंक एक मास विलम्बसे छप पाता, अतः सोलनमें जैसा मिला उसी कागज पर आरम्भ और अन्तके पांच फार्म (पृष्ठ १ से १६ और ४९ से ७२) छापकर निश्चित तिथि आषाढ़ी व्यासपूर्णिमासे १० दिन पूर्व दि. १८ जुलाई ८० को यह अंक ५६ की अपेक्षा ७२ पृष्ठका पाठकोंको प्रेषित किया जा रहा है।

—व्यवस्थापक ज्योतिष्मती-निकेतन सोलन, १७३२१२ (हिमाचल प्रदेश)

❀ श्रीः ❀

ज्योतिष्मती

[भारतीय संस्कृति और ज्योतिर्विज्ञानकी प्रचारक प्रमुखपत्रिका]

सम्पादक एवं संचालक

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

मुख्य सभापति—अ०भा० ज्योतिषपरिषद् (भारत सरकारसे पंजीकृत)
अध्यक्ष—हिमाचल-प्रान्तीय विश्वहिन्दू-परिषद्, सोलन (हि०प्र०)

प्रकाशक

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचल प्रदेश)

Telegram—'Jyotishmati' Telephone-696

'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य

१. भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२. भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३. ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति और ज्योतिः-शास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्द्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक

(१) जो महानुभाव ५०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती'के संरक्षक माने जायेंगे। संरक्षकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे। सहायकोंके शुभ नाम मुख पृष्ठ पर छपेंगे।

(३) जो सज्जन एक बार ५०१) रु० देंगे वे आजीवन संमान्य सदस्य और जो १२५) रु० एक बार देंगे वे आजीवन सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्र शुक्ला १५ और आषाढ़ शुक्ला १५ को प्रकाशित होती है। इसका वार्षिक मूल्य १५.०० पन्द्रह रुपये और एक प्रतिके ४.०० चार रुपये मात्र हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतन की ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जायेंगे, अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (हिमाचल-प्रदेश) के पतेसे भेजनी चाहिएं।

(७) लेख आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए

(८) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विन मासकी शरद पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं—चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरदपूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे, या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछेका अङ्क न लेना चाहें तो वे बीचमें किसी भी समयसे वर्षभरके लिए ग्राहक हो सकते हैं।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनी चाहिए। पता अंग्रेजीमें लिखना हो तो घसीट अस्पष्ट अक्षरोंमें न लिख कर केपिटल लेटर्स (बड़े अक्षरों) में स्पष्ट लिखें। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य व एक अङ्कके मूल्यके नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'ज्योतिष्मती'का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिये टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि शुक्ला पूर्णिमा है। प्रकाशन तिथिसे सात दिन पूर्व प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथि से १० दिनके अन्दर अपना ग्राहक नम्बर लिखकर हमें सूचना देनी चाहिए।

व्यवस्थापक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हि०प्र०)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[त्रैमासिक पत्रिका]

(श्रावण-भाद्रपद-आश्विन दि० २८ जुलाई से २३ अक्टूबर १९८० तक)

गुम्फन्तीव पुरातनैरथ नवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समं
भाग्याभाग्यविनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष	सोलन, आषाढ़ शु० १५ रविवार, सं० २०३७ वि०	संख्या
२३	५ श्रावण, शाके १९०२ (२७ जुलाई १९८० ई०)	४

राष्ट्र-अभ्युदयाय प्रार्थना

अग्निर्मा गोप्ता परिपातु विश्वत उद्यन्त सूर्योनुदतां मृत्यु पाशान् ।
त्युच्छन्तीरुषसः पर्वताध्रुवाः सहस्रं प्राणामय्या यतन्ताम् ॥ अथर्व०१७।१।३०
उद्यते नम उदायते नम उदिताय नमः ।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः ॥ (अथर्व० १७।१।२२)
अस्तं यते नमोऽस्तमेष्यते नमोऽस्तमिताय नमः ।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः ॥ (अथर्व० १७।१।२३)

तेज पुञ्ज प्रभो ! भुवन भास्करके नियन्ता प्रभो !
भारतीजन व भारती राष्ट्रकी सब दिशाओंसे रक्षा करें ।
उदय होता सूर्य रोगोंका नाश करें, मृत्युके पाशोंको छिन्न-भिन्न करे ।
फैली उषाएं स्थिर पर्वत हमको व हमारे राष्ट्रको प्राणवान् बनाये ॥
पुरुषार्थीको मेरा नमस्कार है, उदित व उदीयमानको भी नमस्कार है ।
गणतंत्रों, स्वराज एवं विश्वव्यापी सम्राजको मेरा नमस्कार है ॥
विगत भूत, आसन्न भूत, एवं निकट भूतको मेरा बार-बार नमस्कार है ।
गणतंत्रों स्वराज एवं विश्वव्यापी सम्राजको मेरा नमस्कार है ॥

सम्पादकीय विचार—

राष्ट्र-चिन्तन

सत्येनोत्तभिता भूमिः सूर्येणोत्तभिता द्यौः ।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिविसोमो अधिश्रितः ॥

(अथर्व. १४।१।१) (ऋग् सूर्य सूक्त)

भूमि, सूर्य, द्यौ आदित्य और अन्तरिक्ष सबके सब सत्यके सहारे टिके हैं।
अतः कहा है :—

चन्द्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत् व्यवहार। पै दृढ़ हरिचन्दको टरै न सत्य विचार॥
तुलसी भी पीछे नहीं :—

रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाय पर वचन न जाई॥

लोकतन्त्रका रथ किस ओर ?

कहते हैं ५६ की बली देकर और लगभग ५६ करोड़ रुपये व्यय कर कांग्रेस (आई.) १९७२ के समान भी स्थिति न पा सकी। और तो और जनवरी १९७० में जहां पहुंची थी वहां भी मई १९८० में नहीं पहुंच सकी। पंजाब, बिहार, उड़ीसा और महाराष्ट्रमें श्रीमती गांधीका विजयरथ दलदलमें फंस गया है।

अभिमन्युका वध तो सात महारथियोंने किया था पर ७६ वर्षके उदयनारायण शर्माका वध ११ व्यक्तियोंने किया। क्या बिहारके गवर्नरने दु:ख शोकका एक शब्द भीं कहा ? पार्लियामेण्टने मार्शल टीटोके मरने पर शोक प्रकट किया, पर चुनाव संग्राममें हताहतों पर एक भी आंसू बहाया ? एक भारतीयके जीवन का कोई मूल्य नहीं। इंदौरमें जन्मा, यू.पी. में राजस्व-मन्त्री हुआ और बिहारमें प्राणोंकी आहुति देकर हुतात्मा उदयनारायण शर्माने अपने रक्तसे हिन्दी भाषी प्रदेशोंकी एकताको दृढ़ किया। यह एकता विश्व-इस्लाम और भारत विभाजक कांग्रेस (इ.) के लिये काल सिद्ध होगी। १० जून ८० को लोकसभामें पराजित, निष्प्राण विरोधी दल कहता सुनाई दिया "कांग्रेसकी यह दादागिरी नहीं चलने दी जायेगी"। लखनऊका समाचार है 'नये शासक विधायकोंने सरकारी फ्लैटोंके ताले तोड़ कर उन पर अधिकार कर लिया।'

इसमें एक महिलाको चार दिन पहले ही वह फ्लैट आवंटित हुआ था। वह गृह-विहीन हो गई। पर राज्य सम्पत्तिके अधिकारी उस महिलाकी कुछ भी सहायता नहीं कर सके। यह भारतेन्दुकी 'अन्धेर नगरी' नाटक की स्मृति नई कर देती है। जगा देती है।

कर्नाटकके मुख्य मंत्रीने अपने खाद्य मंत्री श्री इब्राहीमको मंत्रिमण्डलसे अलग करनेसे इन्कार कर दिया। यद्यपि उसके भाई खादर

पर पुलिसको एक हरिजन बालककी हत्या करनेका सन्देह है। रुड़की विश्वविद्यालयका छात्रावास छात्रोंसे शून्य कर दिया गया है।

राज्यसभामें १० जूनको दो सदस्योंने कहा सरकारकी साख संदिग्ध है। बात क्या थी, वाशिंगटनमें एयर इंडियाके लिये बोइंग ७३७, ६ यात्री विमान खरीदनेके लिये एक्स-पोर्ट-इम्पोर्टबैंकसे ३५० लाख डालर कर्ज लिया। करार पर हस्ताक्षर हुए ६ जूनको। उड्डयन मंत्री श्री अनन्त प्रसाद शर्माने १० जून को कहा—'एयर इंडिया पाँच नहीं तीन विमान खरीद रहा है, जब कि ६ विमान खरीदनेकी बात पक्की हो चुकी है। और दो का क्रय करने की बात चल रही है। ये कुछ उदाहरण नये शासनकी बानगी बतानेको पर्याप्त है।

निरक्षरता, दरिद्रता, कंगालीकी विजय—

प्रसिद्ध विधिज्ञ बैरिस्टर पालकीवालाका मत है—'भारतकी निरक्षरता और दरिद्रता राजनीतिकों—कांग्रेस व शासकवर्ग—के निहित स्वार्थका परिणाम है।' श्रीमती गांधी मई १९८० में ३५-३७ प्रतिशत वोट पाकर आठ राज्योंकी शासन सत्ता कांग्रेस (इ) को दिला सकी हैं। वोट बैंकमें क्या जमा है? निरक्षर गिरिजन, हरिजन और विश्व-इस्लामके पोषक मुस्लिम। मध्यप्रदेशकी ३२० सीटोंमें १६० सुरक्षित हैं। पर्यवेक्षक कहते हैं सुरक्षित सीटों मेंसे ६० प्रतिशत सीटें श्रीमती गांधीने जीती हैं। इस वास्ते ३० वर्ष बाद भी सुरक्षित सीटें कायम हैं। २००० ई० तक कायम रहेंगी, क्योंकि अंग्रेजी हटाई नहीं जायेगी। यह वर्ग-भेद मिटेगा नहीं। राष्ट्रीय धारामें ये लोग क्या अंग्रेजीके रहते सम्मिलित हो सकेंगे?

सन् १८५७ की जन-संक्रांतिकी पुनरावृत्ति रोकनेके लिये ब्रिटिश शासनने इस देशको निरक्षर बनाया, जिसका प्रत्येक निवासी साक्षर था। सार्वत्रिक साक्षरता जनताके गांवों की पंचायतोंके प्रयत्नका फल थी। विदेशी शासनकी यह देन न थी। अतः जनताको दरिद्र बनाना जरूरी था। भूमिकर मनमाना बढ़ाया गया। दरिद्र किसान पेट पालता या विद्या दान देता। दरिद्र कंगाल तो क्रांति करेगा नहीं। इस ब्रिटिश नीतिको सत्ता हस्तांतरणके बाद भी जारी रखा गया। कांग्रेस इसके अभाव में क्या शासनसूत्र पा सकती थी? सन् १९७२ में घोष उठा—'गरीबी हटाओ।' इसका विनोदी पत्रकारोंने अर्थ किया—'गरीबोंको हटाओ'। 'शाह रिपोर्ट' क्या यह बात नहीं कह रही? १९७२ में ३६ प्रतिशत जनता दरिद्रताकी सीमा रेखाके नीचे जा रही थी। सन् १९७६ में इनकी संख्या बढ़कर ४२ प्रतिशत हो गई। इस पर भी सन् १९८० में इसी जनताने श्री-मती गांधी पर विश्वास किया। पंचतंत्रके गधेको भूल गये। जो एक बार शेरके पंजोंमें आनेसे बचकर आगया था। किन्तु गीदड़ फिर दुबारा गदहेको शेरके पास ले जानेमें सफल हुआ। श्रीमती गांधीकी विजयका रहस्य इसमें निहित है। १९८१ या १९८२ में आम चुनाव की बात कहने वाले अकारण नहीं कहते।

पहली बात यह है कि बहुसंख्यक वर्ग विश्व इस्लामकी जड़ जमाने न देगा। उड़ीसामें तीन मुस्लिम एम. एल. ए. इस बार कांग्रेस टिकट पर पहली बार चुने गए हैं। दिल्लीमें उर्दू अकादमीकी घोषणा इसी शृंखलामें एक कदम है। शिक्षामंत्री हरिजन हैं।

बिहारके मुख्य मंत्री डा० मिश्रने बिहार की दूसरी भाषा उर्दू घोषित की है। १९३७ से पहले बिहारमें उर्दूको कोर्टमें भी स्थान नहीं मिला था। कांग्रेसकी यह इस्लाम-भक्ति इसको भविष्यमें तारेगी नहीं। अकारण शासन व्यय बढ़ाया गया है।

मराठोंका महाराष्ट्रमें वर्चस्व समाप्त करनेके लिये और विश्व इस्लामको बल देनेके लिये अब्दुररहमान अन्तुलेको तिकड़मसे मुख्य मंत्री बनाया गया है। इसने शरद पँवारके नेतृत्वको चमका दिया। फलत: कांग्रेस (अ.) विधानसभा में ५० सीटें प्राप्त कर सकीं। आया राम गया रामकी हरयाणा-राजनीतिके लिये यह आधार छोटा नहीं। मंत्रिमण्डलका १५ जूनसे पहले न बनना यही बताता है। राजस्थानकी भी यही बात है। यू.पी. में कांग्रेस (ई.) ने अपने हाथों यू. पी. से ब्राह्मणोंका वर्चस्व समाप्त कर दिया। युव कांग्रेसने डॉ० विश्वनाथ-प्रतापसिंह राजपूत (४९) को मुख्यमंत्री बनाया है। क्योंकि युव-कांग्रेसके अध्यक्ष श्री संजयसिंहको मुख्य-मंत्रीकी भतीजी ब्याही है। स्वर्गका ठेकेदार ब्राह्मणवर्ग क्या यह गठबन्धन सह सकेगा?

श्रीमती गांधी दरिद्रता बढ़ाने वाली हैं। १९१७ तक भारतकी जहाज गोदियां ब्रिटिश नौसेनाके वास्ते जंगी जहाज बनाती थीं। ब्रिटिश शासनने जहाज निर्माण उद्योगको नष्ट कर दिया। कांग्रेस और श्रीमती गांधीने नौ-निर्माण उद्योगको पनपने नहीं दिया। सोवियत रूस १९६२ के बाद इस ओर प्रवृत्त हुआ। आज वह व्यापारिक व सामरिक बेड़ेमें अमेरिकाके समकक्ष है। इधर भारतका क्या हाल है? संसदमें मंत्री महोदयने स्वीकार किया कि सरकारको पता है, विदेशी जहाज 'तूना' मछली पकड़ रहे हैं। एफ. ए. ओ. के अनुसार मछलियां इस प्रकार पकड़ी गईं :—

१९७७ में—१·९५ लाख टन
१९७८ में—१·१७ लाख टन

भारतके कोष पर दिन दहाड़े डाका पड़ रहा है और सरकार सो रही है, क्या यह भारतकी दरिद्रता बढ़ाना नहीं?

चुनाव जीतनेके लिये दो लाख टन चीनी लंदनसे खरीदी गई, हिन्देशियासे नहीं, जहां दाम ४०० रु० टन था। विचित्र बात यह है—चीनीके मिल-मालिक १० लाख टन चीनी निर्यात करनेकी बात कह रहे हैं। सरकार भी निर्यात करनेका विचार कर रही है। विचारणीय प्रश्न मात्राका है। क्या यह घटना यह नहीं बताती कि श्रीमती गांधी जनहितकी भावनासे काम नहीं करतीं। यह स्वरूप प्रकट होने पर क्या भूखे नंगे जन क्रांति न करेंगे? क्योंकि क्रांतिका बिगुल बजाकर ये कुछ न खोयेंगे।

विश्व-इस्लाम भारत राष्ट्रके लिये सबसे बड़ा खतरा

वाग्मीप्रवर स्व० श्री विपिनचन्द्र पालने १९०८ में कलकत्तेमें बक्सर जेलसे छूटनेके बाद भाषण देते हुए विश्व इस्लामसे भारतको सावधान होनेको कहा था। पुन: १९१३ में अपने मासिक "हिन्दू रिव्यू" में 'विश्व इस्लाम-वाद' शीर्षकसे एक लम्बा लेख लिखा। उसका यह वाक्य स्मरणीय है :—

"हमारे लिये वास्तविक खतरा यूरोपसे

नहीं, एशियासे आने वाला है। हमें अब एक ओर चीन, दूसरी ओर विश्व-इस्लामवादके खतरेका विचार करना चाहिये। यदि भारत के आठ करोड़ मुस्लिमोंमें विश्व-इस्लामवाद का जोश जागृत हो गया, और उन्होंने हमारे पश्चिम और पश्चिमोत्तर भारतकी मुस्लिम ताकतोंसे नाता जोड़ लिया तो वे हमारी समस्त राष्ट्रीय आकांक्षाओं पर पानी फेर सकते हैं।" यह बात सन् १९१३ में कही गई थी और तब मुसलमान भारत प्रायद्वीपमें ८ करोड़ थे। आज लगभग २० करोड़ हैं। भारतको विखण्डित कराकर भी इनको सन्तोष नहीं हुआ।

इस्लाम आक्रामक है—भारतमें इस्लाम आक्रान्ता होके आया। ७३२ ई० में मुहम्मद-बिन कासिमने मुल्तानका विशाल सूर्य मंदिर ढाह दिया, वह आज तक ढहा पड़ा है। मुस्लिम आज भी आक्रान्ता बना हुआ है। आसाम पर इसका विशाल आक्रमण है। आसामको इस्लाम निगल जाना चाहता है। इस्लाम शान्ति और सद्भावका शत्रु है। वर्मा, थाईलैण्ड और फिलीपीन इसके उदाहरण हैं। आसामके छात्रोंने इस ओर देशका ध्यान खींचा है।

श्रीविपिनचन्द्रपालने लिखा था—"मुस्लिम-जन संख्याकी तेजीसे वृद्धि विश्वके लिये भारी खतरा है।" विश्व-इस्लामवादका जन्म भारत में ही हुआ है। भारतीय राष्ट्रवादकी प्राप्तिमें यह सबसे बड़ा खतरा है। विखण्डित भारत श्री विपिनचन्द्रपालकी बातकी पुष्टि कर रहा है। आसामकी समस्याका मूल इसमें निहित है। भारत-भक्तिकी पवित्र गंगा इस सारे प्रदेश में प्रवाहित नहीं की गई। मिशनरी और इस्लाम इसको नष्ट करने वाले तो पहुंचे। पर भारत भक्ति नहीं। आसाम पर मुस्लिम चढ़ाई १९०१ से जारी है। २६ मई १९८० को जिस इलाकेमें मुस्लिम अशांति उत्पन्न हुई या शासनने पैदा की, उसमें मुस्लिम जनसंख्या किस रीतिसे बढ़ी यह देखिये :

मुस्लिम प्रतिशत

	१९११	१९७१
ग्वालपाड़ा	४१·२५	५६·२
नवगांव	२९·४६	५३ ६
कामरूप	२६·९३	३९·६१
दरंग	१६·१९	३१·६१

यही कारण है १९५२ की आसाम विधान सभामें कुल ६ सदस्य थे। १९७७ की विधान-सभामें २८ हो गए। इन्हींके कारण जनतापार्टी का मंत्रिमण्डल टूटा। इन्हीं पर श्रीमती गांधी की आशा पुन: सत्ता पाने पर ठहरी हुई है। यही कारण है कि राष्ट्रपति शासन ६ मासके लिये और बढ़ा दिया गया पर विधान सभा भंग नहीं की गई। सदस्य वेतन पाते रहेंगे। छात्रोंके इस जन आन्दोलनसे विधानसभाके सदस्योंको सदस्यताका त्याग करना चाहिये। श्रीमती गांधी चिंतित हैं। और इसी कारण १९५१ को आधारवर्ष मानकर विदेशी नागरिकोंके नाम मतदातासूचीसे निकालनेको तैयार नहीं। श्री नेहरूने इस खतरेको १९६३ में भांपा था। संयुक्त राष्ट्रके लिये उनका तैयार किया वक्तव्य महत्वपूर्ण है।

सम्पूर्ण भारतकी तुलनामें आसामकी जन-

संख्याका अधिक मात्रामें बढ़ना सूचित करता है कि मुस्लिम निःशस्त्र आक्रमण ब्रिटिश शासन के प्रोत्साहनसे हुआ। कांग्रेसने अपने हितका विचार कर भारतका बलिदान कर दिया।

जनसंख्याकी प्रतिशत वृद्धि

सम्पूर्ण भारत	आसाम
१९०१ से ११—५·७	१६·८
१९११ से २१—०·३	२०·२
१९२१ से ३१—११·००	२०·१
१९३१ से ४१—१४·२	२०·१
१९४१ से ५१—१३·३	२०·१
१९५१ से ६१—२०·६	३१·०
१९६१ से ७१—२४·६	३०·६

१९११ से २१ में युद्ध ज्वरके कारण सारे देशकी जन-संख्या घटी, पर आसामकी २०·२ प्रतिशत बढ़ी। इन्हीं लोगोंने १९६२ में चीन का स्वागत करनेका आयोजन किया था। २६ मई १९८० को इन्हीं लोगोंने 'मुजीबुर रहमान-जिन्दाबाद' और 'आसाम मुर्दाबाद' के नारे लगाए। बंगला देशका झण्डा लेकर जलूस निकाला। कांग्रेस इनको निकालना नहीं चाहती। श्रीमती गांधी कट्टरता और राष्ट्रद्रोह की रक्षा करना चाहती है। मुसलमान अपने को असमियां नहीं मानते। नागरिकताका अधिकार क्या भारत अभक्तको प्रदान करना चाहिये? छात्रोंने यह मूल प्रश्न उठाया है। भारतकी प्राचीन परम्पराको ८०० ई० पू० पहले पाणिनीने तीन सूत्रोंमें बांधा है। ये हैं—

१—अभिजनश्च
२—सोऽस्य निवासः
३—भक्तिः

निवास और जन्मसे अधिक महत्वपूर्ण है राष्ट्रभक्ति। यही कारण है बर्लिन पर भारी बम वर्षा होने पर भी स्वीडिश दुकानदारने बर्लिन छोड़ना स्वीकार नहीं किया। पूर्वी पाकिस्तान-बंगलादेश-से किस बड़ी संख्यामें लोग आसाम त्रिपुरा और पश्चिमी बंगालमें अनधिकार प्रवेश कर रहे हैं, यह बतानेके लिये श्री नेहरूने निम्न तालिका दी थी। छात्र १९५१ को ही क्यों 'कटवर्ष' माननेका आग्रह कर रहे हैं और श्रीमती गांधी क्यों १९७१ पर अड़ी हुई हैं। इस दुराग्रहका कारण निम्न तालिकामें देखा जा सकता है।

मुस्लिम अनधिकार प्रवेश

१९५१—१९६१ को अवधिमें

	मुस्लिमजन १९५१ में	मुस्लिमजन १९६१ में	प्रतिशत वृद्धि
असम	१९९६०००,	२७६५०००	३९
प० बंगाल	५११८०००,	६९८५०००	३८
त्रिपुरा	१३७०००	२३००००	६८

स्पष्ट है—आसामके छात्रोंका आन्दोलन पूर्णतः राष्ट्रीय है और भारतको इस्लामीवादसे बचानेके लिये है।

इस्लामी संकट गंभोर है—

मुस्लिम जनसंख्या ३० प्रतिशतकी दरसे, ईसाई ३२ प्रतिशतकी दरसे बढ़ते हैं। इस समय स्थिति क्या है:—

मजहबी अल्पसंख्यक वर्ग

मुसलमान	— ८ करोड़
ईसाई	— २ करोड़
योग	१० करोड़

यदि हरिजन इस पक्षमें हो जायें जैसा कांग्रेस (ई.) में है, तो यह संख्या होगी २० करोड़। सवर्ण हिन्दू इस समय लगभग ४०-४५ करोड़ हैं। जिस रीतिसे यह मजहबी अल्प-संख्यक बढ़ता है उसको देखते हुए २०२० ई० में वह होगा ८० करोड़ और सवर्ण होंगे लगभग ६० करोड़। इस अवस्थामें भारतका शासक कौन होगा। आत्मरक्षाके विचारसे आसामके छात्रोंके आन्दोलनका प्रबल समर्थन करना ही पर्याप्त नहीं। भारतके मुस्लिम तीसरी पीढ़ीके हैं। मेव औरंगजेबके समय मुसलमान बने थे। १९४७ में ये पुन: अपने पूर्वजोंके धर्मको स्वीकार करनेको तैयार थे। किन्तु इनको ऐसा करनेसे कांग्रेसी नेताओंने रोक दिया। अत: सवर्ण हिन्दू इनको सामूहिक रूपसे अपनावें तो अधिकांश मुस्लिम अपने पूर्वजों का धर्म स्वीकार कर लेंगे। इस रीतिसे भारत इस्लामवादका गढ़ बननेसे बचाया जा सकता है। बृहत्तर भारतके निर्माणका बीड़ा उठाएं, विजय आकांक्षा जगने पर यह संभव है।

हम भारत भक्त हों। यही एक मात्र उपाय है। अथर्वा ऋषि मार्ग बतला गए हैं :—

गांव, वन, अरण्य, सभा, समिति, रणक्षेत्र जहां कहीं हों, जिस किसी स्थितिमें हों—

भारत मांकी सदा स्तुति करें—

ये ग्रामा यदरण्यं या सभा अधिभूम्याम्।
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारुवदेम ते॥

(अथर्व० १२।१।५६)

याद रखें—"नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय।"

तुहिन-कण

पुष्प पर बिखरे तुहिन-कण
कितने उज्ज्वल कितने निर्मल !
गुलाब की लाल पंखुरियों पर,
मोती से चमकते
चांदी से दमकते।
कोमल-किसलय अंक में
छुपे हुए शीतल कण।
उषा की लाली में
कितने मोहक लगते ये रजत-कण।
लो प्रभाकर का रथ आ पहुंचा
स्वर्ण-रश्मि बिखेरता।
चमके तुहिन-कण अब ज्यों स्वर्ण-कण।
धीरे-धीरे रवि-रश्मि हुई प्रखर।
स्वर्ण-कण की आभा ली हर।
अरे ! इस कोमल किसलय आँचल से
गया कहां वह मोती-कण ?
अभी यहां था सौन्दर्य बिखेरता,
क्या क्षण में ही वह विलीन हुआ ?
मानव-जीवन तेरा भी है यही अन्त
ज्यों नष्ट हुआ यह क्षुद्र तुहिन-कण।

—श्रीमती ललिता शर्मा
एम. ए. बी, एड
(सुपुत्री श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी)
एफ. ३४, साउथ एक्सटेंशन, पार्ट १
नई दिल्ली।

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार चक्र

आगामी कुछ वर्ष विश्वके लिए अग्निपरीक्षाकारक

केन्द्र और प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलों विधानमण्डलोंमें गतिरोध, अर्थतन्त्र अस्तव्यस्त
प्रकृतिप्रकोप, उत्पात, अनाचार, अपहरण, हिंसाकाण्डका अकाण्ड-ताण्डव

स्वतन्त्र भारतका चौंतीसवां वर्षलग्न

नये वर्षका पूर्वार्ध भारतके लिए कठिन कसौटीका

—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी—

विगत ५-६ वर्षोंसे हम 'ज्योतिष्मती'के इस स्तम्भ और' श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग'में कर्क सिंह राशिके शनि और उसके साथ राहु भौमादि ग्रहोंके योगायोगका जो दुष्प्रभाव प्रकट करते आ रहे हैं उसका फल गत मध्यावधि चुनावको छोड़कर अन्य सभी विषयोंमें सत्य प्रमाणित होकर ज्योतिर्विज्ञानने अपनी प्रामाणिकता प्रकट कर दी है। गणितके अतिरिक्त संसारका राज्याश्रयप्राप्त सुसंगठित कोई भी विज्ञान शतप्रतिशत सत्य सफल होनेका दावा नहीं कर सकता, तो फिर निराश्रित साधन-सुविधा हीन असंगठित फलित ज्योतिर्विज्ञान में कुछ त्रुटि रह जावे तो क्या आश्चर्य? अस्सी नब्वे प्रतिशत तक भावी घटनाओंके सत्यप्रमाणित होने पर कोई भी राज्यसरकार या धनीमानी नेता फलित ज्योतिर्विज्ञानको प्रोत्साहन देनेकी अपेक्षा उसकी आलोचना करके दैवज्ञोंको निरुत्साहित करते हैं। यह स्वतन्त्रभारतका दुर्भाग्य है। हमारा विश्वास है कि अब भी यदि केन्द्रीय या प्रान्तीय सरकारें जहां नवीन योजनाओंमें करोड़ों रुपये व्यय करती हैं वहां वे कुछ लाख रुपये व्यय करके भारतके प्राचीन फल-विशेषज्ञों, संहिताशास्त्रियों शाकुनिकों तंत्रमर्मज्ञों वैदिकोंको संगठित करके कमसे कम तीन वर्षका समय प्राचीन अर्वाचीन सिद्धान्तोंके अनुसार अनुसन्धान करनेका अवसर दें तो यह राष्ट्रके लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके प्रारम्भिक व्यय और कार्यक्रमकी रूपरेखा हमने कुछ वर्ष पूर्व अपने पंचांग और इस पत्रिकामें भी प्रकाशित की थी, परन्तु उस पर आज तक किसीने ध्यान नहीं दिया।

आजसे ६ वर्ष पूर्व कर्क सिंहराशिमें प्रवेश होने वाले शनिके दुष्प्रभावका फल हमने पंचांग और इस पत्रिकामें प्रकाशित किया था। गत वर्ष २२वेंके चौथे अङ्कमें (श्रावण २०३६ वि० में) पृष्ठ ५८।५९।६१।६२।६३ में लिखी कुछ पंक्तियां अक्षरशः इस प्रकार हैं—

"………जुलाई मास (७९) में केन्द्र और कुछ प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें अकल्पित उलटफेर होगा। कांग्रेस और जनतापार्टीके विघटनसे जनतामें असन्तोष व्याप्त होगा। ……… आगे सिंहके शनिमें जनतापार्टीमें दरार पड़ेगी। कुछ प्रभावशाली व्यक्ति पार्टी छोड़कर नया दल बनावेंगे। ………भारतमें कुछ प्राकृतिक एवं राजनैतिक अकल्पित घटनाएं

घटित होंगी।....... केन्द्रमें प्रधानमन्त्री और प्रान्तीय मुख्यमंत्रियोंके सामने नित्य नयी समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी। निष्ठावान् राष्ट्रपुरुषों या आदर्शवादी मन्त्रियोंकी शनि टांग खींचेगा, फलतः केन्द्र और प्रान्तीय मन्त्रि-मण्डलोंमें अन्तःकलह अविश्वासका कारण बनेगा।.........अतः जनतापार्टीका विवाद उग्र रूप धारण करेगा। घटकवाद और स्वार्थी तत्त्वोंकी दलबन्दियोंके कारण वर्षारम्भमें ही पार्टी विघटनके कगार पर पहुँचेगी।........ जुलाई अगस्त (७९) भारतकी राजनीतिमें ऐतिहासिक घटनाकारक हैं.........उच्चपदा-सीन राष्ट्र नेताओंके लिए यह वर्ष अग्नि-परीक्षाकारक है ....इस वर्षके अन्तमें किसी महापुरुषका अवसान होगा।"

वर्तमान वर्ष सं० २०३७ वि० के 'श्री-विश्वविजयपंचांग' और 'ज्योतिष्मती' २३।२ माघ सं० २०३६ वि० के अङ्कमें पृष्ठ ११-१२ की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं—

".........यह वर्ष भारतकी राजनैतिक आर्थिक सामाजिक स्थितिके लिए घोर अशान्ति या अग्निपरीक्षाकारक सिद्ध होगा। वर्षके पूर्वार्धमें २६ जुलाई ८० तक भारतमें अनेक दुःखद घटनाएं होंगी।.........नये प्रधानमंत्री को ग्रहण लगना प्रारम्भ होगा।.......दो प्रधान राजपुरुष पदच्युत या कालकवलित होंगे। पूर्वी भारतका सीमाप्रान्त प्रकृतिप्रकोष और विदेशी षड्यन्त्रका शिकार होगा।"

दुर्घटना और बलात्कारोंकी पराकाष्ठा

वर्तमान वर्षके प्रारम्भसे अब तक शनि-मंगल राहुके स्तम्भी वक्रमार्गादि योगोंसे जो प्रतिदिन भयानक दुर्घटनाएँ, अपहरण बलात्कार की खबरें और राजनैतिक गतिरोध तथा वस्तु मात्र पर मँहगाई बढ़ती जा रही है इससे सभी त्रस्त हैं। शनि मंगलका सिंह राशिमें युद्ध (अंश साम्ययुति) अभी गत २४ जून ८० को हुआ फलतः २३ जूनको श्री संजयगांधीका दुर्घटना में निधन और २४ जूनको भू०पू० राष्ट्रपति गिरिके निधनसे भारतमें अभूतपूर्व शोक छा गया। जून मासमें ही त्रिपुरामें भयंकर सामूहिक हत्याकाण्ड हुआ और बागपतके जघन्यकाण्डमें एक अबला पर नृशंस बलात्कार करके उसके पति समेत ३ युवा पुरुषोंको गोलियोंसे भून डाला। इन्हीं दिनों मध्यप्रदेश उ०प्र० में भी भारतकी निरपराध अबलाओं पर आरक्षी कहलाने वाली पुलिसके द्वारा बलात्कार हुआ है और ये अनाचार अभी बढ़ते जा रहे हैं। जिस देशमें मातृशक्तिका अपमान होता है वह देश नष्ट हो जाता है। द्रौपदी और माता सीताके अपमानका परिणाम विश्वविदित है। ऐतिहासिकोंका कथन है कि भूत, भविष्य या वर्तमानमें बदलता है। बागपतकी मायादेवी कहीं वर्तमान शासनके लिए कालरूप न बन जावे। आगामी वर्षकी ग्रहस्थिति सन्तोषप्रद नहीं दीख रही। हमने जैसी ग्रहस्थिति समझमें आई निर्भय होकर सदा कटु सत्य लिखा है। कुछ तांत्रिकों और दैवज्ञोंने स्वार्थवश संजय गांधीके लिए महान् उत्कर्षकारी उज्ज्वल भविष्य और दीर्घायुकी भविष्यवाणी की है। इसी प्रकार श्रीमती गांधीका सचिव सलाहकार वर्ग भी उन्हें ठकुरसुहाती कहकर प्रसन्न करना चाहता है। वास्तविक स्थितिसे अवगत कराने वाला कटु सत्यभाषी विरला ही कोई हो।

जहां सचिव वैद्य और गुरु किसी भी स्वार्थ या भयके कारण (सत्यको छिपाकर) प्रिय वचन (ठकुर सुहाती) बोलते हैं वहां राजधर्म और स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है। गोस्वामी श्री तुलसीदासजीने सुन्दरकाण्डमें लिखा है—

सचिव वैद्य गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भय आश।
राज धर्म तनु तीनिकर, होय वेग ही नाश॥

हम श्रीमती गांधीसे विनम्र निवेदन करेंगे कि अब इस संक्रमणकालमें वे पदलोलुप स्वार्थी चाटुकार लोगोंसे सावधान रहकर दूरदर्शितापूर्ण ऋतम्भराप्रज्ञासे काम लें तो वे सभी सम्भाव्य विघ्नबाधाओंको पार करके भारत का नव-निर्माण कर सकेंगी।

स्वतन्त्र भारतका ३४वां वर्षलग्न

सं० २०३७ वि० श्रावण शु० ४ दि. १४ अगस्त १९८० ई० को सूर्योदयात् इष्ट घटयादि १३।३२ भारतीय स्टेण्डर्ड टाइम ११।१८ पर दिल्लीमें निरयण तुला लग्नके ९वें अंश पर भारतीय स्वतन्त्रताके ३३ वर्ष पूर्ण होकर ३४वां वर्ष प्रवेश होगा। सदाकी भांति स्वतन्त्रताका उत्सव और राजकीय अवकाश १५ अगस्त शुक्रवारको मनाया जावेगा। उस समयकी ग्रहस्थिति यह है—

वर्ष लग्न (३४वां)



रिक्ता तिथि और गुरुवारमें नया वर्ष प्रवेश हो रहा है। राज्येश चंद्रमा, धनेश पंचमेश मंगल, चतुर्थेश पंचमेश मुन्थेश शनि १२वेंमें, नवमेश बुध और लाभेश सूर्य दशम भावमें राहुग्रस्त हैं। ताजिक ग्रन्थोंमें द्वादशस्थ चन्द्र-शनिका फल यों लिखा है—

द्रव्यक्षयं क्षुधाल्पत्वं नेत्ररुक्कलहो गृहे।
वर्षकाले व्ययस्थाने चन्द्रः कुर्यादिदम्फलम्॥
पादाक्षि हृदयेपीड़ा द्रव्यनाशं नृपाद्भयम्।
कलहं बन्धुवर्गादौ कुर्यान्मन्दो व्ययस्थितः॥

ये सब योग राष्ट्रकी राजनैतिक सामाजिक आर्थिक स्थितिको भयाक्रान्त बनाने वाले हैं। प्रजासत्ताकारक चन्द्रमा राज्येश बनकर त्रिकमें शनि मंगलसे आक्रान्त है अतः सत्तारूढ़ दल और प्रतिपक्षमें घोर संघर्ष होगा, मंगलके कारण युवाशक्तिमें भी दरार पड़ेगी। एक दूसरेकी भावनाको यथार्थवादी दृष्टिकोणसे न समझ पानेसे राष्ट्रका अहित होगा। वर्षका पूर्वार्ध राष्ट्रके लिए कठिन कसौटीका है। राज्येश चन्द्रमा नवांश कुण्डलीमें भी कुम्भ राशिमें राहुके साथ है अतः अक्टूबरसे दिसम्बर तक कुछ आकस्मिक परिवर्तन होंगे। इस वर्ष प्रधानमंत्रीको स्वास्थ्यकी ओरसे विशेष सतर्क रहना आवश्यक है। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, उ०प्र० बिहार के मंत्रिमण्डलोंमें उलटफेर और विधानमंडलोंमें अकल्पित अशोभनीय काण्ड होंगे। प्रकृति-प्रकोप हड़ताल तालाबन्दी घेराव धरना आदि से यत्रतत्र अशान्ति फैलेगी। अतिवृष्टि अनावृष्टि भूकम्प झंझावात चक्रवात समुद्री तूफान से भारी हानि होगी। रेल-वित्त-गृह-योजना-

(शेष पृष्ठ १६ पर)

'ज्योतिष्मती'के स्नेही सन्मित्र—

श्री हरिरामजी साबूका पुण्य-स्मरण



श्री हरिरामजी साबू

जन्म तिथि — आषाढ़ कृष्णा ६ मंगलवार
सं० १९६३ वि० तदनुसार १२ जून १९०६ ई०
इष्ट घट्यादि ३५।११, सू० १।२८, ल० ८।२



निधन तिथि — प्र० ज्येष्ठ कृष्णा ८ गुरुवार
सं० २०३७ वि० तदनुसार ८ मई १९८० ई०

कबीरा जब हम आये थे तो जग हँसा हम रोये।
अब ऐसी करनी कर चलो तुम हँसो जग रोये॥

भारी दुखी मनसे ये पंक्तियां लिखनेके लिए विवश हो रहा हूँ। राजस्थानके सुप्रसिद्ध उद्योगपति परमधार्मिक उदारमना श्रेष्ठिवर श्री हरिरामजी साबूका ७४ वर्षकी आयुमें गत दि. ८ मई १९८० ई० को कलकत्तामें देहावसान हो गया। आप गुणग्राही विद्वज्जनानुरागी उदारचरित महामानव थे। पिलानीके माहेश्वरी साबू परिवारमें १२ जून १९०६ को धनुर्लग्नमें आपका जन्म हुआ। शैशवकालसे ही आपने अपनी व्यवसायात्मिका प्रखरबुद्धि सत्यनिष्ठा एवं कर्तव्य परायणतासे बिरला-परिवारको प्रभावित किया और बिरलाबन्धुओंके आप विश्वस्त सलाहकार रूपमें अग्रसर हुए। इन पंक्तियोंके लेखक और ज्योतिष्मती-परिवारसे आपका स्नेह सम्बन्ध विगत २५ वर्षोंसे उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। आप जैसे उदारचरित धर्मनिष्ठ गुणीजनसे आत्मीयजन जैसा स्नेह पाकर मैं गौरवान्वित था। जयपुर में महावीरमार्ग स्थित आपका 'अशोक-निवास' मेरा भी आवासस्थल बन गया था। विगत २० वर्षोंमें जब-जब भी मैं अपने इष्टमित्रों वा पारिवारिकजनोंके साथ जयपुर गया हूं तब आप ही के पास ठहरा हूं। एकबार अजमेरसे आते हुए बन्धुवर श्री जोशीजीके बंगले पर ठहर गया और साबूजीको पता चला तो गाड़ी भेजकर अपने पास बुला लिया।

जब मैं अ०भा० गुर्जरगौड़ ब्राह्मण-महासभाका अध्यक्ष था तब ३-४ बार कार्यकारिणीकी मीटिंगें जयपुरमें हुई। एक बार स्थानीय सज्जनोंने मेरे ठहरनेका प्रबन्ध राजहंस होटलमें किया और प्रात: रेल्वे स्टेशन पर स्वागत करनेके लिए कुछ सज्जन पहुंचे। उसी गाड़ी पर श्री साबूजी भी स्वयं मुझे लेने आ पहुँचे और मेरे स्वजातीय बन्धुओंको कह दिया कि—"त्रिवेदीजी ठहरेंगे मेरे पास ही, आपके कार्यक्रमका जो समय हो उसकी सूची मुझे दे देवें, निश्चित समयसे १० मिनट पहले निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचानेकी जिम्मेदारी मेरी है। गाड़ी दिनभर इनके पास रहेगी, आप फोन करके जब चाहें बुला लेवें।" इतने बड़े वयोवृद्ध प्रसिद्ध नागरिकके आत्मीय स्नेहके आगे मुझे तथा कार्यकारिणी सदस्योंको भी झुकना पड़ा।

श्री साबूजीकी धर्मपरायणा लक्ष्मीरूपा पत्नी श्रीमती गोमतीदेवी जी भी एक आदर्श शान्त गम्भीर उदार विचारकी महिलारत्न हैं। मातृस्नेहसे ओतप्रोत आपका निर्मल स्नेह आज भी मुझे भावविभोर बना देता है। साबूजीका स्नेहपूर्ण स्वागत और माताजीका मातृस्नेह मुझे जयपुरमें अन्य किसी भी निकट सम्बन्धीके यहां ठहरने नहीं देता। किन्तु, आज साबूजीके अभावमें एक बार तो 'अशोक-निवास' मेरे लिए भी शोकका कारण बन स्नेहाश्रु बहा रहा है।

साबूजीने अपने जीवनकालमें अनेक पारमार्थिक कार्य एवं सदनुष्ठान किये हैं। नित्य आपके बंगले पर पञ्चायतन पूजा रुद्राभिषेक मृत्युञ्जय जप ब्राह्मण द्वारा होता है। शतचण्डी और भागवत पुराण-पारायण भी कई बार करवा चुके हैं। जयपुरमें आपने एक मन्दिर और आगरा-रोड़ पर हरिराम साबू राजकीय-चिकित्सालय ५ लाख रु० लागतका बनवाया है जिससे ग्रामीण जनता को विशेष लाभ हो रहा है। अब हरिराम साबू चेरीटेबिल ट्रस्टकी ओरसे ६ सात लाख रुपयेकी लागतसे एक धर्मशाला और स्कूल बनाया जावेगा। बिरला आयुर्वेदिक औषधालयोंके आप चेयरमेन और हिन्दुस्तान चेरीटी ट्रस्ट, श्रीगोविन्ददेवजी मंदिर-सुधार कमेटी आदि अनेक संस्थानोंके सम्मान्य सदस्य रहे। जयपुरमें मोतीडूंगरीके समीप विशालभूमि खण्ड पर दो करोड़की लागतसे बनने वाले भव्य विशाल बिरला-मंदिरका शिलान्यास गतवर्ष आप ही के सत्प्रयत्नसे सम्पन्न हुआ था। निर्माण कार्य आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री केशरदेवजी साबूके तत्त्वावधानमें जयपुरमें चल रहा है।

श्री हरिरामजी साबू कोई भी धार्मिक पारमार्थिक कार्य करके उसकी प्रशंसामें प्रचार करवाना नहीं चाहते थे। 'ज्योतिष्मती' के साथ अनन्य स्नेह होने पर भी उन्होंने कभी अपना नाम संरक्षक सहायकोंमें छापनेकी अनुमति नहीं दी। अतिथि सेवा और नम्रताके आप मूर्तिमान प्रतीक थे। आपके नम्रतादि सद्‌गुणोंके अनेक अनुकरणीय उदाहरण हैं—उनमेंसे एकका उल्लेख करनेका मोहसंवरण मैं नहीं कर पा रहा हूँ। ४ वर्ष पूर्व जनवरी मासमें मैं सपत्नीक जयपुर गया। अशोक-निवासकी ऊपरकी मंजिलके नवनिर्मित अतिथि निवासमें हमारे शयनकी व्यवस्था थी। दूसरे दिन प्रातः ९॥ बजे बन्धुवर श्री हरिदेवजी जोशीने मुख्यमंत्री-निवासमें मिलने बुलाया। साबूजीके सामने ही रात्रि १० बजे मुख्यमन्त्रीजीसे फोन पर बात हुई। साबूजीने कहा—"कल प्रातः आपको

६ बजे तक सन्ध्यापूजनसे निवृत्त हो जलपान करके ६।। बजे जोशी साहबके बंगले जाना है। ऊपर बाथरूममें अभी गीजर नहीं लगा है, मैं जल्दी गर्म जल आपको पहुंचा दूंगा।" मैंने सोचा कई नौकर हैं किसीके हाथ गर्मजलकी बाल्टी भिजवा देंगे। किन्तु, प्रातःकाल ६।। बजे जब मैंने स्वयं साबूजीको गर्म पानीकी बाल्टी उठाकर सीढ़ियां चढ़ते देखा तो मैं अवाक् रह गया। ७० वर्षकी वृद्धावस्थामें अतुल सम्पत्तिका स्वामी एक निरभिमान महामानव मेरे स्नानके लिए स्वयं गर्म जल ला रहा है—तत्काल मैंने बाल्टी पकड़नी चाही, तो बोले—"आप चलें मैं स्नान घरमें रख दूंगा।" मैंने कहा—"आपने इतना कष्ट क्यों किया ? किसी नौकरसे भिजवा देते या मैं नीचे आपके बाथरूममें आकर स्नान कर लेता।" इस पर वे बोले—"नौकर अभी कोई उठे नहीं। गीजरमें मैंने पानी गरम कर लिया था, आपको जल्दी वहां जाना है। पूजापाठसे फारिग हो जावेंगे। आप जैसे विद्वानोंकी सेवाका ऐसा अवसर कब मिलता है, अभी तो मेरे हाथ पैर चलते हैं।"

साबूजीकी निष्कामसेवा और सदाशयताका अनुभव मुझे पहले भी कई बार हो चुका था। महासभा कार्यकारिणीकी बैठकोंमें उनका ड्राइवर हरिसिंह और गाड़ी दिनभर मेरे साथ रहती, कई बार गाड़ी लेकर मैं किसी और कार्यमें उलझ जाता और फेक्टरीसे साबूजीको लानेके लिए मेरे कारण गाड़ी समय पर न पहुंच पाती तो वे स्वयं फेक्टरीसे कई बार किसी दूसरेकी गाड़ी या टेक्सीसे घर पहुंचे हैं। इससे मुझे दुःख होता और सायंकाल मिलने पर मैं खेद प्रकट करता तो बोलते—"मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ। घर कैसे भी पहुंच गया। मेरी गाड़ीसे आपको सुविधा मिली इसकी मुझे महान् खुशी है आप अपने मनमें ऐसा कभी न सोचा करें।" इस महामानवके पिछले सदाशयतापूर्ण व्यवहारको स्मरण कर उस दिन गर्म पानी वाली बाल्टीकी घटनाने मेरा हृदय साबूजीके प्रति द्रवीभूत कर दिया।

साबूजीके सभी सुपुत्रोंमें भी पैतृक-सम्पत्तिके रूपमें पिताके सद्गुण विद्यमान हैं। आपके ६ पुत्र हैं, १—श्री केशरदेवजी, २—श्री द्वारकाप्रसादजी, ३—श्री मोहनलालजी, ४—श्री राजेन्द्रकुमार, ५—श्रीसुरेन्द्रकुमार और ६—अशोककुमार साबू। श्री केशरदेवजी साबू रांचीमें बिरला-इन्स्टीच्यूट आफ टेक्नालाजीके उच्च पदाधिकारी हैं। श्री द्वारकाप्रसादजी साबू पटनामें मुजफ्फरपुर होजरी इण्डस्ट्रीज एण्ड एजेन्सीज प्रायवेट लिमिटेडके मैनेजिंग डायरेक्टर तथा प्रसिद्ध उद्योगपति हैं (आप ज्योतिष्मतीके संरक्षक हैं) श्री मोहनलालजी साबू नेशनल इन्जीनीयरिंग इण्डस्ट्रीज लि० जयपुरमें उच्चपद पर हैं और श्री राजेन्द्र एवं अशोक साबू जयपुरमें निजी व्यवसायमें संलग्न हैं। इन सभी साबू-बन्धुओंका ज्योतिष्मती-परिवारसे श्रद्धापूर्ण पारिवारिक स्नेहसम्बन्ध है। स्वर्गीय पिताश्रीके आज्ञावर्ती रहकर आशीर्वाद रूपमें साबू-बन्धुओंने पुत्रपौत्रादिरूपेण सभी प्रकारकी सांसारिक सम्पत्ति प्राप्त की है। शास्त्रकारोंने लिखा है—

'पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व देवताः।'

'पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं पदम्।'

सावूजीके सभी पुत्रपौत्र अभी इस रूपमें परम सौभाग्यशाली हैं कि उनकी लक्ष्मीरूपा वात्सल्यमयी जननीकी छत्रछाया उनके सिर पर विद्यमान हैं। 'मातृदेवो भव' के आदर्शको सामने रखकर वे सभी अपनी सेवासे माताका आशीर्वाद प्राप्त करते रहेंगे। और जिस प्रकार सावूजीने अपने अनेक सद्गुणोंके कारण जनतामें विशेष स्थान बना लिया था उसी प्रकार सब भाई मिलकर उनके पदचिह्नों पर चलते हुए संसारमें ख्याति प्राप्त करेंगे।

अन्तमें ज्योतिष्मती परिवारकी ओरसे सावूजीकी शोकाभिभूता धर्मपत्नी एवं श्रीकेशरदेवजी आदि समस्त परिवारको सान्त्वना देते हुए स्वर्गीय आत्माको शाश्वत शान्ति प्राप्त होनेके लिए प्रभुसे प्रार्थना करता हूँ। अपने सत्कर्मोंके द्वारा सावूजी जीवन्मुक्त हो चुके हैं। उनकी जन्मकुण्डलीमें धनुर्लग्नेश गुरुका नवमेश सूर्यसे योग और केन्द्रमें पंचमेश दशमेश लाभेश मंगल बुध शुक्रका योग उनके आदर्शजीवन पर प्रकाश डाल रहा है। ज्योतिर्विज्ञानके अन्वेषकोंके लिए कुण्डली ऊपर दी गयी है—

अपना एक अनन्य स्नेही सच्चरित्र महानुभाव दैवदुर्विपाकसे अब हमारे मध्यसे उठ गया, विधाताकी इस वामताको देखकर श्री भर्तृहरिका निम्न श्लोक सहसा स्मरण हो आता है—

सृजसि तावदशेषगुणाकरं पुरुषरत्नमलंकरणं भुवः।
तदपि तत्क्षणभङ्गी करोति चेदहह! कष्टमपंडितता विधेः॥

संसारमें जिसकी सुकीर्ति है वह मरकर भी अमर है 'कीर्तिर्यस्य स जीवति' इन शब्दोंके साथ मैं अपने स्नेही सन्मित्र श्री हरिरामजी सावूको स्नेहपूर्ण श्रद्धाञ्जलि समर्पित करता हूं।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

(पृष्ठ १२ का शेष)

और कृषि-मन्त्रियोंके लिए वर्ष भयप्रद है। मार्चसे २७ जुलाई ८० तक सिंह राशिमें गुरु शनिका योग रहेगा और अब आगे आश्विन मासमें २६ सितम्बर ८० से पुनः कन्याराशिमें गुरु प्रवेश करके शनिसे योग बनावेगा, यह प्रजामें विग्रह और दुर्भिक्षकारक सिद्ध होगा। वेंकटेश (प्लुटो) भी दिसम्बर तक कन्या राशिमें रहेगा।

यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद्वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्नपरिक्षयः॥

वर्षान्तमें कुछ राजनैतिक कारण ऐसे बन जावेंगे जिससे १९८१-८२ में पुनः मध्यावधि चुनावकी सम्भावना प्रबल हो जावेगी। यद्यपि श्रीमती गांधीको अभी सप्तमेश अष्टमेश शनिकी महादशा चालू है तथापि इस वर्षमें २७ जुलाई ८० से कन्याका शनि उनके जन्म लग्नसे तृतीय उपचय स्थानमें आजावेगा और स्वतन्त्रभारतका जन्मलग्नेश वर्षलग्नेश शुक्र नवमभाव एवं गुरु ११वेंमें है अतः यदि प्रधान मंत्रीने सदसद्विवेक बुद्धिसे काम लेकर अपनी आत्मशक्ति बढ़ा ली तो वे सभी विषम परिस्थितियोंको पार करके राष्ट्रनिर्माणका मार्ग प्रशस्त कर सकेंगी।

'शिवमस्तु सर्वजगतः'

वैज्ञानिक अन्धविश्वास

[श्री कुमार दैवज्ञ मोहन गुप्त]

विज्ञानकी उत्पत्ति दर्शनसे होती है तथा उसका अवसान भी दर्शनमें ही होता है। इस नियत सत्यको अनुभव किये बिना वैज्ञानिक अपनेको वृहत्तर संदर्भमें नहीं देख सकता और उसकी परिणति होती है उसके द्वारा उन मान्यताओंकी अप्रामाणिक अस्वीकृतिमें जो उसके दृष्टि पथमें नहीं आती। उसके अतिरिक्त वर्तमान युगीन धारणाके अनुसार 'वैज्ञानिक होना' लगभग 'शिक्षित होने' का पर्याय बन गया है तथा वैज्ञानिक होनेका प्रथम लक्षण प्राचीन मान्यताओंकी अस्वीकृति है, चाहे वे प्रमाण द्वारा असिद्ध नहीं हुई हों। अतः मान्यताओंकी इस सहज अस्वीकृतिसे व्यक्तिको 'अहं' के तोषसे आनन्द भी प्राप्त होता है। यह सूक्ष्म मानसिक प्रक्रिया बहुधा व्यक्तिमें अनजाने ही हो जाया करती है।

जिस भारतीय मस्तिष्ककी सराहना करते हुए मैक्समूलर कभी थकता न था उसीसे उत्पन्न हर भारतीय मान्यता या परम्पराको कुछ भारतीय वैज्ञानिक ही बड़ी आसानीसे अन्धविश्वास कह डालते हैं। जब तक कि इन मान्यताओंको पश्चिमसे स्वीकृति प्राप्त न हो जाय। यह एक विडम्बना ही है कि स्वतन्त्रता के तैंतीस वर्ष बाद भी भारतीय शिक्षित वर्ग की यह पश्चिमोन्मुखी अन्धानुकरणकी प्रवृत्ति विद्यमान है। हर जाति तथा हर युगकी अपनी रूढ़ियां तथा परम्परागत मान्यताएं होती हैं। उनमेंसे बहुत सी निराधार भी होती हैं, तथा देश कालकी परिस्थितियोंसे समाज व्यवस्था में स्थान पा जाती हैं। किन्तु बहुत सी अन्य मान्यताएं तो ज्ञानक्षेत्रमें शोधका सुदृढ़ आधार होती हैं। लोक मान्यताएं तथा जन-श्रुतियां इतिहास तथा पुरातत्त्वकी खोजका महत्त्वपूर्ण आधार होती हैं। फिर सहस्रों वर्षोंसे पुस्तकों में लेखबद्ध परम्परागत ज्ञान तो निस्संदेह किसी भी देशमें शोध कार्यके लिये महासागर के समान स्रोत है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण वह है जो किसी मान्यताको बिना प्रमाणके स्वीकृत या अस्वीकृत नहीं करता। जिस प्रकार किसी नये तथ्यकी स्वीकृति बिना प्रमाणके अवैज्ञानिक है उसी प्रकार आप्त वाक्यसे उत्पन्न परम्परागत सुदृढ़ मान्यताकी बिना प्रमाणके अस्वीकृति भी अवैज्ञानिक है। जब लोग किसी भी प्राचीन मान्यताको बिना विचारे श्रेष्ठ कह दिया करते थे तो कालिदासको कहना पड़ा कि 'केवल पुराना होने भरसे कोई चीज श्रेष्ठ नहीं हो जाया करती (पुराणमित्येव न साधु सर्वम्) और न ही नया होनेसे त्याज्य ही हो जाती है। आजके बदलते संदर्भमें जबकि लोग आधुनिक होने भरसे किसी वस्तु या मान्यता को सही मान लिया करते हैं तथा प्राचीन को निंद्य या त्याज्य मानते हैं, कहा जा सकता है कि 'नवीनमित्येव न साधु सर्वम्' इत्यादि। सन्तुलित दृष्टिकोण तो इन्हीं महाकविकी भाषामें यह है कि विद्वान् व्यक्तिको चाहिये कि परीक्षा करके जो स्वीकरणीय हो उसीको स्वीकार करे, दूसरे के विश्वास पर बुद्धिका संचालन करने वाले व्यक्तिको मूढ़ कहते हैं।

(सन्त: परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मूढ़: परप्रत्ययनेय बुद्धिः) ।

इस प्रकार बिना पूर्वाग्रहके खुले मस्तिक से सप्रमाण वस्तुकी स्वीकृति/अस्वीकृति वैज्ञानिकता है, अन्ध विश्वास इसके विपरीत बिना प्रमाण परीक्षाके किसी भी चीजको स्वीकार/अस्वीकार करना है। कोई मान्यता या तथ्य जब तक प्रमाणित न हो जाय तब तक इसके प्रति तटस्थ रहना भी पूर्वाग्रह शून्यताका लक्षण है ।

'प्रमा' यथार्थ ज्ञानको कहते हैं और प्रमाण उस तक पहुँचनेका माध्यम। प्रमाण शास्त्रकी भी अपनी गम्भीर सीमाएं हैं—यह सभी चिन्तक जानते हैं तथा तथ्यान्वेषणमें प्रमाण या तर्क हमेशा हर परिस्थितिमें विश्वसनीय माध्यम नहीं है। कभी-कभी यह मिथ्या ज्ञान या विपर्यय ज्ञानकी तरफ भी ले जाता है। किन्तु अधिसंख्य परिस्थितियोंमें यही एक सबल एवं स्पष्ट माध्यम ज्ञान प्राप्तिका है। भारतीय न्यायशास्त्रके अनुसार प्रमाण चार प्रकारके हैं—प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति तथा शब्द—आप्तवाक्य या एक्सपर्ट ओपीनियन। आधुनिक कानूनका साध्य विधान भी उक्त प्रमाणोंको मानता है तथा इन्हींके आधार पर नैयायिक निष्कर्ष निकाले जाते हैं, जिनके परिणामस्वरूप स्वस्थ अपराधीको मृत्यु दण्ड तक भी दिया जाता है इनमें 'अनुमिति' Cericums tretial Evidence तथा 'शब्द' Expert Opeion अत्यधिक प्रयोगमें आते हैं ।

उक्त पृष्ठभूमिमें गत १६ फरवरीको हुए सूर्यग्रहणके पूर्वकी तथा बादकी घटनाओंका अध्ययन अत्यन्त रोचक एवं ज्ञानवर्धक होगा। ग्रहणके पूर्व ज्योतिष-शास्त्रियोंने तथा वैज्ञानिकोंने बहुत सी बातें कही अत: घटनाका परवर्ती विश्लेषण उन बातोंकी प्रमाणिकता समझनेके लिए आवश्यक है ।

जहां तक वैज्ञानिकोंका प्रश्न है, दिनांक २४-२-८० के दिल्लीसे प्रकाशित होने वाले 'टाइम्स आफ इण्डिया' में 'साइट एण्ड साउण्ड' कालममें 'आफ्टर दी एक्लिप्स' शीर्षकसे श्री अमित मलिकका लेख अत्यन्त समीचीन है। इन्होंने लिखा है 'हममेंसे कुछ लोगोंने इस बातको ध्यानमें रखकर कि किस प्रकार वैज्ञानिक, नेत्र विशेषज्ञ तथा डाक्टर लोग आपसमें ग्रहणके प्रभावके बारेमें परस्पर विरोधी वक्तव्य दे रहे थे, महसूस किया कि वे स्वयं बुढ़िया औरतों जैसा शंकालु व्यवहार कर रहे थे। एक विशेषज्ञ कहता था 'पानीमें ग्रहणका प्रतिबिम्ब देखो' तो दूसरा बोला 'यह तो सीधे देखनेसे भी ज्यादा खतरनाक है । किसीने कहा कि वैल्डर ग्लाससे देखना सुरक्षित है तो दूसरेने कहा वह भी सुरक्षित नहीं है' अमेरिकाके डॉ० सिक्लेशर एवं उनके साथियों तथा उनके साथ कई अन्य भारतीय विशेषज्ञ डाक्टरोंने तो स्पष्ट घोषणा की कि नंगी आंखों से भी ग्रहणको देखा जा सकता है। फिर सत्य क्या है ? सत्य विखंडित या परस्पर विरोधी तो हो नहीं सकता। उक्त लेखमें आगे लिखा है कि आंखोंके लिये जो विशेष अस्पताल बनाये गये थे उनमें या तो कुछ व्यर्थ घबराये हुए लोग गये थे या लोग पुराने रोगोंको लेकर पहुंचे थे। 'इतने अनिश्चित मत' के आधार पर भारत शासनने भी अर्धशिक्षित व्यक्तिकी तरह विज्ञप्ति निकाल कर लोगोंको ग्रहण न

देखनेकी चेतावनी दे दी और लाखों व्यक्तियों को जीवनमें एक आध बार ही घटित होने वाली प्रकृतिकी इस मनोरम लीलाको देखनेसे वंचित कर दिया—एक सज्जनने मुझसे कहा। 'गलियां खाली हो गई, ड्राइवर भाग गये, कुक्सने दोपहरके बाद खाना परोसना बन्द कर दिया। हर बड़े नगरमें कर्फ्यू का सा सन्नाटा छा गया, वीरानी आगई। मेरे यहांका एक मात्र नौकर एक कोठरीमें जाकर छिप गया। जब मैं स्वयं 'आर्क वेल्डर ग्लासेज' की मददसे सूर्यग्रहण देख रहा था तथा एक साथी उसके फोटो उतार रहा था। मैंने उस नौकर को कोठरीसे निकाल कर ग्रहण दिखाया। यह सब किसी ज्योतिष शास्त्रीकी भविष्यवाणी से नहीं हुआ बल्कि उन वैज्ञानिकोंकी अनेकशः चेतावनियोंके कारण हुआ जिसके अनुसार सूर्यग्रहण देखनेसे व्यक्ति अन्धा हो जायगा यह कहा गया था। भारत शासनने विज्ञप्ति निकाल कर उस पर सील लगा दी। भारत के लाखों नरनारियोंको इन्हीं चेतावनियोंने आतंकित तथा भयभीत किया। व्यक्तिगत सम्पर्क करने वाले अनेक लोगोंसे मैंने कहा कि पृथ्वी पर रहने वाले हम लोग रोज सूर्यके साथ रहते हैं तथा अनेकों सूर्यग्रहण मानवने देखे हैं, अतः सूर्यग्रहणसे कोई कयामत आ जायगी यह बात गलत है, तथा निरा आतंक है। मोटे काले काँच या आर्क वैल्डर ग्लास से सूर्यग्रहण देखना नितान्त सुरक्षित है। पिछले किसी सूर्यग्रहणमें लोग इतने भयभीत तथा आतंकित नहीं हुए होंगे जितने इस बार, जबकि विज्ञान इतनी प्रगति कर चुका है और विडम्बना यह है कि इन्हीं वैज्ञानिकोंके कारण लोग भयभीत तथा आतंकित हुए। ज्योतिष शास्त्र तो सिर्फ यह कहता है कि ग्रहणके समय स्वस्थ व्यक्तिको भोजन इत्यादि नहीं करना चाहिये, गर्भिणी स्त्रीको ग्रहण नहीं देखना चाहिये तथा कुछ खास राशि वालोंको ग्रहण देखना अनिष्टकर है। आकाशवाणी जैसे लोक-माध्यमोंको चाहिये था कि इस शास्त्रके अधिकारी विद्वानोंके विचार प्रसारित करते ताकि जनताको सही दिग्दर्शन मिलता। इसके स्थान पर वे वार्ताएं प्रसारित की गई जो या तो यह बताती थी कि सूर्यग्रहण देखनेसे व्यक्ति अन्धा हो जाता है या यह कि बाकी की सब मान्यताएं अन्ध विश्वास है। पिछली बार 'स्काई लैब' के गिरनेके समय भी जनतामें भय तथा आतंककी सृष्टि इस प्रकारके प्रसारणोंसे हुई। मुझसे कुछ व्यक्तियोंने कहा कि इन्दौरके एक वैज्ञानिकने बड़ी भयंकर संभावनाएं स्काईलैब के बारेमें व्यक्त की थी। रेडियो—धर्मिताका डर दिखाया गया था जिसके नामसे आजका शिक्षित वर्ग उसी प्रकार डरसे सिहरने लगता है जैसे पुराने जमानेमें भूत-प्रेतके डरसे।

ग्रहणके सम्बन्धमें जिन भारतीय मान्यताओंको कुछ वैज्ञानिक अन्ध विश्वास कहते हैं उनमेंसे प्रमुख ये हैं :—

(१) सूर्य या चन्द्र ग्रहणके समय राहु या केतु इन ग्रहोंको ग्रस लेते हैं।

(२) गर्भिणी स्त्रीको ग्रहण नहीं देखना चाहिए क्योंकि यह उसके गर्भके लिये हानि-कारक हो सकता है।

(३) ग्रहणसे भूकम्प तूफान आदि उत्पन्न होते हैं।

(४) राष्ट्रों, व्यक्तियों पर भी एक

नियमके अनुसार प्रभाव पड़ता है। ये विस्तृत नियम प्राच्य/पाश्चात्य ग्रन्थोंमें उपलब्ध हैं।

प्रबुद्ध पाठकोंके सामने मैं केवल तथ्य रखूँगा। वे स्वयं निर्णय करेंगे कि उनको 'अन्ध विश्वास' मानना 'अन्ध विश्वास' है या ये अन्ध विश्वास है।

(१) ग्रहणके समय राहु या केतु द्वारा सूर्य या चन्द्रको ग्रस लेने वाली भारतीय मान्यताकी व्युत्पत्ति करनेकी चेष्टा इन वैज्ञानिकोंने कभी नहीं की। चूंकि फलित ज्योतिषी ऐसा कहते हैं तथा ग्रहण सम्बन्धी उनकी अंग्रेजी किताबोंमें वैसा नहीं लिखा अतः वे इसे अन्ध-विश्वास कह देते हैं या फिर भा० धार्मिक परम्परा। वैसे ग्रहणके विषयमें इस प्रकारकी प्रम्परा हर देशमें है किन्तु भारतीय परम्परा पूर्ण वैज्ञानिक है यह इस विवेचनसे स्पष्ट हो जायगा। राहु या केतुको दैत्य मानना एक प्रतीक है क्योंकि वे प्रकाशपुञ्ज सूर्य अर्थात् 'देव' के विरोधी हैं। ज्योतिर्विज्ञानिक दृष्टिकोणसे राहु या केतु दो ज्यामितिक बिन्दु हैं जहां पृथ्वी तथा चन्द्रमाकी कक्षाएं एक-दूसरेको काटती हैं। उत्तर वाले इस कटान बिन्दुको 'राहु' कहा जाता है तथा दक्षिण वाले कटान बिन्दुको केतु कहा जाता है। दो शक्तियोंके कटान बिन्दु होनेके कारण ये बिन्दु स्वयं भी शक्तिपूर्ण है तथा अन्य सात ग्रहोंकी तरह पृथ्वीके जीवनको प्रभावित करते हैं। जिस प्रकार आधुनिक वैज्ञानिकोंने प्रकाशकी कुछ किरणोंके नाम 'एक्स' या 'गामा' या 'अल्फा' रख दिये हैं उसी प्रकार प्राचीन मनीषियोंने इन गणितीय बिन्दुओंका नाम 'राहु' तथा 'केतु' रख दिया और यह भी स्पष्ट कर दिया कि ये 'तमो ग्रह' या छाया ग्रह हैं अर्थात् प्रकाशहीन हैं। इन बिन्दुओंकी स्थिति की गणना करनेकी विधि भी बतला दी। राहु या केतु द्वारा सूर्य या चन्द्रको ग्रस लेने का अर्थ है कि जब आकाश संचरणके समय पूर्णिमा या अमावस्याको सूर्य या चन्द्र इन राहु या केतु अर्थात् पृथ्वी तथा चन्द्रमाके कटान बिन्दुओंके नजदीक आते हैं तब चन्द्र-ग्रहण या सूर्यग्रहण होता है। यही तो आधुनिक विज्ञान कहता है—

'पृथ्वी तथा चन्द्रमा एक ही धरातल पर नही हैं अन्यथा हर अमावस्या तथा पूर्णिमा को सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण होते। ये दोनों एक दूसरेसे कोणीय स्थितिमें हैं अतः जब सूर्य या चन्द्र इन दोनोंके कटान बिन्दु पर या उससे नजदीक आते हैं तभी सूर्य या चन्द्रग्रहण होते हैं। ऐसी स्थितिमें राहु या केतु द्वारा सूर्य-चन्द्रको ग्रस लेना अन्ध विश्वास कहां रहा। यदि यह निराधार होता तो एक भी ग्रहण ऐसा बता दिया जाय जब सूर्य या चन्द्र के साथ राहु या केतु न रहा हो। १६ फरवरीके सूर्यग्रहणमें सूर्यके साथ 'केतु' था। उस समय सूर्य, चन्द्र तथा केतुके स्पष्ट Longitude निम्नलिखित थे :—

सूर्य	३०३°—१६′
चन्द्र	३०३°—१६′
केतु	३०५°—३५′

"केतु" सूर्य चन्द्रसे केवल २° के अन्तर पर है।

(२) गर्भ पर ग्रहणका विपरीत प्रभाव पड़ता है या नहीं इस विषयमें अभी तो ऋषियों तथा प्राचीन ज्योतिर्विदोंके प्राप्त वाक्य ही

प्रमाण हैं जो शोधके बाद और निश्चित किये जा सकते हैं । इस सम्बन्धमें कुछ आधुनिक वैज्ञानिकोंने भी जिनमें स्त्रीरोग विशेषज्ञ भी थे, ग्रहणके पूर्व ऐसी चेतावनी दी थी कि गर्भिणी स्त्रियां ग्रहण न देखें क्योंकि उससे उनके गर्भ पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है । उसके अतिरिक्त २४ फरवरी ८० के टाइम्स आफ इण्डियामें जो समाचार मुर्गीके अण्डोंके विकृत होनेके बारेमें छपा है उससे यह मान्यता सिद्ध नहीं तो उसकी सम्भावना तो अत्यन्त प्रबल हो जाती है। इस समाचार के अनुसार शिलांगकी एक स्त्री नेत्र विशेषज्ञ डा० जैनिफरके यहां पाली हुई एक मुर्गीने १६ फरवरीके ग्रहणके बाद ऐसे अण्डे दिये जो विकृत थे तथा उनमेंसे कुछमें स्पष्ट रूपसे दीर्घ वृत्ताकार निशान बने थे। ज्योतिष-शास्त्रके सिद्धान्तोंके आधार पर यह घोषणापूर्वक कहा जा सकता है कि जिस बालकका जन्म सूर्य या चन्द्रग्रहणके दिन हुआ है, यदि अन्य ग्रहों का विपरीत प्रभाव अधिक न रहा तो भी उसको मानसिक विकार होंगे, उसकी आँखें खराब हो जायंगी तथा विभिन्न स्नायवीय रोगोंसे परेशान रहेगा तथा अन्य ग्रहोंका बहुत विपरीत प्रभाव रहा तो या तो वह बचेगा ही नहीं या फिर पागल, अपस्मारग्रस्त या पंगु हो जायगा । किसी भी ऐसे व्यक्तिके जीवनका अध्ययन कर लिया जाय जिसका जन्म सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहणके समय हुआ है। ऐसी परिस्थितियोंमें इस मान्यताको कोरा अन्ध विश्वास कहकर उसके भावी अध्ययन के द्वार भी बन्द कर देना कहांकी वैज्ञानिकता है ?

(३) प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् डा० वी०वी० रमनने भविष्यवाणी की थी कि "१६ फरवरी की पूर्व संध्या या उसके आसपास भूकम्प आने की सम्भावना है—आसाम आदि प्रभावित होंगे ।" भूकम्प आया और डा० रमनकी भविष्यवाणी सच हुई, किन्तु रुड़की-भूगर्भ-इंजीनियर कहते हैं—कि कोई बड़ा भूकम्प नहीं आयेगा । यह सब अन्ध विश्वास है। इससे बड़ी आत्म-प्रवंचना क्या हो सकती है ? किसने कहा था कि बड़ा भूकम्प आयेगा ? इसके अतिरिक्त ये इंजीनियर किसी छोटे भूकम्पकी ही भविष्यवाणी कर देते ? आज मानवताको इसकी कितनी जबर्दस्त आवश्यकता है कि भूकम्पका पूर्वाभास किया जा सके । इसके सम्बन्धमें हमारे शास्त्रोंमें कुछ नियम भी उपलब्ध हैं। उन पर शोध करके भारत विश्वको कुछ नवीन ज्ञान दे सकता है। किन्तु पाश्चात्य अंग्रेजोंकी सहमतिके बिना हम उसे स्वीकार करनेको तैयार नहीं । यदि हम इसे अन्धविश्वास ही कहते रहे तो अध्ययनका प्रारंभ कैसे होगा। इन्हीं डा० रमनने अपनी एस्ट्रालाजिकल मैगजीनके माध्यमसे ईरानके भूकम्प की भी पूर्वमें ही भविष्यवाणी की थी जो १६ सितम्बर ७८ की रातको ठीक चन्द्रग्रहणकी रातको ईरानके तबास आदि नगरोंको तबाह कर गया। यह चन्द्रग्रहण १६ सितम्बर ७८ की रातको १०—५० बजेसे १७ सितम्बरके प्रातः २ बजकर ५८ मिनट तक रहा। ईरान ग्रहणकी राशिसे नादिर लग्न पर है जो भूकम्प का क्षेत्र भी है अतः भयानक भूकम्प आया, ११००० से अधिक व्यक्ति मरे। उसके दस दिन बाद बंगालमें भयानक बाढ़ आई जिसमें

डेढ़ करोड़ व्यक्ति प्रभावित हुए और सैकड़ों जानें गई। क्या यह सब मात्र आकस्मिकता (कोइन्सीडेन्स) है। नियम भी है और उनका प्रत्यक्ष प्रतिफलन भी है तथा फिर भी यह 'अन्ध विश्वास' है। प्रबुद्ध पाठक स्वयं निर्णय करें।

(४) जहां तक ग्रहणका राष्ट्रों/व्यक्तियों पर प्रभावका प्रश्न है सूर्यग्रहणके बारेमें इसो लेखकने एक लेखके माध्यमसे अन्य बातोंके साथ-साथ निम्नांकित भविष्यवाणी की थी (नवभारत रायपुर—९ फरवरी ८०। युगधर्म रायपुर – १४ फरवरी ८०)।

(१) यह ग्रहण वायुतत्त्व प्रधान कुंभ राशि पर पड़ रहा है अत: दुर्भिक्ष, महामारी, तूफान, बायु दुर्घटनाए एवं शीतयुद्ध जन्य स्नायविक तनाव इसका विशेष फल है।

(२) जिन देशोंके नाम उसमें गिनाए गये हैं उनमें संकट उत्पन्न होगा उनसे भीषण जननाश इंगित है।

(३) अनाज, गुड़, खांड, शक्कर, तिलहन तथा दलहन आदिमें तेजीकारक है।

उक्त भविष्यवाणीके परिप्रेक्ष्यमें गत १६ फरवरीसे २० दिनके भीतर जो कुछ घटित हुआ है उसकी फेहरिश्त निम्नानुसार है।

(इनमें व्यक्तिगत घटनाएं जिनमें १० से कम व्यक्ति मरे हैं शामिल नहीं की गई है)

(१) १६.२.८०—शिलांगमें भूकम्पके हल्के झटके, इसके पूर्व १४.२.८० को उत्तर भारतमें भूकम्पके झटके।

(२) १७.२.८०—नौ राज्य विधान सभाएं भंग की गईं। राज्य सरकारें बर्खास्त की गई।

(३) २१.२.८०—एक सप्ताहके भीतर चार भीषण वायु दुर्घटनाएं।

२३.२.८०—क्रमशः सिडनी एयर क्रैश १७ व्यक्ति मरे।

२७.२.८०—भारतीय वायुसेनाके जहाजका ध्वंस ४७ व्यक्ति मरे, तैवानका एयर क्रैश—१३५ व्यक्तियोंके प्राण संकटमें किन्तु मरे केवल तीन।

२९.२.८०—ग्वाटेमालाका एयर क्रैश—३१ सिपाही मरे।

(४) २४.२.८०—काबुलमें अशाँति लगभग ८०० मरे।

(५) २६.२.८०—पिपरा हत्या काण्ड।

(६) २८.२.८०—दक्षिण चीनमें नाव दुर्घटना २६७ व्यक्ति मरे।

(७) ३-३-८०—नाइजीरियाकी राजधानीमें पुलिस कस्टडीमें ४७ व्यक्ति मरे।

(८) ५.३.८०—नाडिया बस दुर्घटना ३९ मरे ६४ घायल।

(९) ९.३.८०—मनीला—सिनेमा घरोंमें विस्फोटोंसे २६ मरे।

(१०) ४.३.८०—ब्राजीलकी बाढ़में ५० मरे तथा दो लाख सत्तर हजार बेघर हुए।

इसके अतिरिक्त उड़ीसामें तूफान आया जिससे २३ ग्राम प्रभावित हुए, डनलप कम्पनी में भीषण आग तथा कलकत्ताके मैडीकल स्टोर में भी आग। रोज कुछ न कुछ दुर्घटनाओंके

समाचार। वैसे सामान्य तौर पर भी दुर्घटनाएं होती है किन्तु जिस प्रकार एक छोटी सी अवधिमें इतना जन-नाश और विध्वंस हुआ है वह विचारका विषय है। किसी अन्य अवधि से, उदाहरणार्थ ७६ या ७८ की इसी अवधि की दुर्घटनाओंसे तुलना करने पर आशय स्पष्ट हो सकता है। बाजार भावोंकी तेजी विशेषकर शक्कर तैल आदिकी किसीसे छिपी नहीं है।

जहां तक ज्योतिष शास्त्रको अन्ध-विश्वास या अविज्ञान कहनेका प्रश्न है इस सम्बन्धमें भारतीय ज्योतिर्विदोंको अब अधिक दिन तक डिफेंस नहीं देनी पड़ेगी क्योंकि पश्चिमके हमारे ज्ञानाग्रज ही इस पर अनेक स्तरों पर गम्भीर अध्ययनमें रत हैं तथा उनसे शीघ्र ही सहमति प्राप्त हो जायगी। फिर भारतमें भी सहमति मिलनेमें या विश्वविद्यालयोंमें उसको स्थान प्राप्त होनेमें कठिनाई नहीं होगी। ज्योतिष शास्त्र गणित तथा भौतिक शास्त्र आदि शुद्ध विज्ञानोंसे तो कम विज्ञान है किन्तु किकित्सा शास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, अपराध शास्त्र, भाषा विज्ञान, मनोविज्ञान, मौसम-विज्ञान तथा कानूनसे अधिक विज्ञान है। असफलताएं तथा सीमाएं जो किसी भी अन्य शास्त्र या विज्ञानमें हो सकती हैं वे इसमें भी हैं। किन्तु इसका प्रत्यक्ष प्रभाव कई विज्ञानोंसे अधिक स्पष्ट है। किसी भी शास्त्र या ज्ञानकी उपादेयता इसीमें निहित है कि वह घटनाओंके पूर्वाभाससे मनुष्यको उसके प्रतीकारमें सक्षम बनाए और इस मान-दण्डसे ज्योतिष-शास्त्र उपादेय शास्त्रोंमें अग्रणी है क्योंकि भविष्य-दर्शन इसका प्रधान क्षेत्र है। प्रसंग वश यह कह देना अनुचित न होगा कि जिस स्काईलैबकी घटनाके बारेमें वैज्ञानिक चर्चाओंने, चाहे उनके गुण दोष कुछ भी रहे हों, जन-सामान्यमें भय और आतंककी सृष्टि की थी उसीके बारेमें उसी शास्त्रकी सहायता से इस लेखकने एक प्रकाशित लेखके माध्यम से कहा था कि केवल सुदूर पूर्वको छोड़कर भारतमें 'स्काई लैब' से कहीं खतरा नहीं है तथा बहुत कुछ सम्भव है कि यह ९४° पूर्वी देशान्तर तथा १२५° पूर्वी देशान्तरके मध्य जो परिक्रमा पथ आता है उसमें गिरे। वास्तव में यह १२०° पूर्वी देशान्तरके आसपास गिरी। यह ध्यान देने योग्य है कि अन्तिम दिन तक अमेरिकाके वैज्ञानिक भी यह तय नहीं कर पाये थे कि स्काई लैब कहां गिरेगा जबकि यह लेख घटनासे १ दिन पूर्व प्रकाशित हो गया था और उसकी गणना तीन दिन पूर्व की गई थी।

अखण्ड उर्जाके स्रोत तथा प्राणिमात्रको प्रकाश एवं जीवन देने वाले सूर्यके ग्रहणसे पार्थिव जीवन पर कोई प्रभाव न पड़े यह कैसे सम्भव है? उसका प्रभाव तो प्रकट है, जिसके उदय होने पर यह समस्त संसार जाग उठता है, मध्यस्थ होने पर अपने-अपने कार्यमें जुट जाता है तथा अस्त होने पर इस प्रकार सो जाता है कि केवल उसका श्वास-प्रश्वास ही उसके अस्तित्वका परिचायक होता है। इस प्रकार अपने तीनों भावोंमें जिसका प्रभाव प्रकट है वे भगवान मार्तण्ड अज्ञानान्धकारको भी दूर करें। उसकी किरणोंके चन्द्रमासे ओझल मात्र होने पर जो वीरानी तथा कर्फ्यू-वत् वातावरण सारे भारतमें बिना धारा १४४ के उपयोगके बना शायद वह इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्वं पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।

साधना और सिद्धिः

[लेखक :—काव्यतीर्थ श्री पं० चन्द्रभूषणजी शास्त्री, चित्तौड़गढ़ राजस्थान]

इस लेखके वयोवृद्ध विद्वान् श्रद्धेय श्री चन्द्रभूषणजी शास्त्री व्याकरण-न्याय-वेदान्त-पुराण इतिहास तथा मन्त्र शास्त्रके मर्मज्ञ अनुभवी विद्वान् एवं सुकवि हैं। ऐतिहासिक चित्तोड़ दुर्ग और वीरप्रसू मेदपाट (मेवाड़) महीके शक्तिपीठोंकी यात्रा कर वहांकी महत्ता एवं ऐतिहासिकताका जो गम्भीर अध्ययन आपने किया है वह आपकी स्मृतिपटल पर है, लेखनीबद्ध बहुत कम हुआ है। शास्त्रीजी जैसे प्रतिभावान् प्राचीन परम्पराके विद्वान् अब बहुत कम हैं। उनकी स्मृतिपटलपर लिखित यह अमूल्य निधि उनके साथ ही न चली जावे, इसलिए हम अनुरोध करेंगे कि वे अपनी इस निधिको लिपिबद्ध करा दें ताकि राष्ट्रको लाभ पहुँच सके। —सम्पादक]

साधकके हृदयमें जब तक अपने आराध्य इष्टदेवके साथ घनिष्ठ आत्मीय सम्बन्ध नहीं जुड़ जाता एवं उपास्यके विषयमें जब तक पूर्ण रूपसे विश्वास नहीं जम जाता, तब तक साधनों के होते हुये भी सिद्धियां असम्भाव्य है। उपास्य देव चाहे राम-कृष्ण-देवी-हनुमान्-शिव-शक्ति आदि कोई भी हों, उनकी पूजा साकार होनेसे प्रतिमामें ही की जाती है, वह चाहे कैसी भी हों। इनमें जब तक प्रतिमागत स्वरूपको साधकका हृदय प्रत्यक्ष नहीं मान लेता है तब तक उपासना निर्मूल ही मानी जाती है। मन्त्र, तन्त्र, साध्यकी सिद्धिमें साधन रूप है। यहां श्रद्धा मौलिक हेतु है। अनादि कालसे प्रचलित पूर्ववर्ती साधकों द्वारा अनुभूत कोई स्तोत्र मन्त्रादि निष्फल नहीं है। जो इनका चिरकालसे अस्तित्व ही पूर्ण समर्थक हैं। इनके द्वारा साधकोंसे लब्ध सिद्धियोंके हजारों उदाहरण अनेक गाथाओंमें भरे पड़े हैं। इन साधनोंके व साधन विधियों के भी अनेक ग्रन्थ आज भी उपलब्ध हैं। जिनका श्रद्धा निष्ठा व दृढ़तासे उपयोग करके अलौकिक सिद्धियां प्रत्यक्षतः प्राप्त कर रहें हैं। कामनायें चाहे कैसी भी हों साधनोंके सामने अनायास लभ्य हो जाती हैं। इनके (कामनाओंके) मन्त्रादि भिन्न-भिन्न हैं और उपासककी भावनाके अनुसार आराध्य प्रतिमायें एवं मन्त्रादि भी पृथक्-पृथक् हैं। इस विधान से साधकोंके द्वारा प्राप्त सिद्धियोंके चमत्कार भी आश्चर्यजनक यत्र-कुत्र प्रत्यक्ष देखे जा रहे हैं। परमात्मा एक है परन्तु ऐहिक कामनायें अनेक हैं। तद् रूप उसी जगदाधारके नाम रूप भी अनेक हैं। जिनमें वह एक है। कामनाओंकी उत्पत्तिकी आधार भूमि आकांक्षा है। जिसकी पूर्तिके साधन इष्टको प्रसन्न करने के लिये मन्त्र तन्त्र आदि हैं जो सभी मानेमें सत्य और सिद्ध है। यदि किसी साधकको सफलता नहीं मिलती है तो वहां उसकी श्रद्धा निष्ठा व विश्वासकी कमी जानना चाहिये। मन्त्र आदिकी शक्तिमें नहीं। आजके मानव की कामना मुख्य रूपमें निम्न संकलित की जाती है।

(१) पुत्र कामना। (२) धन कामना।

(३) व्यवसाय। (४) रोग मुक्ति। (५) शत्रु निवृत्ति। (६) राज-विजय। (७) स्त्री प्राप्ति। (८) विद्या प्राप्ति। (९) आत्म रक्षा। (१०) वशीकरण आदि मानी जाती हैं। ये सभी साध्य हैं, सुलभ हैं। हमारा आग्रह है कि कामनाओंकी सफल सिद्धिके लिये हमें दिव्य देवस्वरूपोंको ही माध्यम बनाना चाहिये। न कि सावर मन्त्रोंसे भूत प्रेतादिको "भूतानि यान्ति भूतेज्याः" इत्यादि प्रमाणोंसे देव मन्दिरोंको छोड़कर श्मसानोंका आश्रय लेकर दुःखान्तमन्त्रोंसे सिद्धि प्राप्त करने वाले परिणाममें कभी सुखी नहीं देखे गये हैं। उनके वंश नष्ट हो जाते हैं। जादूगरके धनकी तरह सर्वस्व सत्वर ही नष्ट हो जाता है। इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

मैंने अपने दीर्घकालिक जीवनमें अनुभव भी किये हैं, और उनके अभीष्ट चमत्कार भी देखे हैं। अतएव मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि कोई मन्त्रादि निःसत्व नहीं है। मान्त्रिक शक्तिसे मनुष्य जो चाहे घर बैठा कर सकता है। कर भी रहे हैं। मैंने सिद्ध पुरुषोंके दर्शन किये हैं। व उनके चमत्कार भी देखे हैं। साधनाकालमें अपने आपको पूर्णतया समर्पण कर देने वालोंसे भी मिलना हुआ है। उनकी अलौकिक सिद्धियां भी देखी गई हैं। तथा उन्हींसे प्रसादी कृत कतिपय मन्त्र तन्त्र भी प्राप्त हुये हैं।

मेरी दृढ़ धारणा है कि जब ऐसी मान्त्रिक शक्तियां मौजूद हैं तो मनुष्य अन्यत्र श्रम करके क्यों निराशाके दावानलमें झुलसते हैं। उन्हें अपने इष्टदेवको ही साधनोंके द्वारा प्रसन्न कर लेना चाहिये। कामनानुरूप प्रत्येक देवता की आराधनाके विभिन्न, मन्त्र साधन, यन्त्रादि के लिये मुझे भी पूछ सकते हैं। मैं निःस्वार्थ भावनासे केवल इष्टबल प्राप्त करके अपनी काम्य सिद्धिका समन्त्र प्रयोग विधान बिना किसी लुकाव-छिपावके केवल पोस्टेज मात्र भेजनेसे पत्रमें लिख दूँगा। मैं इसे सेवा ही मानता हूं। बताना मेरा कर्त्तव्य है। लगन, निष्ठा, श्रद्धा, और विश्वासके साथ श्रम साधना आप पर निर्भर है।

नैरन्तर्य-दीर्घ काल सत्कारा
सेवितो दृढ़ भूमिः। (पतञ्जलिः)
श्रद्धामयोऽयंपुरुषो योयच्छ्रद्धः स एवसः
(गीता)
"कलौ दीर्घेण कालेन प्रसीदन्तीह देवताः"
(श्रीमद्भागवत)

वर्तमानमें जहां कामादि दोषोंके प्राचुर्यसे आत्मा एकदम रागादि मलोंसे दूषित है, अतः चित्तकी चञ्चलता बढ़ी हुई है। स्थिरता दूर चली गई है। भला वहां साधारण पाठ पुजा करके व अत्यल्प त्याग करके अभीष्ट सिद्धियोंको मन्त्र तन्त्रादि साधनोंसे अनायास प्राप्त करना चाहते हैं यह कैसे सम्भव हो सकता है? आज तो सत्ताधारी साधारण व्यक्ति भी सामान्य चाटुतासे अपने मनोनुकूल नहीं होता। यही बात उपासना मार्गकी है।

स्तोत्र पाठ मन्त्र तन्त्र यन्त्र आदि अपने प्रभुको अभिमुखी करणमें साधन रूप है। मूल में तो आत्म-समर्पण पूर्वक इष्टमें दृढ़ श्रद्धा विश्वासके साथ सच्ची भावना व दृढ़ता ही इष्टको द्रवित करने वाली है। लेकिन ऐसा नहीं होता। हमारी उपासना तो एक मात्र वंचना ही है।

कोई भी व्यक्ति काम तो बिलकुल न करे और अपने स्वामीसे ज्यादासे ज्यादा द्रव्य ऐंठनेकी आशा करे यह कब तक चल सकता है ?

मेरे पास लोग लिखते हैं कि हमने अमुक मन्त्रके इतने जाप किये, इतने पाठ किये इतने अनुष्ठान कराये लेकिन किसी सिद्धिके प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष दर्शन नहीं हुये । यह जानकर आश्चर्य होता है कि उनका कितना विमर्श शून्य भाव है। इष्ट देवको प्रसन्न करनेके लिये साधकको कितना दीवाना बननेकी जरूरत है, उस पर खयाल करना चाहिये।

मन्त्रोंकी साधनाओंके काल नियत है जबकि उनकी साधना विधि पूर्वक सत्य निष्ठा के साथ की जाय तो "सिद्धि बिन्दति मानवः" (गीता)

कोई मन्त्र ६ दिन, कोई ११, कोई ४१, कोई ५१ दिनमें फल दे देते हैं। कोई स्तोत्र मन्त्र तो सदैव भी किये जाते हैं। जो विभिन्न लक्ष्योंसे सम्बन्धित होते हैं।

हमारी कामनाओंकी सद्यः सिद्धि न होने में कारण रूप हमारे इस जन्म व पूर्व जन्मके प्रतिबन्धक कर्म हुआ करते हैं । उनके नाश हेतु ही तपः साधनाकी आवश्यकता रहती है। यही कारण हमारी इच्छित फल सिद्धियोंके विलम्बका हो सकता है। इसमें घबराना नहीं चाहिये। न आस्तिकता ही खोना चाहिये। लगा रहना, अवश्य फलदायक होता है।

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धि यजन्त इह देवता ॥
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥
(गीता)

कोई साधक शाकिनी भूत प्रेत वेताल आदिकी साधना करके शीघ्र सिद्धियां तो प्राप्त कर लेते हैं लेकिन उसमें आत्माका पतन व हनन अवश्य निहित है। मानवको चाहिये सुख-लक्ष्मी, शान्ति लाभ, पुत्र पौत्र, समृद्धि, और धन धान्यकी निरन्तर वृद्धि।

मन्त्र वैदिक भी हैं और पौराणिक भी। दोनों ही अपने-अपने क्षेत्रमें इच्छित प्रत्यक्ष फल देने वाले हैं। सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती मन्त्रों का महार्णव है। ऐसे ही मानस (राम चरित मानस) वाल्मिकीय सुन्दरकाण्ड, एवं पुराणोक्त आदित्य-हृदय, नारायण वर्म, गजेन्द्र-मोक्ष, रामरक्षा आदि अमोघ मन्त्र निधियां है। आवश्यकता है सच्चे साधकोंकी।

मैं विश्वासके साथ प्रत्येक साधककी साधनाके मन्त्र व विधियां उनकी कामनाके अनुसार निःसंकोच बता देनेकी सेवा करनेके लिये नित्य प्रस्तुत हूं। मैं चाहता हूँ विश्वमें आस्तिकता, धर्माचरण पूर्वक मनुष्योंकी सफल कामना।

भारतदर्शन—

गिरिनार (१)

[डॉ० वेदप्रकाश शास्त्री]

धार्मिक दृष्टिसे जिन पर्वतोंको महनीय माना जाता है उनमें गिरिनारका अन्यतम स्थान है। हरिवंश पुराणमें इस पर्वतका अप्रतिम महत्त्व प्रतिपादित हुआ है। भगवान् श्री कृष्णने अपने अनुज बलराम सहित कालयवन से बचनेके लिए इसी पर्वतका आश्रय लिया था और यहीं उन्हें जलाकर भस्म कर देनेका उपक्रम जरासन्ध कालयवन आदि द्वारा हुआ था। यहीं दोनों भाइयोंकी भेंट भगवान् परशुरामजीसे हुई थी। इसीकी तलहटीमें भगवान् श्रीकृष्णने गुहाशायी राजा मुचकुन्दकी क्रोधाग्नि का शिकार कालयवनको बनाकर एक दुर्धर्ष नर-पिशाच-कंटकसे मुक्ति पाई थी। २३ नवम्बर १९७७ को सहसा इसके दर्शनका अवसर प्राप्त हुआ।

'गिरिनार' नामसे ऐसा आभास होता है मानो यह पर्वतराजकी नारी हो। यात्रियोंके मुखसे भी 'जय गिरिनारी' शब्द सुनकर उक्त भ्रान्त धारणाकी पुष्टि होती है। परन्तु सचाई कुछ दूसरी ही है। पुराणोंके अनुसार 'नार' कहते हैं जलको। हिमालयके अमोघ रेतस् अर्थात् जलसे उत्पन्न होनेके कारण इसका नाम गिरिनार रखा गया है। पुराणोंमें उसे भगवती पार्वतीका अग्रज प्रतिपादित किया गया है।

कार्तिक शुक्ला ११ से १४ पर्यन्त गिरिनारकी परिक्रमा भवनाथ, जीणाबाबाकी मढ़ी, मारवेला, बोरदेवीमें विराम करते हुए सम्पन्न होती है। इस परिक्रमामें भाग लेनेके लिए लगभग पांच लाख यात्री जूनागढ़में एकत्रित होते हैं। इनमेंसे कुछ गिरिनारके ऊपरी भाग की भी यात्रा करते हैं।

मैं जब जूनागढ़ पहुंचा सौभाग्यसे यही परिक्रमा काल था। लाखोंकी भीड़ जूनागढ़ में एकत्रित थी। पहले दिन क्योंकि मैं सोमनाथ की यात्रा कर रात्रिमें दो बजे सो पाया था, अतः मेरे बहन-बहनोई नहीं चाहते थे कि मैं गिरिनार पर चढ़ूँ। लगभग ग्यारह हजार सीढ़ियां चढ़कर स्वयंको थका देनेमें वे कोई तुक नहीं मानते थे और इसीलिए उन लोगोंने निश्चय किया था कि मुझे प्रातःकाल जगाया ही न जाए परन्तु जब उनकी आशाके विपरीत मैं ६ बजे तक दैनन्दिनीय कृत्यसे निवृत्त होकर यात्राके लिए तैयार हो गया तब उनके सामने अनुमति देनेके अतिरिक्त कोई चारा न रहा। ठीक ८ बजे मैं भी चन्दूलाल यादव एवं भिक्खू भाई के साथ जीप द्वारा गिरिनारके तल प्रदेशमें जा पहुंचा।

गिरिनारके तल प्रदेशमें अनेक दुकानें और होटल आदि हैं जिनके कारण यह भाग छोटा-मोटा नगर ही दृष्टिगोचर होता है। खाने-पीने एवं अन्य उपयोगकी वस्तुएं यहां आसानीसे मिल जाती हैं, जिससे यात्रियोंको पर्याप्त सुविधा होती है।

गिरिनार पर चढ़ाई आरम्भ करनेके लिए यात्रीको एक द्वार पार कर सीढ़ियोंकी ओर बढ़ना पढ़ता है।

गिरिनारतलेटीमें श्री सनातन हिन्दू धर्म शाला है। यहां निवासकी सुन्दर-व्यवस्था है। यहांसे कुछ ही पगकी दूरी पर जैन धर्मके प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान्का मन्दिर तथा दिगम्बर जैन धर्मशाला है। पास ही श्वेताम्बर जैन धर्मशाला है।

गिरिनारका सोपान मार्ग जहांसे आरम्भ होता है वहां सर्वप्रथम हनुमानजीका मन्दिर मिलता है हनुमानजीके दर्शन कर ही भक्तजन यात्रा आरम्भ करते हैं। प्राकृतिक वातावरणके मध्य यात्रा आरम्भ होती है और प्रायः २५०० सीढ़ियां पार कर भर्तृकी गुफा मिलती है। यहां भर्तृ-गोपीचन्दकी मूर्तियां हैं। कहा जाता है कि यहां भर्तृ-गोपीचन्दने तप किया था। आगे बढ़ने पर मालीपरब विश्राम घाट नामक स्थान मिलता है। यहां जलकी उत्तम व्यवस्था है और श्रीरामचन्द्रजी का उत्तम मन्दिर है। यहां साधु-सन्तोंको भोजन करानेका प्रबन्ध है। यहांसे और आगे बढ़ने पर 'प्रसूतिबाईकी पादुका' नामक स्थान और छोटा सा मन्दिर है, यहां सगर्भा स्त्रियां अपनी रक्षाके लिए नारियल चढ़ाती हैं। आगे गुरुदत्तकी गुफा और पंचेश्वर महादेव नामक स्थान आते हैं। यहां अनवरत निर्भर प्रवाहित होता है। स्थान अतीव मोहक और दर्शनीय है।

लगभग ४५०० सीढ़ियां चढ़ने पर 'पहली टूंक गिरिनार कोट' के दर्शन होते हैं। यहां अनेक दर्शनीय कलात्मक जैन मन्दिर हैं। प्रायः सभी मन्दिरोंके शिखर 'तामचीनी' के कामसे सज्जित हैं। दूरसे ही इनकी छटा दर्शनकी लालसा मनमें जगा देती है। इन मन्दिरोंमें मुख्य मन्दिर है श्री नेमीनाथ भगवान् का। मन्दिरस्थ प्रतिमा अतीव आकर्षक है। इस प्रतिमाके चारों ओर २४ तीर्थङ्कर प्रतिष्ठित हैं।

कोटकी दूसरी अतीव कलात्मक एवं दर्शनीय प्रतिमा है 'अमिझरा पार्श्वनाथजी' की। यह मन्दिर विशालता, कलात्मकता एवं सुव्यवस्थाके कारण स्वर्गसे होड़ लगाता हुआ दीख पड़ता है। इसी मन्दिरमें कुछ सीढ़ियां उतरने पर जैन धर्मके प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ जी की भव्य, कलात्मक एवं विशाल प्रतिमाके दर्शन होते हैं। मन्दिरके पृष्ठ भागमें भीम-कुण्ड, सूर्य-कुण्ड, ज्ञानवाव आदि जलाशय हैं। मन्दिर में जैनधर्मावलम्बियोंके निवासकी सुन्दर व्यवस्था है। मन्दिरमें २४ तीर्थङ्करोंके मरमरमें खचित कलात्मक चरण दर्शनीय हैं और किसी कलाकार साधककी उद्यान कलाका दिग्दर्शन करते हैं। मन्दिरके बाह्य भागमें वस्तुपाल तेज पालके भव्य-दर्शनीय मन्दिर हैं। इस मन्दिर के सामने ही दिगम्बर जैन धर्मशाला है और २-३ होटल एवं फुटकर सामानकी दुकानें हैं, जहांसे खाने-पीने योग्य सभी वस्तुएं आसानी से मिल जाती हैं।

कोटसे निकल कर १०० सीढ़ियां चढ़ने पर एक दोराहे पर पहुंचते हैं। यहांसे एक मार्ग गोमुखी गंगाकी ओर तथा दूसरा राजुल गुफाकी ओर जाता है। उस गुफामें राजुलजी की मूर्ति और नेमिनाथजीके चरण हैं।

आगे चलकर श्री रामानन्द ब्रह्मचारीके सद्यत्नसे बनी 'जटाशंकर हिन्दूधर्मशाला' आती है। यहां हिन्दू मात्रके निवास एवं सुख-सुविधाकी पूरी व्यवस्था है।

इस धर्मशालासे १०० सीढी नीचे उतर कर दिगम्बर जैन मन्दिर मिलता है। यह मन्दिर पर्याप्त प्राचीन कलात्मक एवं दर्शनीय है।

धर्मशालासे आगे बढ़ने पर 'सातपुड़ा कुण्ड' आता है। यहां बारहों मास सात शिला-खण्डोंसे जल स्रवित होता रहता है। यहांका जल अतीव स्वच्छ और रोगशामक बतलाया जाता है। यहां स्नानके लिए एक कुण्ड भी बना हुआ है। इसके नीचे प्राचीन जामवन्त गुफा है।

यहांसे आगे बढ़ने पर गोमुखी गंगा नामक स्थान पर पहुंचते हैं। यहां गोमुखसे एक कुण्ड में जल धारा अनवरत गिरती है। इस कुण्डसे जल दूसरी ओर एक लम्बे जलाशयमें पहुंचता है जहां यात्री स्नान करते हैं। गोमुखी गंगा का कुण्ड छोटा सा ही है। भावुक भक्त यहां पहुंच कर जो दक्षिणा समर्पित करते हैं उससे उक्त कुण्डकी ३-४ सीढ़ियां पूरी तरह ढक जाती है। इस गोमुखसे गंगाका प्राकट्य किसी गोहत्यारे ब्राह्मणकी प्रायश्चित जनित तपस्या के फलस्वरूप माना जाता है। गोमुखी गंगा के मुख्य कुण्ड पर गंगेश्वर महादेव, सुराक नामी बटुक भैरव एवं भगवानके चौबीस अवतारोंके दर्शन होते हैं। यहांका जल सुस्वादु एवं मधुर है।

यहांसे आगे बढ़ने पर दत्तात्रेय भगवान् एवं सत्यनारायण भगवान्का मन्दिर आता है जहां उक्त दोनोंके अतिरिक्त ऊपरी सीढी पर श्रीहनुमान्जी, भैरव आदिके श्रीविग्रहों के भी दर्शन प्राप्त होते हैं।

यहांसे कुछ ही आगे 'साचाकाका' नामक स्थल पर शंकर गिरि जी द्वारा स्थापित महा-कालीका सुन्दर मन्दिर है जो भगवती महा-कालीकी भव्य एवं आकर्षक प्रतिमासे अलंकृत है। कहा जाता है यहां पूजन करनेसे व्यक्तिके सभी दुःख दूर हो जाते हैं। यहां आवास एवं जलका भी उत्तम प्रबन्ध है।

यहांसे ऊपरकी ओर बढ़ने पर गिरिनार का प्रमुख स्थान—'अंबाजी' आता है। आद्या-शक्ति भगवती अम्बाका यह मन्दिर बहुत प्राचीन है—चूने-ईंटसे बने इस मन्दिरमें यद्यपि सादगीका ही निवास है, तथापि वातावरणकी पवित्रता मनको छू लेने वाली है। यहां भगवती की प्राचीन शैलीकी मूर्ति है और सामने चूने का बना हुआ पीतवर्ण सिंह भी प्राचीन शैली का ही है। पुजारी अशिक्षित तो है ही समुचित वेशभूषा पहनने से भी कतराने वाले हैं। सवा रुपया भेंट करने पर अम्बाजीकी पादु-काओंके स्पर्शका अवसर यात्रीको दिया जाता है। और तभी प्रसाद भी मिलता है। (क्रमशः)

भारतीय कल्पनामें भविष्यका महत्व (?)

[श्री प्रह्लादराय व्यास]

जब पत्नी गर्भवती हो जाती है तो हमारे देशमें उसे आयुर्वेदके सिद्धान्तसे कई प्रकारकी आयुर्वेदिक श्रेष्ठ औषधियां दी जाती है, जिस से बलवान् एवं सुन्दर संतान हो। आज भी सरकार व्यवहारिक पोषाहार कार्यक्रमके तहत गर्भवती महिलाओंको गांवोंमें एवं शहरोंमें पौष्टिक भोजन एवं औषधी आदि नि:शुल्क देती है। गर्भवती महिलाके कई संस्कार होते हैं जैसे पुंसवन संस्कार याने आठ मासकी पूजा तथा गर्भवती महिलाको अच्छे ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं, सुनाये जाते हैं, क्योंकि देखने सुनने और पढ़नेसे सुसंस्कार और सद्‌विचार मानवमें उत्पन्न होते हैं ऐसा करनेसे होने वाली संतान सुन्दर होती है, सुन्दर विचारों वाली होती है, सुन्दर विचारसे उसके ग्रह भी जन्मके बाद अच्छे आते हैं जो भविष्य निर्माण करते हैं। विचार की शक्ति बड़ी ही विलक्षण होती है। मानव जीवनमें उसके विचारोंके कारण ही उसका भविष्य निर्माण होता है। मनुष्य जैसा अपने हृदयमें सोचता है, जैसी कल्पना करता है वैसा ही वह बन जाता है। इसीलिए गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने कहा है कि—योयच्छ्रद्धः स एव सः" याने जैसा सोचता है जैसी कल्पना करता है वैसा ही वह बन जाता है। और वैसा ही उसका भविष्य बनता है। इसीलिए ऋग्वेद में हमें समझाया है कि हमारे पास चारों ओरसे सुन्दर विचार आने दो और सुन्दर चिन्तन करो। एक राजस्थानी लोककथा है कि एक गरीब चूना पत्थर ढोने वाली औरत के एक बच्चा था जो रोज यह कहता था कि माँ मैं राजा बनूंगा, माँ मैं राजा बनूंगा। वह औरत एक राजाके बनते हुए महलमें चूनेकी तगारी ढोती थी। एक दिन राजाने उस बालक के मुँहसे यह बात सुनी तो उसे होनहार समझकर ले गया क्योंकि उसके कोई सन्तान नहीं थी। जब उसकी माँसे उसका बालकके जन्म समय एवं जन्म स्थान आदि पूछकर उस बालककी जन्म कुण्डली बनवाई गई तो उसमें राजा बननेका योग ज्योतिषके प्रकाण्ड पण्डितों ने बताया। राजाने जब उसकी माँ से पूछा कि तुम्हारे ऐसा अद्‌भुत बालक कैसे हुआ ? तो उस ने बताया कि वह जब गर्भमें था तो मैं कल्पना करती थी कि मेरा बेटा राजा बनेगा। माता पिताकी जैसी कल्पना होती है जैसे विचार होते हैं वे ही बालकमें गर्भमें प्रवेश कर जाते हैं। अभिमन्युने गर्भमें चक्रव्यूह भेदन पितासे सीख लिया था—इसका प्रमाण है। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जब अपनी माताके गर्भमें थे तो उनके पिता उनकी माताके कानमें रोज एक वाक्य बोलते थे कि मैं "निर्देश देनेके लिए पैदा हुआ हूं निर्देश लेने हेतु नहीं।" यही कारण है कि बालगंगाधर तिलक महान् हुए। शुकदेव मुनि १२ वर्ष माताके गर्भमें रहे और पैदा होते ही संसारको ज्ञान देने लगे। अष्टावक्र ऋषि जब गर्भमें थे तो अपने नानाकी एक गलत बातका उत्तर गर्भसे ही दे दिया तो नानाने शाप दिया कि तुम आठ जगहसे टेढ़े-मेढ़े होना। पुत्रीके प्रार्थना करने पर नानाने श्रापमें संशोधन कर दिया और कहा यह विश्वमें अद्वितीय विद्वान् होगा। अष्टावक्रने

जनक जैसे महान् ज्ञानी राजाको ज्ञान विज्ञान से चमत्कृत किया, सभी जानते हैं। मनोवैज्ञानिकोंने भी इस बातको माना है कि शरीर विचारका अनुगमन करता है और भविष्य बनाता है अतः जिन माता पितामें नित्य झगड़ा सा रहता है मतभेद रहता है उन माता पिताके होने वाली सन्तानके व्यक्तित्वका विकास अच्छा नहीं होता और भविष्य उज्ज्वल नहीं होता। माताको सबसे बड़ा देवता मानकर "मातृदेवो भव" ऋषियों ने कहा क्योंकि बालकमें २८ तत्व माताके और चार तत्व पिताके होते हैं। ये ही बत्तीस लक्षणा मानव कहलाता है और ३२ दांत मानवके होते हैं अतः मांकी जितनी सुन्दर कल्पना एवं विचार होंगे बालकका भविष्य उतना ही अच्छा होगा। और उत्पन्न होने वाले बालककी जन्म कुण्डलीमें अच्छे ग्रह आयेंगे। ज्योतिष एक दैवज्ञ विद्या है। सम्पूर्ण ज्ञान हो लेकिन ज्योतिषका ज्ञान न हो तो मनुष्यके आँखें होते हुए भी अन्धा माना गया है अतः भविष्यकी कल्पना जन्म कालमें जन्म कुण्डलीमें आये ग्रहोंसे की जाती है। प्रधान ग्रह हैं राहु-केतु, शनैश्चर और गुरु जो बहुत लम्बे काल तक गोचरमें एक-एक राशिमें रहते हैं इनसे समयकी गतिका भान ज्योतिषी कराते हैं। महिलाओंको ज्योतिषमें ज्यादा विश्वास होता है और ज्योतिषियोंके चक्करमें चढ़ती हैं और अपने बालकका भविष्य जाननेकी इच्छुक होती हैं, फलस्वरूप बालकमें भी ज्योतिषके प्रति एक अंधविश्वास हो जाता है। भविष्य जानना या विद्वान् ज्योतिषीसे बालक कैसा होगा यह जानना तो बुरा नहीं है, किन्तु ज्योतिषमें अन्धविश्वास होना बहुत बुरा है। यह मैं एक ज्योतिषी होकर भी कह रहा हूँ। ज्योतिष एक विज्ञान है। यह विज्ञान यह समझाता है कि जब काल विपरीत हो तो कोई भी काम करो सावधानीसे करो। जिसे महाकवि रहीमने इस प्रकार कहा है कि–

"रहिमन चुप हो बैठिये देखि दिननके फेर।
जब नीके दिन आयेंगे बनत न लागहिं बेर।।"

किन्तु मेरी यह मान्यता है कि यदि समय खराब हो ज्योतिषके दृष्टिकोणसे, तो काल विपरीततामें भी मनुष्यको अकर्मण्य न होकर उस विपरीत कालके विपरीत चलना चाहिए और संतोष धैर्य और उपासनाका सहारा लेकर कर्म करना चाहिए, जिससे समय शान्ति से गुजरेगा और कर्मका पालन करनेसे भविष्य उज्ज्वल होगा। अतः माताओं और बहिनोंसे मैं प्रार्थना युक्त निवेदन करना उचित समझता हूं कि वे बालकोंको यह शिक्षा दें कि :—

मत देखो हाथ की रेखा,
पलटो मत पतरा पोथी।
मीन मेष कुछ कर न सकेंगी,
यह सारी बातें हैं थोथी।
धरे हाथ पर हाथ न बैठो
बढ़े चलो कुछ काम करो।
तुम सब कुछ कर सकते हो,
मत ईश्वर को बदनाम करो।

यह कर्मकी उपासनाका संस्कार माताओं द्वारा बालकोंमें डालनेसे ही भारतका भविष्य सुन्दर होगा। यही भारतीय कल्पना करना माताओं और बहिनोंका कर्तव्य है, अतः अधिक सन्ततिको जन्म देनेकी कल्पनाका सर्वथा त्याग

भाग्यरेखा (२)

[लेखक :—श्री राधाकृष्ण शर्मा श्रीमाली]

वह व्यक्ति जिसकी भाग्य रेखा बिना किसी प्रकार कटे या किसी अन्य रेखा द्वारा न कटती हो, वह व्यक्ति उत्तरोत्तर विकास मार्ग पर बढ़ता जाता है।

चन्द्र क्षेत्र (हथेलीमें छोटी अंगुलीके नीचे मणिबंधका ऊपरी भाग) से प्रारंभ होकर शनिके क्षेत्रकी ओर जाने वाली भाग्य रेखा परिवर्तनशील तथा अनिश्चित भाग्यकी द्रष्टा है। ये व्यक्ति सामाजिक होते हैं। सार्वजनिक क्षेत्रमें सफलता प्राप्त करते हैं। ये दूसरोंसे शीघ्र प्रभावित हो जाते हैं। यह रेखा स्त्रियों के हाथोंमें विशिष्ट रूपमें पाई गई है। स्वतन्त्र रूपेण ये चिन्तन व मनन नहीं कर पाते। ये कल्पना शक्ति द्वारा विभिन्न योजनाओंका निर्माण कर सकते हैं पर सफलता मिलेगी ऐसा सम्भव नहीं।

हां ! यदि हाथ व्यावहारिक व चमचाकार वा मिश्रित हो तो व्यवसायमें हितकर होता है, सरकारी नौकरीमें उच्च पदको प्राप्त करता है। जीवनमें यशका भागी होता है, कीर्ति अर्जित करता है। ये जो भी हो आर्थिक दृष्टिसे समृद्ध नहीं हो सकते, यत्र-तत्र दीन-हीन लोगोंकी सहायतार्थ खर्च कर देते हैं।

भाग्य रेखाका प्रभाव जातकके सामाजिक, व्यावहारिक व अर्थोपार्जनके मार्गमें भी पड़ता है। यह रेखा प्रधानत: मणिबंधसे शनि क्षेत्र तक जाती है, मार्गमें जीवन रेखा, मंगल व चन्द्र क्षेत्रको भी प्रभावित करती है व प्रभावित होती है। गहरी स्पष्ट व स्वच्छ रेखा सौभाग्य सूचक है, फीकी-मन्द-अस्पष्ट भाग्य रेखा कष्टमय जीवनकी परिचायक है। कुछ विशेषज्ञ इस रेखा पर द्वीप या नक्षत्र चिन्होंका होना ठीक नहीं समझते पर एक वर्ग यह कहता है कि ये इतने अशुभ नहीं जितना कि रेखाका टूटते होना।

साफ चन्द्र क्षेत्रसे प्रारंभ होकर, अशुभ द्वीप-क्रूस आदि रहित, हृदय रेखासे मिलकर भाग्य रेखा यदि गुरुके स्थानकी ओर जाती हुई हो तो उत्तम भाग्यकी सूचक है।

ये व्यक्ति समाजके प्रिय, स्नेही, व्यवहार प्रिय होते हैं। सम्मोहन शक्ति इनमें गजबकी होती है। प्रेम सम्बन्धों में ये भाग्यवान एवं उस पक्षसे इन्हें द्रव्य-सम्मान-सुख ऐश्वर्यकी प्राप्ति होती है। हाँ ! यदि गुरु क्षेत्र पर गुणक चिह्न (×) भी मिल जाय तो सोनेमें सुहागा है।

शुक्र क्षेत्र (अंगूठेके मूलमें मणिबंधका

कर सयम युक्त रहना अपना धर्म समझना चाहिये। यही आज युगकी मांग और समय का तकाजा समझना होगा, अन्यथा भारतमें रहनेको भूमि भविष्यमें नहीं मिलेगी। और अन्नका इतना अभाव हो जायेगा कि भूख मुस्कराएगी मानवोंके आंसुओं पर, और मानव को अभावोंके कुहासेमें भटकना पड़ेगा।

पता—दिव्यकुटीर तनेजाब्लाक जयपुर

ऊपरी भाग हथेलीकी ओर) से प्रारंभ कर शनि क्षेत्रकी ओर बढ़ने वाली भाग्य रेखासे जातक पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करता है तथा उसीसे भाग्योदय होता है। यदि यह रेखा जीवन रेखाको पार कर बंद हो जाय अर्थात् शनि क्षेत्र तक पहुंचे ही नहीं तो व्यक्ति उस व्यक्तिसे मध्यायु तक ही लाभ उठा पाता है। अभ्यासवश ऐसे हाथ भी देखनेमें आए कि शुक्र व चंद्र दोनों क्षेत्रोंसे दो रेखाएं आकर हथेली के मध्यमें युत हो जाती हैं और साथ मिल शनि क्षेत्रकी ओर अग्रसर होती हैं यह रसिकता भावुकताकी परिचायक है तथा उत्थानके मार्ग में बाधक है, परन्तु यदि युतिके बाद बिना बाधाके अग्रसर हो शनि स्थलको पा लेती है तो मध्य कालमें अर्थोपार्जन करती है और यदि उसका झुकाव गुरु क्षेत्रकी ओर हो तो उच्च पदासीन होता है। ये जातक उदार, आदर्श, सहिष्णु व पराक्रमी होते हैं। हथेलीके मध्य भागसे आरंभ होने वाली भाग्य रेखा अर्थात् मंगल ग्रहके क्षेत्रसे प्रारंभ होकर बढ़ती है तो उससे स्पष्ट है कि उसका भूतकाल कष्ट-मय रहा है, जिसने अपनी उन्नतिकी कभी चिन्ता नहीं की। इसी प्रकार मस्तिष्क रेखासे प्रारंभ होने वाली रेखा व्यक्तिका भाग्योदय मध्यायुके उपरान्त बौद्धिक एवं मानसिक प्रयत्नों द्वारा होता है। मध्यायुके पूर्व जीवनमें घोर कष्ट, चिन्ता, मानसिक परेशानी, व कष्टमय आर्थिक जीवन व्यतीत होता है।

हथेलीके मध्यमें पहुंच कर यकायक भाग्य रेखा समाप्त हो जाती है तो मध्यायुमें व्यक्ति द्वारा योग्य गंभीर कष्टोंकी सूचक है। यदि दोनों हाथोंमें ऐसा है तो मध्यायुके उपरान्त दैन्य-विपत्ति-कष्टका द्योतक है। यदि भाग्य रेखाके अन्तमें × का चिह्न है तो यह अकाल मृत्युकी सूचना है।

मस्तिष्क रेखाका स्पर्श करके ही भाग्य रेखा रुक जाय तो व्यक्ति अपने ही विभ्रमित या सदोष विचारों, विवेक हीनताके कारण अपने भाग्यको या प्रयासोंको अवरुद्ध करता है। यदि हृदय रेखाका स्पर्श करके ही यह रेखा रुक जाय तो व्यक्ति भावनाओं, कामुकता स्वार्थके कारण भाग्यको अवरुद्ध करता है।

ऐसे भी हाथ देखनेमें आए हैं जिसमें भाग्य रेखासे ही कुछ रेखाएं निकल कर इधर-उधर फैल गई हैं। ऐसी अवस्थामें यदि वह रेखा चन्द्र स्थलमें जाकर विलीन हो जाती है तो प्राणी जुए-सट्टे में उन्नति करे पर यह उन्नति अस्थायी होगी। यदि यह रेखा शुक्र पर जाकर समाप्त होती है तो वह देशाटन द्वारा उन्नति करेगा। घूम फिर कर ज्ञानार्जन करेगा, व्यापारमें दक्ष होगा। पर यह उन्नति अस्थाई होगी।

यदि यह भाग्य रेखासे निकल कर कोई शाखा शनि क्षेत्रमें विलीन होती है तो वह समस्त प्रकारके ऐश्वर्यका भोग करेगा। सफलता कदम चूमेगी। बाधाओंका पतन होगा। यही शाखा यदि सूर्य क्षेत्रमें विलीन होती है तो प्राणी यश और कीर्ति अर्जित करता है। तेजस्वी होता है। सार्वजनिक कार्योंमें सफलता प्राप्त करता है। साहित्य व कला मर्मज्ञ होता है। वह कवि, नेता, अभि-नेता बन नाम कमाता है।

बुध नक्षत्र पर जाकर शाखाका अन्त हो

ज्योतिष-आराध्या श्रीपंचागुली महादेवी

[लेखक :—श्री भारतभूषण भारद्वाज स्नातक, ज्योतिष शास्त्री, डिप० टी० वी०]

आधुनिक युग भौतिक युग कहलाता है। आज विज्ञापन शो, यंत्रों-मशीनोंका बोलबाला है। आज एक मैकेनिक चाहे वह अनपढ़ है, तो उसकी आय व सम्मान अधिक होगा। ठीक इसके विपरीत दैवज्ञ विद्या या किसी और दैव विद्याका ज्ञानी विद्वान्‌का कोई मूल्य नहीं ! केवल ५ वर्षकी डाक्टरी शिक्षाके उपरान्त एक डाक्टर योग्य डाक्टर कहलाता है। जबकि दूसरी ओर एक दैवज्ञ या दैव-विद्या उपासक अपने जीवनके महत्त्वपूर्ण २०-२५ वर्ष इस विद्याको अर्पण कर, उपेक्षा व हेय दृष्टि पाता है। परन्तु दैव-विद्या की हँसी उड़ाने वाले भौतिकताके उपासकों पर जब कोई विपत्ति आन पड़ती है तो ईश्वर याद आता है ! दैवज्ञ, सयाने, नजूमी, ओझाओंका ख्याल आता है। विपत्तिके समय व्यक्ति एक पोंगा पंडितके समस्त निर्देशोंका पालन करता है। कहनेका तात्पर्य यह है कि कितना भी भौतिकताका युग हो फिर भी आध्यात्मिक, दैव विद्याका बोलबाला बादलोंमें छुपे सूर्यके समान है।

अमेरिकाका उदाहरण हमारे सम्मुख है। भौतिक उपकरण भौतिकता ऐश्वर्यमें उसका विश्वमें सर्वप्रथम स्थान है। परन्तु अमेरिकियों का अन्तःकरण सुखी नहीं। यही कारण है कि अमेरिकामें योग अध्यात्म, आराधनाका अब बोलबाला है। अन्तःकरणकी शान्ति व तृप्ति के लिये अध्यात्म व आराधना बहुत आवश्यक है। जिस प्रकार वायुमण्डलमें रेडियो किरणें (*Radio waves*) टी० वी० किरणें (*T. V. waves*) व अन्य वेवस अदृश्य रूपमें विचरण करती है, परन्तु हमें महसूस नहीं होती ! जहां-जहां पर रेडियो सेट टी० वी० सेट, वायरलैस सेट होंगे और उसी वेवसकी फ्रीक्वेंसी पर सेट लगाने पर हमें ब्राडकास्टिंग स्टेशनके प्रोग्राम सुनाई देते हैं। ठीक इसी प्रकार आराधना या पूजाका महत्व है। इस वायुमण्डलमें हमारे आराध्य देवताओंका वास सूक्ष्म रूपमें रेडियो फ्रीक्वेन्सीकी तरह है। हम विभिन्न मंत्र, पूजा, यज्ञ, से उस आराध्य देवतासे सम्बन्ध बना सकते हैं। जिस प्रकार हमारे रेडियो सेटमें ठीक फ्रीक्वेन्सी पर सुई न होने पर ठीक प्रसारण नहीं मिलता या दो स्टेशनोंका प्रसारण मिला-जुला मिलता है। ठीक इसी प्रकार पूजा या आराधनामें ठीक ढंग या विधिसे न करने पर हमें निराशा मिलती है। परन्तु हमारा अनुभव यह है कि

तो विद्वान् व बुद्धिमान होता है। सर्वत्र सराहना होती है। ऐसे प्राणी वैज्ञानिक, चित्रकार कलाकार, गणितज्ञ, ज्योतिषी व व्यापारी भी बनते हैं। इनकी मानसिक शक्ति प्रखर होती है। इन रेखाओंके साथ साथ विभिन्न चिह्नोंका अपना महत्व होता है जिन्हें फिर किसी लेखमें बतानेका प्रयास करूँगा।

पता—सी.जी. ३३ हाईकोर्ट कालोनी
जोधपुर (राजस्थान)

उचित व विधिपूर्वक पूजा करनेसे देर-सवेर सफलता मिलती अवश्य है। वर्तमान समयमें अधिकतर भविष्यवाणियां असफल होती हैं। भविष्यवाणियोंके पीछे दैवी शक्तिका महत्त्व-पूर्ण योग है। इसे हम अन्तर्ज्ञान *Intution* भी कहते हैं। जो व्यक्ति हस्तरेखा व ज्योतिष एवं लेखन कार्यमें सफलता प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें माँ पंचांगुलीका इष्ट रखना चाहिये। फिर कुछ वर्षोंमें नियमित आराधना करते हुए चमत्कार देखें। मेरा अपना यह अनुभव है कि पंचांगुली माँकी आराधनासे केवल ५ वर्षोंमें मेरी बहुत ही महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणियां शतप्रतिशत सही रही और मेरे लेख प्रकाशित हो रहे हैं। अतः हस्तरेखा विज्ञान व ज्योतिषमें चमत्कारोंके लिये मनुष्य को हस्त नक्षत्र वाले दिन पंचांगुलीकी मूर्ति स्थापित करके नित्य एक माला निम्न मंत्रकी किया करें, फिर फल देखें। मंत्र निम्न है :—

ध्यान

"ॐ पंचागुली महादेवी श्रीसीमन्धर शासने।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशि तु॥

मन्त्र

ॐ नमो पंचागुली-परशरी-माता मयंगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रण मध्ये, राउलमध्ये, शत्रुमध्ये, दीवानमध्ये, भूतमध्ये, प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये, झोंटिंग मध्ये, डाकिनी-मध्ये, शंखिनीमध्ये, यक्षिणीमध्ये दोषणीमध्ये, शेकनीमध्ये, गुणी-मध्ये, गारुड़ीमध्ये, बिनारीमध्ये, दोषमध्ये, दोषाशरणमध्ये, दुष्टमध्ये, घोर कष्ट मुझ ऊपरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्रीपंचांगुली देवि तवो वज्र निर्धार पड़े ओ३म् ठः ठः ठः स्वाहा॥

इसकी आराधनाके मुहूर्तके लिये नवरात्रि बहुत शुभ है।

●

विचारकण

- दुनियाँ की हर वस्तुको कुछ न कुछ प्राप्तिकी निगाहसे भीतर तक देखें तो हर चीजकी भीतरी तहसे जरूर बहुत कुछ प्राप्त होगा।
- संसारका नाप मानवतासे ही हो सकता है—देवत्वसे तो यह बहुत ही छोटा पड़ता है और दानवता से बहुत ही बड़ा।
- मनुष्यका व्यवहार ही उसकी खरी कसौटी है। सुस्वास्थ्य ही सुन्दरता है।
- संसारकी सच्ची दौलत तो इन्सान है। नकली दौलतकी चकाचौंधने उस सच्ची दौलतकी कीमत गिरा दी है।
- विश्वका सबसे बड़ा विज्ञान मनुष्य-विज्ञान है और सबसे बड़ी कला मनुष्य का आचरण है।
- रसके बिना जीवन नीरस है। रस जीवन का पर्याय है और जीवन रसका पर्याय।
- दुनियाँ भरका अनुभव चबा जानेसे दांत क्षीण होकर मुँहसे प्रस्थान कर देते हैं।
- पैसा, पद और प्रतिष्ठा तो बिना परिश्रम के—भाग्यसे—भी प्राप्त हो सकते हैं किन्तु ज्ञान, विद्या और कला बिना श्रम तथा अभ्यासके सम्भव नहीं।

मुष्टिक योगमाला—

आयुर्वेदके अनुभवसिद्धयोग

[लेखक :—श्री वैद्य वाचस्पति शर्मा]

(१८) उदरवात शामक (गेसहर)

आजकल गेसकी व्याधिका प्रसार आधुनिक सभ्यतामें शारीरिक श्रमसे जी चुराना एवं स्वाद-वृत्तिको अधिक अपनाने-से चोली दामनका सम्बन्ध रखता है। अत: निम्न योग रामबाण है।

(१)	नरसार पुष्प	२० ग्राम
(२)	सुहागेका फूला	२० ग्राम
(३)	कचूर	२० ग्राम
(४)	सैन्धवलवण	२० ग्राम
(५)	काला लवण	२० ग्राम
(६)	सांभर लवण	२० ग्राम
(७)	काली हरड़	२० ग्राम
(८)	पीली हरड़	२० ग्राम
(९)	बायविडङ्ग	२० ग्राम
(१०)	कालीमिर्च	२० ग्राम
(११)	सोंठ (दिल्लीकी)	२० ग्राम
(१२)	खानेका सोडा (सोडा बाईकार्ब)	२० ग्राम

इन औषधियोंको पीसकर अर्क गुलाबमें घोटकर चणक प्रमाण गोली बना लेवे २/२ गोली भोजनके पश्चात् निम्बुकी शिकञ्जीसे अथवा (मट्ठे में शर्करा मिलाकर) तक्रमें शर्करा मिश्रित कर उसके साथ लेवें। यह योग गेस पीड़ित जनोंके लिये अमृत तुल्य है भोजनमें गोरसका अधिक उपयोग करें। उक्तञ्च—

बिना गो रसो को रसो भोजनानां,
बिना गो रसो को रसो कमिनीनाम्।
बिना गो रसो को रसो भूपतीनां,
बिना गो रसो को रसो हा! यतीनाम्॥

इससे गोरसकी महिमाका दिग्दर्शन मात्र हो जाता है।

(१९) प्लीहा SPLEEN

कम्प ज्वर यदि कुछ दिनों तक आता रहे तो ज्वरावस्थामें कफ पदार्थयुत भोजनका सेवन करलें। अथवा मृदु ज्वर ज्वर कुछ दिन रह जावे तो प्लीहा बढ़ जाती है। इस रोगमें कफ-पित्तनाशक और रेचक औषधसे प्लीहामें रक्त कम हो जाता है अत :—

(१)	वायविडङ्ग	१० ग्राम
(२)	चित्रकमूल	१० ग्राम
(३)	सैन्धवलवण	१० ग्राम
(४)	यवक्षार	१० ग्राम

उक्त औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण ६ ग्राम, १०० ग्राम गोमूत्रमें पीवे तो प्लीहा आराम हो जाती है।

(२०) मूर्च्छा (बेहोशी)

आक्रमणके समय शिरको नीचा रखे। शिर पर शीतल जल डाले, स्वच्छ वायु आने देवे। मूर्च्छाके रोगीको बिना उपधान (सिरहाना) के लेटावे। उत्तेजनाके लिये द्राक्षा-रस देवें। मल-बन्धसे बचनेके लिये प्रतिदिन

एक टी स्फून (चायका चम्मच) भरकर एरण्ड तैल दुग्धके साथ देवें। आक्रमणकालमें पोटास परमेग्नेटका सूक्ष्म चूर्ण कर नस्य देवे। इससे निश्चित रूपसे मूर्च्छा टूट जाती है।

(२१) आतशक (गरमी)

यह भी दुराचार जन्य व्याधि है—

(१)	कपिला	६ ग्राम
(२)	नीला थोथा	६ ग्राम
(३)	मुर्दासींगा	६ ग्राम
(४)	संगजराहत	६ ग्राम
(५)	मेंहदी सूखी	६ ग्राम
(६)	सीसा	६ ग्राम
(७)	पारद	६ ग्राम

सीसेको गलाकर पारदको मिलावें। पारद सीसेकी अच्छी तरह घुटाई करे, पश्चात् शेष औषधियां उसमें डाल देवें। इसको आतशक-जन्य व्रण पर भुरकावे। यह इस दारुण दुःख-प्रद व्याधिकी अमोघ चिकित्सा है।

(२२) सुजाक (पूयमेह)

वेरजा सत्व ३ ग्रामको सम भाग मिश्री मिलाकर दिनमें ३ बार शीतल जलके साथ फक्की लगानेसे सुजाकसे निश्चित रूपेण मुक्ति मिलती है।

(२३) मेदो रोग (मोटापा)

(१)	चित्रक मूल	१० ग्राम
(२)	जीरा	१० ग्राम
(३)	हीरा हींग	१० ग्राम
(४)	सोंठ	१० ग्राम
(५)	कालीमिर्च	१० ग्राम
(६)	पीपल छोटी	१० ग्राम
(७)	काला लवण	१० ग्राम
(८)	बड़ी इलायची	१० ग्राम

२५ ग्राम तक्र (मट्ठा छाछ) में ६ ग्राम चूर्ण डालकर सेवन करे। यह १ मात्रा है इससे क्षुधावृद्धि एवं मेदोरोग दूर हो जाता है।

(क्रमशः)

विचारकण

- नेताके नेत्रों पर ही जब स्वार्थ और लोभ का चश्मा चढ़ जाय तो उससे सही नेतृत्व की क्या आशा !
- नीतिमें जब कोई राज होता है तो वह 'राजनीति' हो जाती है।
- कवि और गीतकारमें वही अन्तर है जो निर्गुण और सगुण भक्त कवियों में हैं।
- लेखनी 'ज्ञान-राशिके संचित कोष'— साहित्यकी संग्रह कर्त्री और अध्ययन उक्त कोषके तालेकी कुंजी है।
- जिस शब्दमें जितना जीवन भरा होता है उसमें उतना ही वजन होता है।
- पुष्पकी सुगन्ध तो उसके पास आने पर मिलती है, मनुष्यके सद्गुणोंका मूल्याङ्कन उसके दूर जाने पर होता है।
- सूर-तुलसी काव्याब्दके श्रावण-भाद्र-मास हैं।
- धर्म और कर्म एक ही सिक्केके दो पहलू हैं। धारण किये रहने तक जो 'धर्म' है किये जाने पर वही 'कर्म' है।
- जीवनकी कलात्मक व्याख्या ही 'साहित्य' है।

अचूक चांस तीन माहके

श्रावण मास

ता० २ या ३ अगस्तमें चांदी-सोना-गोला मेवा, किराणा-गुड़-खांड पर तेजी आवेगी । ४ अगस्त में चांदीकी मंदी फलेगी । लालमिर्च मंदी होगी । रुईमें मंदी जोरदार आवेगी । ७ से १० अगस्त तकमें चांदी-सोना पर मंदी जरूर आवेगी । सरसों व मूंगफली भी मंदी होगी । १३ से १६ अगस्तमें चांदी मंदी होवेगी । १८ से २० अगस्तमें तिलहन तेज होंगी । २३ से २६ अगस्तमें तिलहन-घृत-तैल-मेवा-गोला-मसाले तेज रहेंगे ।

भाद्रपद मास

ता० २८ अगस्तमें चांदी मंदी होगी । ३० अगस्तसे १४ दिनके अन्दर जीरा-सोना-गुड़-खांड-घृत-तैल-गेहूँ-चना-चावल - गुवार-ऊन-रुई और सूत पर घटाबढ़ीसे तेजी आती रहेगी । ता० १ व २ सितम्बरमें चांदी पर मंदी जोरदार आवेगी । ४ सितम्बरकी शामसे ७ तकमें चांदी पर मंदी जोरदार आवेगी । चना-खांड-हल्दी-धनियां-जीरा-गेहूँ-जौ खटाई पर तेजी आवेगी । ७ सितम्बरसे १० तकमें तिलहनों व घृत-तैल पर तेजी जोरदार आवेगी । ९ सितम्बरमें चांदी सोनाकी मंदी आवेगी । १२ सितम्बरसे १४ दिनमें रुई-कपास-रेशम-ऊन-सरसों-तैल-घृत-वैजीटेबिल-चावल- उड़द-ज्वार-सुपारी-नारियल-सन- जूट-पाट-वारदाना:लक्कड़-बांस-नील-डीजल-खनिज पदार्थों पर व नाइलौन पर तेजी आती रहेगी । २० से २३ सितम्बर तकमें तिलहनों-घृत-मिर्च मसालों और खांड अदरक आलू अरबी, प्याज व लहसनों पर तेजी जोरदार आवेगी ।

आश्विन मास

ता० २५ सितम्बरसे २ अक्तूबर तकमें चांदी-सोना पर तेजी जोरदार आवेगी । किराणा-मेवा व गोला भी तेज होंगे । ता० २ से ९ अक्टूबर तक अलसी-एरंडा-घृत-तैल-तिल व समस्त तिलहनों पर तेजी आती रहेगी । १२ से १४ अक्टूबर तकमें चांदी सोना-खांड-किराणा व मेवा और गोला नारियल तेज होंगे । १६ से १९ अक्टूबर तकमें चांदी-सोना-चावल-मूंग-दालवाना- चना- लोहा- खली-चूनी बिनौला- खनिज-तैल- मशीनरी-सीमेंट-बिजली का सामान व इमारती लकड़ी पर तेजी आवेगी ।

नोट :—ज्योतिष्मतीके ग्राहकोंको जबावी पत्र पर निःशुल्क परामर्श पिया जायगा ।

पता—पं० नरोत्तमदेव दीक्षित, ज्योतिषी मोहल्ला—दिल्ली वाला, हाथरस (उत्तर-प्रदेश)

त्रैमासिक राशि भविष्य

अगस्त-सितम्बर-अक्टूबर १९८०

[लेखक .—श्री ओंकारनाथ त्रिवेदी, बाराबंकी उ० प्र०]

मेष

अगस्त—यह मास सामान्य अच्छा, किन्तु महत्वहीन सा है आपकी रुचि व्यसनों-विलासों और मनोरंजनोंमें रहेगी। विशेषकर ३-१२ या १३ २२-३१ ता० में श्रम करना पड़ेगा किन्तु उसमें मन न लगेगा। फिर भी प्रयत्न करने पर सफलता मिलेगी, इस दृष्टिसे ५-११-१५-२१-२४-३० ता० अनुकूल हैं। उत्तरार्द्ध में छुटपुट कलह-विवादके अवसर आवेंगे। धन लाभके लिये ३-६-१२ या १३-१६-२२-२५-३१ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ८-१०-११-१८-२०-२९-३० भी अच्छी रहेंगी, व्यापारको सुधारने वाली नयी छोटी योजनाएं चलावेंगे। भ्रमण-मनोरंजनके अवसर, उत्सवादिमें सम्मिलन, सुसमाचारोंकी प्राप्ति। पत्नीसे सेवा-सहयोग की प्राप्ति किन्तु बीच-बीच विवाद भी। उदर विकारसे कष्ट। ९-१९-२८ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यह मास परिस्थितियोंमें उतार चढ़ाव लेकर आया है। उनका अच्छा या बुरा होना आपकी व्यक्तिगत ग्रहस्थिति पर निर्भर है। किन्तु इस गोचर फलके अनुसार उनके अच्छे होनेकी सम्भावना ही अधिक है, सामयिक समस्याओंका समाधान हो जायगा। कार्यभार बढ़ेगा। किन्तु सम्भव है कि आप व्यसनों-विलासोंमें पड़ जावें। शत्रुओं-बाधाओं पर विजय और प्रयासोंमें सफलता मिलती रहेगी। व्यापारको सुधारनेके लिये ऋण लेनेका विचार करेंगे। धन लाभके लिये १-२-९-११-१२-१९-२०-२१-२२-२७-२८-२९-३० ता० श्रेष्ठ हैं। समाजमें प्रतिष्ठा पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति। घरमें मंगल कार्य। ६-१५ या १६-२४ नेष्ट।

अक्टूबर—मासका प्रथमार्द्ध अधिक अच्छा है। व्यक्तिगत स्थिति मनोनुकूल न रहेगी। श्रम और उद्योगमें मन न लगेगा फिर भी सफलता पानेके लिये ७-८-१८-२६ ता० अनुकूल है। व्यसनों-विलासोंमें रुचि रहेगी। बीच-बीच आलस्यका अनुभव। घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आ सकते हैं। अच्छा समय आनेमें कुछ विलम्ब है। परिस्थितियोंसे समझौता कर लेना ही सुखद रहेगा। व्यापार को बढ़ानेके लिये ऋण लेनेको सोचेंगे। धन लाभके लिये ६-७-८-९-१६-१८-१९-२६-२७ ता० श्रेष्ठ हैं। आर्थिक दबाव बना रहेगा। प्रथमार्द्धमें मनोरंजन और सुखोंपभोगके अवसर मिल जायँगे, चोट-चपेट सम्भाव्य। दौड़धूप अवश्य। ३-१३-२१-२२-३० ता० नेष्ट।

वृष

अगस्त—यह मास सामान्य अच्छा है। बौद्धिक उलझनोंमें उत्तरार्द्धमें कमी आ जायगी और कुछेक समस्याओंका समाधान भी हो जायगा। उत्साह पूर्वक उद्योग करेंगे। प्रयासों में सफलता। कामनाएँ पूर्ण होंगी। उत्तरार्द्धमें आलस्य करने लगेंगे और आनन्द-विनोदमें

उत्साहके साथ उद्योग करेंगे किन्तु उत्तरार्द्धमें शिथिल पड़ जायंगे। एक प्रिय व्यक्ति भरपूर सहयोग देगा। प्रेम सम्बन्ध टूट जानेके योग हैं। धन लाभके लिये ७-६-१७-१९-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, एक अकल्पित रास्तेसे कोई रकम मिल सकती है। व्यापारके मूलमें कोई महत्व-पूर्ण सुधार करनेकी योजना आरम्भ कर देंगे। उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार। सगे-सम्बन्धियों से वैमनस्य। १० ता० नेष्ट।

अक्टूबर—यह मास शुभ फलोंसे युक्त है फिर भी आपको असुविधा जनक प्रतीत हो सकता है। शत्रुओं-बाधाओं-समस्याओं पर विजय मिलेगी। २३ ता० से बौद्धिक उलझनें बढ़ सकती हैं और इनके कारण सगे-सम्बन्धियों से विवाद हो सकता है। व्यसनों-विलासोंमें रुचि। धन लाभके लिये ४-६-१४-१६-२३-२४ ता० श्रेष्ठ हैं। व्यापारमें मन न लगेगा। उसके सुधारके लिये भाँति-भाँतिकी कल्पनाएं करते रहेंगे। समाजमें जनप्रियताकी कमी रहेगी, किन्तु भ्रमण-मनोरंजन और उत्सवादिमें सम्मिलनके अवसर मिल जायंगे। वैवाहिक-पारिवारिक सुखोंमें बाधाएँ रहेंगी। घरमें कोई छोटा उत्सव हो सकता है। एक-दो छोटी सुखद यात्राएं। किसी सुसमाचारकी प्रगति ७ ता० नेष्ट।

कर्क

अगस्त—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। दो तारीखसे जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा, शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायगी। विशेष व्यय के जो योग चल रहे हैं वे धीरे-धीरे शक्तिहीन होते जाएंगे और अन्तिम दस दिनोंमें लाभके योगोंमें बदल जायंगे। धन लाभके लिये ५-१५-२४ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २-३-८-११ १२-१३-१८-२१-२२-२७-३०-३१ भी अच्छी रहेंगी, एक-दो छोटे आकस्मिक लाभ। किसी शुभ कार्यमें विशेष व्यय होगा, ६-७ ता० में सावधान रहें। उत्साहपूर्वक उद्योग करेंगे किन्तु २० ता० के बाद उत्साह घट जायगा। व्यापार बढ़ेगा। समाजका वातावरण सुखोल्लासपूर्ण रहेगा। पारिवारिक सुखोंमें अवरोध। उत्तरार्द्ध में पारिवारिक कलह। छोटी-छोटी यात्राएं। ११ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यह मास कुछ उतार-चढ़ाव या अप्रिय परिवर्तन ला सकता है, किन्तु आशा है कि उनका सामना वीरता और उत्साहके साथ करेंगे और उन्हें अपने लिये मंगलमय बना लेंगे। बीच-बीच बौद्धिक उलझन और मानसिक अशान्ति। मित्रों-प्रियजनोंसे सहयोग, प्रयासोंमें सफलता, कामनाओंकी पूर्ति। धन लाभके लिये १ या २-११-२१-२९ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ६-१९-२०-२७-२८ भी अच्छी रहेंगी, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। विशेष व्ययसे बच न सकेंगे, २-३-३० ता० सावधान रहने योग्य हैं। व्यापारको बढ़ानेके लिये कोई नयी योजना आरम्भ करेंगे। समाजमें मान भ्रमण मनोरंन, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन। एक नया प्रेम सम्बन्ध आरम्भ हो सकता है। छोटो यात्राएं और दौड़धूप। ७ या ८ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—तुलनात्मक दृष्टिसे मासका प्रथमार्द्धको अधिक अच्छा कह सकते हैं।

बौद्धिक उलझनें बीच-बीच आती रहेंगी, १-९-१०-११-१९-२०-२७-२८ ता० में संयमसे काम लेना चाहिये। व्यसनों-मनोरंजनोंमें रुचि बढ़ जायगी। उत्साहपूर्वक उद्योग करेंगे। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। १७ ता० से उत्साह घटने लगेगा और अन्तिम सप्ताहमें कुछ उतार-चढ़ाव आयंगे। धन लाभके लिये ६-७-८-१६-१८-२४-२६ तारीखें श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ४-१४-२३ भी अच्छी रहें, आकस्मिक लाभ सम्भाव्य। एक ऐसा लाभ ६ ता० में हो सकता है। अन्तिम सप्ताहमें कुछ अस्वाभाविक व्यय उठ खड़े होंगे। व्यापार बढ़ेगा। सामाजिक वातावरण हर्षोल्लासपूर्ण रहेगा, वैवाहिक और पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति होगी। छोटी-छोटी यात्राएं। ५ ता० नेष्ट।

सिंह

अगस्त—पूरे महीने शुक्र शुभ और बृहस्पति अशुभ फल देनेकी स्थितिमें रहेंगे, किन्तु बृहस्पति १६ और शुक्र १९ ता० से वेधग्रस्त हो जानेके कारण यथोचित फल न दे सकेंगे। शेष ग्रहोंमेसे अधिकांश नेष्ट स्थानों में हैं किन्तु सभी वेधग्रस्त हैं अतः मास महत्वहीन सा है। समस्याएं और आशंकाएं तथा उलझनें घेरे रहेंगी जिनके कारण प्रगति न हो सकेगी। दृढ़ मनोयलसे काम लें तो प्रयासोंमें सफलता मिल सकती है। उत्तरार्द्धमें आत्मविश्वास बढ़ जायगा और परिस्थितियों में सुधारकी योजना बना सकेंगे। धन लाभके लिये ५-१५-२३-२४ ता० श्रेष्ठ हैं, ये ता० प्रयासोंमें सफलता भी देंगी। आशा है कि ३-१२ या १३-२२-२५-३१ में भी लाभ होगा। विशेष व्ययसे बच न सकेंगे, ८-९-१० में सावधान रहें। व्यापारको बढ़ाने या सुधारने में पूंजी लगावेंगे। यात्राके प्रसंग आवेंगे। ९-१९-२८ तारीखें नेष्ट।

सितम्बर—यह मास मिश्रित फल वाला है। प्रथम सप्ताहमें जीवनमें कोई छोटा बदलाव आ सकता है। श्रम और उद्योगमें मन ही न लगेगा या उसके अनुकूल परिस्थितियां ही न मिलेंगी। धन लाभके लिये १-२-१०-११-१२-२०-२१-२२-२७-२८-२९ ता० श्रेष्ठ हैं। सम्भव है कि ७ और १७ भी अच्छी रहें। धन लाभकी एक-दो नयी सम्भावनाएं दिखायी देंगी। विशेष व्यय और हानिसे शायद ही बच सकें। किसी शुभ कार्यमें भी व्यय होगा। व्यापारको बढ़ाने या किसी नये कारोबारमें पूंजी लगावेंगे। चालबाज लोगों और शीघ्र धनी बनाने वाली योजनाओंसे बचना चाहिये। उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन। अच्छे-बुरे दोनों प्रकारके समाचार सुनायी देंगे। वैवाहिक सुखों में बाधाएं। प्रेम सम्बन्धमें असफलता। दिनचर्या अव्यवस्थित। ५ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—यह मास पर्याप्त अच्छा है। ६ ता० से शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी। गुप्त चिन्ताएं और आशंकाएं बीच-बीच पीड़ित करेंगी। १६ या १७ ता० से नया उत्साह जाग उठेगा और जीवनके विभिन्न क्षेत्रोंको सुधारनेके लिये उद्योग करेंगे। एक दुष्ट व्यक्ति शत्रुता करेगा। अनिद्रा और दुःस्वप्न। धन लाभके लिये ६-७-८-१६-१७-१८-२४-२५-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २-१२-२१-२९ भी अच्छी रहेंगी, आकस्मिक लाभ सम्भाव्य,

कष्टप्रद व्यय और हानिसे बच न सकेंगे। व्यापारको बढ़ानेमें पूंजी लगावेंगे। समाजमें मान, उत्सवों-दावतोंमें सम्मिलन । अच्छे-बुरे दोनों प्रकारके समाचार सुनायी देंगे। सामाजिक दृष्टिसे ६ ता० महत्वपूर्ण है। छोटी-बड़ी यात्राएं। उदर विकार । ३-४-३०-३१ ता० नेष्ट ।

कन्या

अगस्त—यह मास तुलनात्मक दृष्टिसे प्रथमार्द्धसे अधिक अच्छा कह सकते हैं, अपने महत्वपूर्ण काम इसी भागमें बना लेना चाहिये । २० ता० तक पर्याप्त उत्साहके साथ उद्योग करेंगे। १४ से २० ता० के बीच आत्मविश्वास बढ़ जायगा। २१ ता० से बिना किसी ठोस कारणके वातावरण क्षुब्ध होने लगेगा और तब निकट सम्पर्क वालोंसे कलह-वैमनस्यके अवसर आवेंगे। व्यसनोंमें रुचि बढ़ जायगी। धन लाभके लिये १०-२०-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ४-७-१४-१७-२६ भी अच्छी रहें । व्यापारको बढ़ानेमें पूंजी लगानेका विचार करेंगे। समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी। वैवाहिक और शयन कक्षके सुखोंमें बाधाएं। भोजन प्राप्तिमें असुविधा । दौड़धूप। ६ या ७ ता० नेष्ट ।

सितम्बर—यह मास संघर्षपूर्ण है। किसी अप्रिय घटनाकी सम्भावना न होने पर भी चारों ओर तनावपूर्ण वातावरण रहेगा। ऐसे में आपका आत्मविश्वास बढ़ जायगा और धैर्यके साथ परिस्थितियोंका सामना करेंगे। एक-दो मित्र सहयोग दगे। निकट सम्पर्क वालों से कलह सम्भाव्य। २-१२-२२-३० में सावधान रहना चाहिये, धन लाभके लिये ७-१७-२५ ता० श्रेष्ठ हैं, विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे । किसी नये कारोबारमें पूंजी लगाने का विचार करेंगे । एक नया प्रेम सम्बन्ध आरम्भ हो सकता है। अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के समाचार सुनाई देंगे। दिनचर्या अव्यवस्थित रहेगी। दौड़धूप अवश्य। ३-३० ता० नेष्ट।

अक्टूबर—इस मासमें एक छोटे स्तर पर चतुर्मुखी सुधार होंगे। कई समस्याएं सुलझ जायंगी। ४ ता० से नया उत्साह और आत्मविश्वास जाग उठेंगे और शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी। सम्भव है कि अन्तिम सप्ताहमें आनन्द-विनोद और आलस्यमें पड़ जायं। धन लाभके लिये ४-१४-२३ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि १-६-६-१०११-१६-१६-२०-२४-२७-२८-२६ भी अच्छी रहें। आकस्मिक लाभके भी योग हैं। किसी शुभ कार्यमें विशेष व्यय होगा, ५-६-७ ता० में सावधान रहना चाहिए। व्यापारमें कुछ असुविधापूर्ण स्थितिका निर्माण अन्तिम सप्ताहमें होगा, उसमें पूंजी भी लगावेंगे । समाजमें मान, उत्सवों दावतोंमें सम्मिलन। दौड़धूप करनी पड़ेगी। २७ ता० नेष्ट।

तुला

अगस्त—यह मास आपके लिये सुधारों की सूचना देता है। ३ ता० या उसके पहलेसे ही शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी । उत्साह और स्वबाहु बल पर विश्वासके साथ उद्योग करेंगे। पुरानी समस्याएं दबी हुई सी रहेंगी। मित्र और परिजन सहयोग देंगे । प्रयासोंमें

सफलता मिलेगी। धन लाभके लिये ३-१२ या १३-२२-३१ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ४-८-१०-१४-१८-२०-२३-२७ भी अच्छी रहेंगी। लाभ स्रोतका विकास, नवीन वस्त्र-वैभव-सम्पदा। नयी व्यवस्थाके साथ व्यापार बढ़ेगा, प्रियजनोंका समागम, उत्सवों-कार्यक्रमोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार। वैवाहिक सुखों में बाधाएं रहेंगी। प्रेम सम्बन्धमें आंशिक सफलता। अनिद्रा और दुःस्वप्न। ४ या ५ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यह मास अच्छा है, किन्तु अप्रिय परिवर्तनोंके आरम्भ या किसी अप्रिय घटनाकी सूचना देता है। यदि कोई अप्रिय परिस्थिति उत्पन्न हो गई तो उसे बहुत शीघ्र नियन्त्रणमें ले लेंगे। प्रथमार्द्ध पर्याप्त अच्छा है और प्रयासोंमें सफलताके साथ धन लाभकी सूचना देता है। यह ध्यान रहे कि शुभ फल धीरे-धीरे घटते जायेंगे। भविष्य सम्बन्धी कोई निर्णय लेनेसे पूर्व उस पर अनेक बार मनन करना चाहिये। क्रोध और खीझका अनुभव। निकट सम्पर्क वालोंसे वैमनस्य। मित्र और हितैषी विमुख होते जायंगे। एक-दो महीने कोई ऐसा काम न करें जिसमें फँसने या धोखा खानेका भय हो। चल रहे कारोबारको बढ़ाने या किसी नये कारोबारमें पूंजी लगाना आरम्भ करेंगे। अच्छा धन लाभ हो जायगा पर कोई बड़ा व्यय सामने दिखायी देने लगेगा। किसी प्रियजनसे विछोह। २८ ता० नेष्ट।

अक्टूबर—इस मास जीवनमें परिवर्तन और उतार-चढ़ाव आनेकी सम्भावनाएं आरम्भ हो जायंगी। बहुत सोच-समझकर ही भविष्य सम्बन्धी कोई निर्णय लेना चाहिये। कोई ऐसा काम न करें जिसमें फंस जाने या हानि होनेका भय हो। गुप्त शत्रु सक्रिय हो जायंगे। कलह-विवादके कारण कुछ मित्र और प्रियजन भी विरोधी बन सकते हैं। अनैतिक कामोंमें रुचि। धन और सफलता पानेके लिये २४ ता० तकका समय सन्तोषजनक है। ६ ता० को कोई अच्छा लाभ हो सकता है। २५ ता० से प्रबल व्यय के योग आरम्भ हो जायेंगे। किसी कारोबारमें पूंजी लगानेसे सम्भव है कि रकम फँस जाय। टैक्स विभाग वालोंसे सावधान रहें। एक अप्रिय समाचार सुनाई देगा। भोजन प्राप्तिमें असुविधा। पत्नीसे विवाद। दुःस्वप्न दिखायी देंगे। २५ ता० नेष्ट।

वृश्चिक

अगस्त—यह मास एक लम्बे समय तक रहने वाले शुभ परिवर्तनकी सूचना देता है। पहली ता० से शुभ फलोंमें वृद्धि होती जायगी। यदि बड़े आदमी बननेकी आकांक्षा है तो अपनी योजनाएं इसी मासमें आरम्भ कर देना चाहिये। सुखोपभोगके अवसरोंके साथ जीवन को समुन्नत बनाने और भाग्योदयके अवसर मिलेंगे। उत्तरार्द्धमें कर्मशक्ति बढ़ जायगी। प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। प्रतिष्ठा और प्रभावकी वृद्धि। धन लाभके लिये ५-१५-२४ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ३-१२ या १३-२२-३१ भी अच्छी रहेंगी। नया कारोबार आरम्भ करनेका निश्चय कर लेंगे। पत्नीसे सेवा-सहयोगकी प्राप्ति। घरमें मंगल कार्य। व्यस्तता बढ़ेगी और दौड़धूप करनी पड़ेगी। २ और २९ ता० नेष्ट।

सितम्बर—यह मास एक नये युगके आरंभ की सूचना देता है । बड़े उत्साहसे उद्योग करेंगे । कोई चमत्कारिक सफलता या विजय भी मिल सकती है । कामनाएं पूर्ण होंगी। सहयोग देने वाले मिलेंगे । बड़े आदमी बनने या किसी विशिष्ट क्षेत्रमें चमकनेकी आकांक्षा है तो उसके लिये अपनी योजनाएं अविलम्ब आरम्भ कर देना चाहिये । राशि लग्नके स्वामी मंगलके व्यय स्थानमें होनेके कारण ऐसा सम्भव है कि इस ग्रहस्थितिका पूरा लाभ न उठा सकें अथवा थोड़ी उपलब्धियोंसे ही आनन्द और सन्तोषमें पड़ जाएं । जीवन एक मंगलमय मोड़ लेगा । धन लाभके नये स्रोतका विकास होगा । व्यापार चमकेगा । प्रतिष्ठा और प्रभाव की वृद्धि । चारों ओर उल्लासपूर्ण वातावरण। वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति । एक नया प्रेम सम्बन्ध आरम्भ । २६ ता० नेष्ट ।

अक्टूबर—इस मासमें गिगत दो मासोंसे जो सुधार आरम्भ हुए हैं उनका प्रभाव बढ़ता जायगा । जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें सफलता मिल सकती है । आत्मविश्वास बढ़ जायगा किन्तु सम्भव है कि कार्यकारी जीवनमें अकारण लापरवाही करने लगें । निकट सम्पर्क वालोंसे विवाद-वैमनस्य सम्भाव्य । मित्रों और प्रभाव शाली व्मक्तियोंका सहयोग मिलेगा । धन लाभ के लिये ७-८-१८-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि २-३-६-१२-१३-१६-२१-२२-२७-२६-३० भी अच्छी रहेंगी, लाभ स्रोतका विकास, आकस्मिक लाभ, व्यापार बढ़ेगा । जनप्रियता उत्सवादिमें सम्मिलन, सुसमाचार । वैवाहिक सुखोंकी प्राप्ति । दौड़धूप अवश्य । ता० २३ या २४ नेष्ट ।

धनुः

अगस्त—यह मास प्रयासोंमें सफलताके साथ प्रगतिकी सूचना देता है । सम्भव है कि उत्तरार्द्धमें कार्यकारी जीवनमें छुटपुट अवरोध रहें पर थोड़ी दृढ़तासे काम लेने पर सफलता अवश्य मिलेगी । उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि । महत्वपूर्ण व्यक्तियोंका सहयोग मिलेगा । यह भी सम्भव है कि क्षणिक विलासोंमें पड़ जानेसे ग्रहस्थितिका पूरा लाभ न उठा सकें। आपमें महत्वाकांक्षा है तो उसकी पूर्तिके लिये योजनाएं आरम्भ कर सकते हैं । सफलता पाने के लिये ५-१५-२४ ता० अनुकूल है । धन लाभ के लिये ६-८-१६-१८-२५-२७ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ५-१०-१५-२४ भी अच्छी रहें, लाभ-स्रोतका विकास, प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति । व्यापारमें प्रगति । समाजका वातावरण हर्षोल्लासपूर्ण । पत्नीको कष्ट । दौड़धूप । ६-१६-२८ ता० नेष्ट ।

सितम्बर—यह मास पर्याप्त अच्छा है। पहली ता० से ही शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी । कार्यकारी जीवनके अवरोध दूर होंगे। शत्रु भी मित्र बन जायंगे । कामनाएं पूर्ण होंगी । अधूरे कामोंको बनाने और नये काम आरम्भ करनेके लिये ग्रहस्थिति अनुकूल है। व्यापारमें छुटपुट उतार-चढ़ाव आ सकते हैं पर उन्हें नियन्त्रणमें ले लेंगे। लाभ स्रोतका विकास, प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। बार-बार धन लाभ होता रहेगा। व्यापार सुव्यवस्थित बनेगा । समाजमें प्रभाव की वृद्धि, उत्सवोंमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार । पत्नीसे सेवा-सहयोगकी प्राप्ति । घरमें मंगल कार्य । दौड़धूप अवश्य । २४ ता० नेष्ट ।

अक्टूबर—यह मास छोटी-छोटी उपलब्धियोंकी सूचना देता है। गुप्त चिन्ताएं और आशंकाएं बीच-बीच व्यथित करेंगी। कार्यकारी जीवनमें अवरोध रहेंगे। फिर भी उत्साहके साथ उद्योग करेंगे, प्रयासोंमें सफलता के लिये ७-८-१८-२६ ता० अनुकूल हैं। दो-एक महत्वपूर्ण व्यक्ति सहयोग देंगे। धन लाभ के लिये २-४-६-७-८-१२-१४-१६-१८-२१-२३-२४-२६-२६-३१ ता० अच्छी हैं, एक छोटा आकस्मिक लाभ। व्ययमें वृद्धि होगी। व्यापार में उतार-चढ़ाव आनेके योग हैं। नौकरीमें श्रम अधिक रहेगा। उत्सवादिमें सम्मिलन, हर्षदायक समाचार। पत्नीसे सहयोग मिलेगा। दौड़धूप अवश्य। २-१३-२२-३० ता० नेष्ट।

मकर

अगस्त—इस महीने केवल बुध १ से ३ और २१ से ३१ ता० तकमें शुभ फल देनेकी स्थितिमें रहेगा। अन्य ग्रह नेष्ट स्थानोंमें है, किन्तु उनमेंसे अधिकांश वेधके कारण नाममात्र फल ही दे सकेंगे। एक प्रकारका क्षुब्ध वातावरण चारों ओर रहेगा और घर-बाहर कलह-विवादके अवसर आ सकते है। सम्भव है कि अपनी समस्याओंसे ऊबकर व्यसनों-विलासोंमें क्षणिक शान्ति पानेका प्रयास करें। १६ ता० से आपमें उत्साह जाग उठेगा। यह ध्यान रखें कि जोश-क्रोध या जल्दबाजीमें कोई ऐसा काम न कर बठें कि बादमें पछताना पड़े। धन लाभके लिये ६-१६-२८ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि १-१०-२०-२६ भी अच्छी रहें। व्यापारमें नयी व्यवस्था आरम्भ करेंगे। २५ या २६ ता० नेष्ट।

सितम्बर—इस मासमें किसी अप्रिय घटना के योग तो नहीं है किन्तु उतार-चढ़ाव आते रहेंगे और उत्साह पूर्वक उद्योग करेंगे। सफलताके मार्गमें बार-बार अवरोध आ जायंगे। जोश-क्रोध या जल्दबाजीमें कोई ऐसा काम न करें कि बादमें पछताना पड़े। संघर्षोंसे ऊब कर व्यसनों-विलासोंमें रुचि लेंगे। धन लाभके लिये ६-१५ या १६ २४ ता० श्रेष्ठ हैं, मासान्तमें कोई छोटा आकस्मिक लाभ हो सकता है। समाजमें प्रतिष्ठा बनी रहेगी। व्यापारमें परिवर्तन करने या नयी योजना आरम्भ करनेका विचार करेंगे। नारी वर्गके झगड़ेसे सावधान रहना चाहिये। पत्नीके लिये मास कष्टप्रद है। अन्तिम दो दिनोंमें किसी शुभकी आशा है। ता० २२-२३ नेष्ट।

अक्टूबर—यह मास अच्छा और प्रगति कारक है। दो या ३ ता० से शुभ फलोंमें वृद्धि होने लगेगी। उत्साह और आत्मविश्वासमें वृद्धि। सहयोग देने वाले व्यक्ति मिलेंगे। धर्म और सत्कर्मोंमें रुचि। कलह-विवादके छुटपुट अवसर आ सकते हैं। धन लाभके लिये ३-४-१३-१४-२२-२३-३०-३१ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ६-१६-२७ भी अच्छी रहेंगी, लाभ स्रोत का विकास। सत्कर्मोंमें विशेष व्यय होगा। व्यापारकी व्यवस्थामें सुधार करके उसे आगे बढ़ावेंगे। प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति। उत्सवादिमें सम्मिलन, सुसमाचारों की प्राप्ति, महत्वपूर्ण व्यक्तियोंसे भेंट। दौड़धूप अवश्य। २-१२-२१-२६ ता० नेष्ट।

कुम्भ

अगस्त—यह मास पर्याप्त अच्छा है।

किन्तु ऐसा लगता है कि अधिकांश समय आनन्द-विनोद अथवा व्यसनों-विलासोंमें निकल जायगा। प्रथमार्द्ध प्रयासोंमें सफलताकी सूचना देता है। श्रम और उद्योगके प्रति आपकी रुचि घटती जायगी। उत्तरार्द्धमें आलस्य और थकान। प्रयासोंमें सफलता पानेके लिये ८-१८-२७ ता० अनुकूल हैं। घर-बाहर कलह-विवाद के अवसर आ सकते हैं। आशंकाएं मनको चंचल बनायेंगी। धन लाभके लिये ३-८-६-१२ या १३-२१-२२-२७-२८-३१ ता० श्रेष्ठ हैं। आकस्मिक व्यय होता रहेगा। व्यापारको बढ़ानेके लिये नकद या मालके रूपमें ऋण लेने की सोचेंगे। घरमें मंगल कार्य। यात्रा और दौड़धूप। २३-२४ ता० नेष्ट।

सितम्बर—इस मासको अच्छा नहीं कह सकते हैं। घिराव जैसी स्थितिमें रहेंगे। आशंकाएं और गुप्त चिन्ताएं अव्यवस्थित रक्खेंगी। बार-बार आलस्य और थकानका अनुभव। जीवनमें किसी मूलभूत परिवर्तनकी संभावना है। छुटपुट संघर्ष आते रहेंगे। श्रम और उद्योग करनेमें मन न लगेगा। इन परिस्थितियोंके कारण व्यसनों-विलासोंमें समय काटनेका प्रयत्न करेंगे। प्रेम-सम्बन्ध टूट जायगा। धन लाभके लिये ४-५-६-७-१४-१५-१६-१७-२५-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ८-६-१८-१६-२७ भी अच्छी रहें। प्राचीन धन या बकाया रकमकी प्राप्ति, विशेष व्यय और हानिसे बच न सकेंगे, २०-२१-२२ ता० में सावधान रहें। व्यापारमें परिवर्तन। घरमें उत्सव। यात्रा और दौड़धूप।

अक्तूबर—यह मास संघर्षपूर्ण है किन्तु सुधारों और उज्ज्वल भविष्यके आनेकी सूचना देता है। २ ता० से सुधार आरम्भ हो जायंगे। आपमें उत्साह और कर्मशक्तिका उदय होगा। बाधाओंके होते हुए भी प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। विलासोंमें अस्वाभाविक रुचि बढ़ जानेसे सम्भव है कि यथोचित प्रगति न कर सकें। कुछ गुप्त चिन्ताएं और आशंकाएं आपको अव्यवस्थित रक्खेंगी। अपनी योजनाओं को इस मास आरम्भ कर सकते हैं। धन लाभ के लिये २-३-१२-१३-२१-२२-२६-३० ता० अच्छी हैं, आशा है कि ६-१६-२४ भी अच्छी रहेंगी, अन्तिम सप्ताहमें एक छोटी रकमकी प्राप्ति। समाजमें खानपान-भ्रमण-मनोरंजनके अवसर। घरमें कोई छोटा उत्सव या मंगल कार्य। ६ ता० को विलासादि सुखोंकी प्राप्ति। दौड़धूप और व्यस्ततामें वृद्धि। १७-१८ ता० नेष्ट।

मीन

अगस्त—यह मास सुधारोंकी सूचना देता है। कोई ठोस उपलब्धि भले ही न हो किन्तु भविष्यमें होने वाली किसी शुभ घटनाकी भूमिका बनने लगेगी। समस्याएं और बौद्धिक उलझनें उत्तरार्द्धमें घट जायंगी। शत्रुओं बाधाओं पर विजय। मासान्त होते-होते ऐसा लगेगा कि जैसे बोझ घट गया है। यह भी संभव है कि जब भविष्य निर्माणका समय आवे तब आप व्यसनों-विलासोंमें पड़ जायं और ग्रहस्थितिका पूरा लाभ न उठा सकें। फिर भी प्रयासोंमें सफलता मिलेगी। धन लाभके लिये ३-५-१२ या १३-१५-२२-२३-२४ ता० अच्छी हैं, आशा है कि २-८-११-१८-२१-२७-३० भी अच्छी रहें। व्यापार बढ़ाने

के लिये ऋण लेनेकी सोचेंगे । पारिवारिक सुखोंकी प्राप्ति । २१ ता० नेष्ट ।

सितम्बर—यह मास सुपरिवर्तनोंकी सूचना देता है । जीवनका सुधार करनेके सुयोग प्राप्त होंगे । शत्रुओं-बाधाओं पर विजय । जीवनमें रसका संचार होगा और आनन्द-विनोदके कई अवसर प्राप्त होंगे । एक नया प्रेम सम्बन्ध आरम्भ हो सकता है । सम्भव है कि व्यसनों-विलासोंमें आपकी रुचि बढ़ जाय और जीवन को समुन्नत बनानेके लिये जितना करना चाहिये उतना न कर सकें । प्रयासोंमें सफलता मिलती रहेगी । चिन्ताएं घटेंगी । धन लाभके लिये ८-६-११-१६-२१-२६-२७-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, आशा है कि ४ या ५-१४-२३ भी अच्छी रहेंगी, आकस्मिक लाभ । उत्सवादिमें सम्मिलन । घरमें मंगल कार्य । व्यापापर बढ़ेगा । दौड़ड़धूप अवश्य । १७ या १८ ता० नेष्ट ।

अक्टूबर—यह मास मिश्रित फल वाला है, किन्तु शुभ फलोंकी संख्या अधिक है । ऐसा लगता है कि आपका अधिकांश समय व्यसनों-विलासोंमें बीत जायगा । बीच-बीच आलस्य और थकानका अनुभव । सफलता देने वाले योग विद्यमान हैं, किन्तु जितना उद्योग करना चाहिये, न कर सकेंगे । दो व्यक्ति भरपूर सहयोग देंगे । कुछ बौद्धिक उलझनें रहेंगी, जो १-१० या ११-२०-२८ ता० में बढ़ सकती हैं । धन लाभके लिये २-८-१२-१८-२१-२६-२६ ता० श्रेष्ठ हैं, सम्भव है कि ४-१४-२३-३१ भी अच्छी रहें, प्राचीन धन या बकाया रकम की प्राप्ति । नवीन वैभव-सम्पदा । सामाजिक वातावरण हर्षोल्लास पूर्ण रहेगा । एक-दो मंगल कार्योंमें भाग लेंगे । पर्याप्त गृहस्थ सुखोंकी प्राप्ति । प्रेम-सम्बन्धमें सफलता । दौड़धूप अवश्य । १५ या १६ ता० नेष्ट ।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

अगस्त १९८०

ता. १ शुक्रवार–लोकमान्य तिलक जयन्ती ।
६ बुधवार–कामदा ११ व्रत स्मार्त्त वैष्णव ।
७ गुरुवार–निम्बार्क एकादशी व्रत ।
८ शुक्रवार–प्रदोषव्रत ।
१० रविवार–हरियाली अमावस ।
१२ मंगलवार–चन्द्रदर्शन मु० ३०
१३ बुधवार–मधुश्रवा ३ सिंधारा, ईदुलफितर
१४ गुरुवार–वरद ४ वैनायकी ४
१५ शुक्रवार–भारतीय स्वतन्त्रता दिवस ।
१६ शनिवार–नाग५सिंहमें सूर्यसंक्रांति मु०३०
१८ सोमवार–गो० तुलसीदास जयन्ती ।
१९ मंगलवार–दुर्गाष्टमी मेला श्रीनयनादेवी
२२ शुक्रवार–पुत्रदा ११ व्रत ।
२३ शनिवार–शनिप्रदोषव्रत ।
२५ सोमवार–सत्यव्रत ।
२६ मंगलवार–श्रावणी१५ ऋषितर्पण, रक्षाबन्धन, श्रीगायत्री जयन्ती अमरनाथ काश्मीर यात्रा ।
२९ शुक्रवार–श्रीगणेश ४ व्रत चं.उ. २१।२०

सितम्बर १९८०

ता. १ सोमवार–श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत स्मार्तो का चन्द्रोदय २३।३१ आद्याकाली ज०
२ मंगलवार–जन्माष्टमी व्रत वैष्णवोंका चंद्रोदय २४।१४ गोकुलाष्टमी ।
३ बुधवार–नन्दमहोत्सव, गुग्गा ९
५ शुक्रवार–अजा ११ व्रत, जैनपर्यूषण प्रा०
६ शनिवार–शनिप्रदोषव्रत, गोवत्साद्वादशी ।
९ मंगलवार–कुशोत्पाटिनी अमावस ।
११ गुरुवार–चन्द्रदर्शन मु० ३० सामश्रावणी
१२ शुक्रवार–हरतालिका ३
१३ शनिवार–श्रीगणेश४ जन्मोत्सव कलङ्क ४ पत्थर४, चन्द्रास्त २०।५६
१४ रविवार–ऋषि ५ जैन संव्वत्सरी ।
१५ सोमवार–बलदेव ६ मेला व्रजमण्डल ।
१६ मंगलवार–कन्यामें सूर्यसंक्रान्ति मु०३०
१८ गुरुवार–श्रीराधाष्टमी ।
१९ शुक्रवार–श्रीचन्द्रनवमी उदासीन संप्रदाय
२० शनिवार–पद्मा ११व्रत स्मार्तोंका ।
२१ रविवार–पद्मा ११ व्रत वैष्णवोंका जलझूलनी ११ व्रत. मेला श्रीचारभुजा गढ़बोर मेवाड़ (राजस्थान)
२२ सोमवार–सोमप्रदोषव्रत ।
२३ मंगलवार–अनन्त१४ व्रत ।
२४ बुधवार–प्रौष्ठपदी पूर्णिमा सत्यव्रत ।
२७ शनिवार–श्रीगणेश४ व्रत चन्द्रोदय २०।४३

अक्टूबर १९८० ई०

ता. २ गुरुवार–म० गांधी जयन्ती । मातृ ९
४ शनिवार–इन्दिरा ११ व्रत ।
६ सोमवार–प्रदोषव्रत ।
८ बुधवार—अमावस्या सर्व पितृश्राद्ध
९ गुरुवार—मातामह श्राद्ध ।
१० शुक्रवार—शारदीय नवरात्र प्रारंभ, घटस्थापन, चन्द्रदर्शन मु०३० ।
१५ बुधवार—श्रीसरस्वती आवाहन जैन ओली प्रारंभ
१६ गुरुवार—तुलामें सूर्यसंक्रान्ति मु०३० श्रीसरस्वती पूजन
१७ शुक्रवार—श्रीदुर्गाष्टमी महाष्टमी सरस्वती बलिदान, मेला ज्वालामुखी हि०प्र०
१८ शनिवार—महानवमी, नवरात्र समाप्त शस्त्रपूजा, सरस्वती विसर्जन ।
१९ रविवार—विजया १० मेला दशहरा ।
२० सोमवार—पापांकुशा ११ व्रत भरतमिलाप
२१ मंगलवार—भौमप्रदोषव्रत ।
२३ गुरुवार—सत्यव्रत, शरदपूर्णिमा, श्रीबाल्मीकि जयन्ती, जैनओली समाप्त ।

त्रैमासिक वाणिज्य व्यवसाय (दैनिक)

[लेखक :—श्री मोतीलाल जैन ज्यो०, W. Z. २७४ पालम कालोनी नई दिल्ली—४५]

श्रावण मास

ता० २७ जुलाई रविवारी पूनम उत्तराषाढ़ नक्षत्रका योग दुर्भिक्षको जन्म देता है। आज ही कन्या राशि पर शनि (मंगल शनिका योग) युद्धको निमंत्रण देना समझियेगा। दक्षिण के घुसपेठिये पश्चिममें जाल फैलायेंगे। सूर्य राहुसे तीसरे मंगल शनिका होना अंतरराष्ट्रीय स्थितिको बिगाड़ता है, इस मासमें ३।४ योग अनिष्ट होंनेसे राजा प्रजाको भयंकर कष्ट समझना होगा। व्यापारियोंके लिये यह मास लाभदायक सिद्ध होगा। राष्ट्रीय अध्यादेशका समझदारीसे पालन करें, वरना खाया पीया सब निकल जायेगा। बन्धुओ! गत मासमें ता० ५ जूनसे पहले जो मंदी चांदीमें आ चुकी है उसीको उपभोग कर सबर करें यहां केवल तेल गुड़ खांडादि मात्र वस्तुओंका व अनाज मात्रमें तेजीका ध्यान रक्खें। यहां १५ जुलाई को सूर्य राहुके योगसे पहले जो अच्छी तेजी चांदीमें ५००)७००) का उछाला आया है उसका लाभ उठाकर तेजीका काम भूल जाना, यहांसे भयंकर मंदी अकल्पित आयेगी, विशेष जानकारी के लिये मालूम करें, यहां समझदार व्यापारी विपरीत लाइनसे कायापलट लाभ उठा जायेगा।

ता० २८ जुलाई सोमवार—को योगका क्षय शुभ होता है। मिथुन राशि पर शुक्र आनेसे भविष्यमें चांदी रुई सूत कपास सन हैसियनमें मंदा आता है। आज चांदी चना तेज होकर मंदा बंद होगा, सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडामें अच्छी मंदी आयेगी। ता० २९ जु० मंगलवार—हर्षल मार्गी होनेसे रुई चांदीमें मोटी तेजी ४०)५०) की आनी है। आज चांदी सरसों गुड़ खांड अरंडामें मोटी तेजी आयेगी, चना तेज होकर बद समय कुछ मंदा रहेगा। अलसी तेल शेयर मंदे होंगे। ता० ३० बुधवार आज चाँदी गुड़में मंदा होकर तेजी फिर मंदा बंद होगा। सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडामें अच्छी तेजी आयेगी चनेमें मोटी तेजी आकर बंद समय मंदा रहेगा। ता० ३१ गुरुवार—आज चांदी गुड़ खांडमें खुलते बाजार से मोटी तेजी होकर बंद समय कुछ मंदा रहेगा, चनेमें अच्छी मंदी आयेगी, सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडामें दिलखुश तेजी रहेगी। ता० १ अगस्त शुक्रवार—आज खुलते बाजार से चांदी गुड़ खांड चीनीमें मनइच्छित तेजी होगी, सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंड तेज होकर मंदा बंद होगा। ता० २ अगस्त शनिवार—६ रेवती नक्षत्रका योग होनेसे एक ऐसे योगको जन्म देती है जिससे गेहूँ चनाके व्यापारियोंको कातिक तक मोटा लाभ तेजीसे होगा, तथा अश्लेषा नक्षत्र पर सूर्य आनेसे भविष्यमें दिन १३ में सोना चांदी तेल मात्र गुड़ खांड चावल विनोलामें मनवांछित तेजी लाता है, आज गुड़ खांड चांदी चनेमें खुलते बाजारसे तेजी चलेगी, सरसों खल तेल शेयर मंदे होकर तेज बंद होंगे, तिथिका क्षय तेजी लाता है। ता० ३ अगस्त रविवार—योगका

क्षय मंदा लाता है, आज गुड़ खांड घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ पावेगा, सरसों खल तेल शेयर चना अरंडा तेजीकी दौड़में लाभ उठावेंगे। ता० ४ अ० सोमवार–कर्क राशि पर बुध आनेसे भविष्यमें रुई खांड गुड़ मंदा चांदी तेज हाती है, आज चांदो गुड़ चनामें अच्छी तेजी आवेगी, ता० ५ अ० मंगलवार–को चांदीमें दिलखुश मंदा रहेगा, गुड़ खांड घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा, सरसों अलसी तेल शेयर खल चना अरंडा दो बजे तक तेज होकर कुछ मंदा बंद होगा। ता० ६ अ० बुधवारी–एकादशी रोहिणी नक्षत्रके योगसे वर्षाकी खेंच होगी, आज चांदी गुड़ खुलते बाजारसे दिल-खुश तेजी लायेंगे, सरसों खल अलसी मूंगफली अरंडा तेल मात्र घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा, आर्द्रा पर शुक्र आनेसे वर्षा न होना संभव है। ता० ७ अ० गुरुवार–पुष्य नक्षत्र पर बुध आनेसे युद्धका बिगुल बजा समझ अश्लेषा ऊपर राहु धनिष्ठा १ पर केतु आनेसे निकट भविष्यमें अनाज मूंग मोठमें तेजी तथा युद्ध की गतिको बल देवेगा, सोना चांदी मंदा होगा। चंद्र शुक्रयुति चांदीमें मंदा, तेल पदार्थों में तेजी लाती है, आज चांदी गुड़ खांडमें मोटी तेजी होकर बंद समय कुछ मंदा रहेगा। सरसों अलसी तेल शेयर खल अरंडा घटे भाव लेने वाले मोटा लाभ लेंगे। ता० ८ अगस्त शुक्रवार–चित्रा नक्षत्र पर मंगल आनेसे निकट भविष्यमें सोना रुई चावलमें मोटी तेजी आती है। इस योगमें समझदार व्यापारी देखते-देखते लक्ष्मी पति बन जाते हैं, इसके लिये पूर्ण जानकारी करें। आज चांदी सरसों खल अलसी व तेल मात्र शेयरोंमें तूफानी तेजी आयेगी, मोटा लाभ उठावें। ता० ९ अ० शनिवार–चंद्र बुधयुति तेजी करती है। आज चांदीमें अच्छी मंदी आयेगी, गुड़ खांड घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा, सरसों खल तेल शेयर चना अरंडामें खुलते बाजारसे तूफानी तेजी आयेगी। १० अ० रविवारी—अमावस्याको सूर्यचंद्रयुति व राहुचन्द्रयुति दुर्भिक्षका संयोग बनाती है। यहां पर सूर्य राहुका योग मंगल शनिकी दृष्टिसे कोई भयंकर आकस्मिक घटना भी घटा सकता है। ११ अ० सोमवार आज चांदी सरसों खल गुड़ खांड अलसी तेल शेयर अरंडामें तेजी आयेगी और गुड़ खांड तेज होकर बंद समय मंदा रहेगा। सरसों अलसी तेल शेयर खल अरंडामें मनमानी तेजी आयेगी, चना मंदा रहेगा। ता० १२ मंगलवार—चंद्रदर्शन भविष्य में रुई मंदी, तेल खांड गुड़ कपास चांदी दिन ८ में मोटी तेजी लाता है। इधर चंद्र गुरु युति चांदीमें मंदा तेलोंमें तेजी लाती है। सूर्य राहु युति चांदीमें घोर मंदीकी लाइन बनाती है। २००) से ३००) आसरेकी, आज चांदी गुड़ तेज होकर दिलखुश मंदा लायेगा सरसों अलसी तेल शेयर खलमें खुलते बाजार तूफानी तेजी आयेगी। चना भी मंदा रहेगा। कपास तेज होगी, ता. १३ बुधवार–बुध पूर्वास्त होने से रुई शेयर मंदे, चांदीमें मोटी तेजी लाता है, चंद्रशनि युति तेजी करेगी, आज चांदी खांड अरंडा खुलते बाजारसे मोटी तेजी लाकर बंद समय कुछ मंदा लायेगा, अलसी तेल शेयर मंदे होकर तेज बंद होंगे। ता० १४ गुरुवार–अश्लेषा पर बुध आनेसे भविष्यमें रसकसमें तेजी आती है, आज चांदी गुड़में खुलते बाजारसे ३ बजे

तक मोटी तेजी फिर मंदा रहेगा, सरसों खल अलसी तेल शेयर चना घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा । ता० १५ शुक्रवार–आज चांदी सरसों, खल मंदी, गुड़ खांड मंदा होकर तेज बंद होगा। अलसी तेल शेयर अरंडा वधाघटीसे तेज रहेगा। ता० १६ शनिवारी–सिंह संक्रांति ३० मुहूर्ती गुरुदेवके संयोगमें होनेसे भविष्यमें रुई चांदी अरंडा गुड़ खांड तेल, लाल वस्तुमें तेजी लाती है। वर्षा घणी होय तुष धान्योंका नाश होगा, चंद्र मंगलकी युति तेजीको सपोट करेगी, आज चांदी गुड़ खांड में खुलते बाजारसे तेजी बंद तक मोटी चलती रहेगी। सरसों खल तेल शेयर अलसी अरंडा तेजीकी होडमें फस्ट आएगा। ता० १७ रविवारी छठ–अनाज कपास सन हैसियन घीमें तूफानी तेजीका संदेश लाया है । ता० १८ सोमवार–ब्रह्मयोग चन्द्र हर्षल युति एक ऐसे एटम योग नं० २७ को जन्म देती है जिससे समझदार व्यापारी तेजीका काम करके लाखों रुपया कमाकर पुण्यदानका महान यश प्राप्त करके मानवीय जीवनको सफल बनाते हैं, यहांसे फिर तेल गुड़ खांड चांदीकी घुड़दौड़में मनोवांछित लाभ उठावेंगे, आज चांदी गुड़ मंदामें खरीदो, मोटी तेजी आयेगी, सरसों खल अरंडा चना अलसी तेल मूंगफली लेने वाला मनोवांछित लाभ उठावेगा। ता० १९ मंगलवार—तुलाराशिमें मंगल आनेसे भविष्यमें रुई कपास सूत सन हैसियन घी धान्य उड़द मूंग अनाज तेज होगा, आज चांदी गुड़ खांड तेलोंके वेचनेमें भी दिलखुश तेजी आयेगी, सरसों अलसी मंदी होकर तेज बंद होंगी। ता० २० नक्षत्रकी वृद्धि देश व राष्ट्रमें सुख शांति लायेगी। खाद्य वस्तुएँ मंदा लाती है, चंद्र नैपचून युति तेजीको सपोट करेगी, आज चांदी गुड़ खांडमें ३ बजे तक अच्छी तेजी होकर बंद समय मंदा रहेगा, सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडा घटे भाव लेनेसे लाभ होगा। ता० २१ अगस्त–दशमी गुरुवारी ज्येष्ठा नक्षत्र विष्कंभ योगका संयोग प्रायः विश्वमें अकल्पित घटनाका संदेश लाता है । मघा सिंहें बुध आनेसे भविष्यमें रुई शेयर मंदे, चांदी सोना तेज होते हैं, आज चांदी गुड़ खांडमें दुतरफा तथा तेल शेयरो चना अरंडामें तूफानी तेजी आयेगी। ता० २२ शुक्रवार–पुनर्वसु पर शुक्र आनेसे भविष्यमें सोना चांदी मंदा, बिनोला तेज होता है। आज चांदीमें दिलखुश मंदी आयेगी, सरसों तेल शेयर घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा, चना तेज होकर मंदा होगा। ता० २३ शनिवारी द्वादशी–रंगमें भंग लाती है, आज चांदी गुड़ मंदा होकर तेज बंद, सरसों अलसी तेल शेयर चना अरंडामें मनइच्छित तेजी लायेगी । ता० २४ रविवारी तेरस कोई आश्चर्यकारी वातावरण बनायेगी। ता० २५ अगस्त सोमवार—श्रवण नक्षत्रका क्षय रस पदार्थोंमें अकल्पित तेजी लायेगा। आज चांदी गुड़ दुतरफा सरसों खल अलसी तेल चनामें दिलखुश तेजी आयेगी। ता० २६ अगस्त मंगलवारी पूनम चंद्र बुधयुति तेजीको सपोट करेगी, रक्षाबंधनके त्योहारका महत्व समझ अनाथ-असमर्थ दुःखी गरीबोंको स्वादिष्ट भोजनका अहार दान देकर धर्म लाभ उठावें, आज चांदी १ बजे तक तेज होकर मंदी होगी, गुड़खांडमें जोरदार तेजी आयेगी । सरसों तेल अलसी अरंडा घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा इस मासमें पहले राहु सूर्य योगसे मंदा तथा ता० १६ अगस्तसे–तूफानी तेजीको चार चांद

लग जायेंगे, प्रत्येक वस्तुको ध्यानसे देखें।

भाद्रपद मास

ता० २७ अगस्त बुधवारा मासारंभमें तिथिका क्षय होनेसे नेष्ट फलका सूचक है। योगका क्षय शुभकारक होता है, मंगलवारी अमावस्या बुधवारी पूनम व्यापारमें भयंकर तेजी तूफानी लाती है, संसार भरमें पश्चिमी देशोंमें कई मुकटधारी धराशायी हो जायं तो ताजुब नहीं होगा। उतरा फाल्गुनी ३ पर शनि आनेसे रुईमें मोटी वधाघटी चलती है, आज चांदी अरंडेमें तूफानी तेजी आयेगी, गुड़ तेज होकर मंदा बंद होगा। सरसों खल अलसी तेल शेयर घटे भाव लेने वाला लाभ उठावेगा। ता० २८ गुरुवार—पूर्वाफाल्गुनी पर बुध आनेसे अनाज में मंदा होता है, आज चांदी गुड़ खांड खरीदो मोटी तेजी आयेगी। सरसों खल तेल शेयर चना अरंडा तेज होकर मंदे रहेंगे। ता० २९ शुक्रवार—स्वाति नक्षत्र पर मंगल आनेसे भविष्यमें रुई धातु रस पदार्थ तेज होते हैं। आज चांदी गुड़में खुलते बाजारासे मंदा चलेगा। बंद समय तेज रहेगा, चांदीमें मोटी दिलखुश तेजी आयेगी, सरसों खल तेल शेयर मंदे होंगे। ता० ३० शनिवार पूर्वाफाल्गुनी पर सूर्य आनेसे सोना चांदी गेहूं सरसों चावल में तेजी लाता है। गुरुदेवका अस्त होनेसे रुई चांदी ४०)५०) तेज होती है तथा नेपचून मार्गी होनेसे भविष्यमें कुछ तेजी होकर चांदी मंदी होती है। मंदीका दिलखुश झटका लगेगा। आज चांदी गुड़ चना तेज होकर ३ बजेसे मंदा चलेगा, सरसों खल तेल शेयर मंदे होकर तेज बंद होंगे, अरंडेमें दिलखुश तेजी आयेगी। ता० ३१ अगस्त ६ रविवारी तेजीको सपोर्ट करती है, जिससे सोमवारको बाजार बढ़कर खुले तो ताज्जुब नहीं। ता० १ सितम्बर सोमवारको—कर्क राशि पर शुक्र आनेसे भविष्यमें रुई चांदी मंदी शेयर तेज, अलसी अरंडा तेल गुड़ खांड में भयंकर तूफानी तेजी लाता है। आज चांदी गुड़में दिलखुश तेजी होती है, सरसों तेल शेयर मंदीमें कमाल दिखायेंगे, अरंडा तेज होगा। ता० २ सितम्बर मगलवार योगका क्षय होना बुध गुरुकी युति जन्माष्टमी रोहिणी नक्षत्रके दिन श्रीकृष्णनारायण जैसे महान् पुण्यशालीका जन्म होना देशमें अधर्मी फासिष्टोंका पतन का कारण बनेगा। खाद्य वस्तुओंमें सुभिक्ष होगा। गुड़ चने अनाजमें मंदा तैलादि पदार्थों में भयंकर तेजी होगी। यहां कोई आश्चर्यकारक घटना भी घटेगी। शांति विधानादि कार्य करें और धर्मलाभ उठावें, ता० ३ बुधवार—आज चांदी गुड़ अरंडामें तूफानी तेजी आयेगी, सरसों खल शेयर घटे भाव लेने वाला लाभ उठावेगा। ता० ४ गुरुवार—पुष्य पर शुक्र आनेसे रुई सूत सन बोरी चावल तेज होते हैं, उत्तराफाल्गुनी पर बुध आनेसे रुई चांदी मंदी, उड़द मूंग मोठ तेज होती है। आज चांदी गुड़में मदी, चनेमें मोटी तेजी, सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडा दुतरफा चलेगा। ता० ५ शुक्रवार—शनि पश्चिममें अस्त होने से रुई शेयर सोना मंदा, अनाज तेज होता है, विघ्नोंमें शांति होगी, चन्द्र-शुक्रयुति चांदीमें मंदी, तेलोंमें तेजी लाती है, आज चांदी गुड़ तेज होकर मंदा बंद होगा, सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडामें दिलखुश तेजी आयेगी, चना मंदा होगा, ता० ६ शनिवार—कन्या पर बुध आनेसे भविष्यमें रुई चांदी गेहूँ मंदा

होता है, बुध शनिका अस्तका योग मार्च जसी परिस्थिति बनायेगा, तेल पदार्थोंमें तेजी निश्चित आयेगी। ता० ७ रविवार—चंद्रराहु युति तेजी लायेगी, ता० ८ सोमवार—आज चांदी गुड़ खांड मंदा होकर तेज रहेगा, सरसों खल अलसी तेल अरंडा तेजीकी अकड़में रहेंगे, ता० ९ मंगलवारी अमावस—सूर्य चंद्र व चद्र गुरुयुति मिले-जुले काम करेगो, चांदी सरसों खल मंदी होकर तेज बंद होगी, गुड़ खांड तेल चना अरंडामें भी तेजी आयेगी, यहांसे आगे कर्क राशिसे मकर राशि तक अधिक ग्रहोंका संयोग संसारमें कहीं भी बड़ा गजब ढायेगा, भगवान् भजन ही सार होगा। ता० १० सितम्बर बुधवारा—शुक्ल-पक्षारम्भ व्यापारियोंको मोटे लाभका शुभ संदेश लाया है। चंद्रबुध, चंद्र शनिकी युति तेजीको सपोर्ट करेगी, बुधका पश्चिमोदय होने से भविष्यमें रुई शेयर मंदे, चांदी घी तेल अनाज ४ मासमें तेज होगा। आज चांदी सरसों खल गुड़ खांड पहले मंदे होनेसे खरीदो मोटी तेजीमें लाभ होगा, चने अरंडेमें भी तेजी आयेगी। ता० ११ सितम्बर चन्द्रदर्शन गुरु-वारा—होना भविष्यमें रुई चांदी तेल तेज करता है, आज चांदी गुड़में मोटी तेजी रहेगी, सरसों खल अलसी तेल शेयरमें पहले तेजी होकर मंदेकी मोटी डुबकी लगा जावेंगे। ता० १२ शुक्रवार—उतराफाल्गुनी पर सूर्य आनेसे दिन १३ में रुई सोना चांदी घी तेलादि चावल दालादिमें तेजी लायेगा, आज सभी बाजारोंमें दुतर्फा मोटी चाल मंदी होकर तेजी रहेगी। ता० १३ शनिवार—चंद्र मंगल युति तेजीको सपोट करेगी, आज चांदी सरसों तेल शेयर अलसी में तेजी आयेगी। ता० १४ रविवार—स्वाति नक्षत्रके योगसे चांदीमें मोटी तेजी आती है तथा ऐंद्र योगका बढ़ना महान् नेष्ट कामोंका सूचक है। चंद्र हर्षल युति तेजीको बल देवेगी (यहां हाड़फोड़ खसराबाली कहावत बनेगी सावधान) ता० १५ सोमवार—आज चांदी चना सरसों खल गुड़ खांडमें तेजी आयेगी। तेल पदार्थ मंदे होंगे, ता० १६ मंगल-बारको—कन्या संक्रांति ३० मुहूर्ती होनेसे रोगोपद्रव, वर्षाकी कमी अनाज महंगा, तथा शनि राशिमें सूर्यका संयोग महान् अकल्पित अनिष्ट घटनाओंका द्योतक है, तथा राहुशुक्र, मंगल हर्षल व नैपचूनके दृष्टियोगोंके संयोगसे मंत्रिमंडलोंमें भयंकर उपद्रव, तालाबंदी, और मिलकारखानोंमें हड़तालादि उपद्रव बढ़ने संभव है, आज चांदी गुड़ खांड घटे भाव लेने वाला मोटा लाभ उठावेगा, सरसों खल अरंडामें तूफानी तेजी आयेगी, चना तेज होकर बंद समय कुछ मंदा रहेगा। ता० १७ बुधवार—चंद्र-नैपचून युति तेजी लाती है, अश्लेषा पर शुक्र आनेसे भविष्यमें बिनोला गेहूं चावल गुड़ खांड तेल सोना चांदी दालादि तेज होते हैं, आज गुड़ खांड मंदा होकर तेज, फिर मंदा बंद होगा, सरसों खल अलसी तेल शेयर तेज होकर बंद समय कुछ मंदे रहेंगे। ता० १८ गुरुवार विशाखा पर मंगल आनेसे भविष्यमें रुई कपास गेहूं तेज होते हैं, आज चांदी गुड़ खांडमें तूफानी तेजी आयेगी, खल अरंडा घटे भाव खरीदो, १२ बजेसे मोटी तेजी चलेगी, चना मंदा होकर तेज बंद होगा। ता० १९ शुक्रवार आज चांदी गुड़ खांडमें अच्छी तेजी आकर बंद समय मंदा रहेगा, सरसों खल अलसी तेल शेयर अरंडा घटे भाव लेने वाला १२ बजेसे मोटी तेजीमें मनचाहा लाभ उठावेगा, चना

तेज होकर मंदा बंद होगा । ता० २० शनिवार—योगका क्षय मंदा लाता है चांदी अनाज में। चित्रा नक्षत्र पर बुध आनेसे भविष्यमें रुईमें मोटी तेजी ३०)४०) की आयेगी। आज चांदी गुड़ मंदा होकर तेज बंद होगा, सरसों खल अलसी तेल शेयर चना अरंडामें मोटी तेजी आयेगी। ता० २१ रविवारी एकादशी का क्षय होना तेल गुड़ खांड पदार्थोंमें तेजी लाता है। ता० २२ सोमवारको—सूर्य शनि का युद्ध (युति) भयंकर खलबली मचायेगी, कई उलझी समस्याओंका समाधान होगा, आज चांदी गुड़ मंदीकी दौड़में रहेंगे, अलसी खल चनेमें मौटी तेजी आयेगी। ता० २३ मंगलवार—उतराफाल्गुनी ४ पर शनि आनेसे रुईमें मोटी तेजी ५०)६०) की आयेगी, चांदी गुड़ खांड मंदा होकर तेज होंगे, खल शेयर तेल तेज होंगे। ता० २४ बुधवारी पूनम गज नक्षत्र के योगमें तेजी होना संभव है, आज चांदी गुड़ मंदा होवर तेज, सरसों खल अलसी तेलों में तेजी, राजाओंमें अकल्पित वातावरण बनेंगे, लग्नमें सूर्य बुध शनि व शुक्र राहु मंगल हर्षल का योग रस तेल पदार्थोंमें गजब ढायेगा, किराना वस्तु मात्रमें भयंकर तेजी आसमान छूवेगी, व्यापारीवर्ग समयको देखकर पूरा लाभ उठावें, इस मासमें दो तिथियोंका टूटना मंगलवारी अमावस्या ता० १४ सितम्बरको योगका बढ़ना मंगलवारी कन्या संक्रान्तिमें शनिका संयोग, ता० २२ सितम्बरको सूर्य राहुका युद्ध जितना भी अनिष्ट हो जाय तो थोड़ा है, यहां भगवान्का भजन शांति विधानादि होनेसे संसारमें शांति हो सकती है, आगे बीर प्रभु सब भली करेंगे।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

[लेखक :—श्री प्रेमचन्द जैन, पोरसा वाले]

लेख 'ज्योतिष्मती' में प्रकाशित करनेका उद्देश्य सिर्फ ग्रहोंका प्रभाव बाजारों पर प्रत्यक्ष देखा जा सके। उसका अत्यन्त संक्षेपमें विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं। लाभ हानिमें जिम्मेदारी नहीं होगी।

यों तो बड़े ग्रह शनि-गुरु, बुध ग्रह (छोटा) प्रत्येक वर्ष वक्री व फास्ट गतिसे चलते हैं। परन्तु १९७९ से सन् १९८२ तक एक विशेष पोजिशन बनी है। जिसमें बड़े ग्रह शनि गुरु एक साथ वक्री होना – जनवरीसे मार्च, एक साथ तेज गतिसे चलना (अगस्त सितम्बरके महीनोंमें) एक खास महत्व रखते हैं। उन दिनोंमें तिलहन चांदी-सोना-गुड़ शेयर्स मार्केटों में इकतरफा १५-२५ दिनकी तेजी या मंदी चलती हैं। एक और प्रत्यक्ष उदाहरण शुक्र वक्री होने पर (अगस्त १९७५-मार्च १९७७-नवम्बर १९७८ मई १९८० में होने पर) साग-सब्जी उत्तम पैदावार लेकर भयंकर मंदी इन बाजारोंमें आई। इससे पूर्वमें वर्षाका अभाव रहा है। परन्तु इसका प्रभाव निरन्तर ऐसा मानना आने वाले वर्षोंमें तो नितान्त गलत सिद्ध होगा। इसका मतलब यह नहीं होगा, ग्रहोंके प्रभावमें कमी या विपरीत फल देने लगे हैं—वास्तविकता यह है कि ग्रहोंकी स्थिति (Position) में ५-८ वर्षमें धीरे-धीरे भिन्नता आ जाती है। और कुछ नहीं है।

अगस्त सितम्बर १९८० में 'गुरु, शनि' अत्यन्त फास्ट, मंगलकी गति भी तेजी गतिकी ओर—सूर्यसे शुक्र ४६ अंश पर श्रावण पूर्णिमा २६ अ० को सूर्य बुध युति बाजारोंमें इकतरफा तेजी किसीमें इकतरफा मंदी देगा जिसका प्रभाव ७-८ दिन पूर्व व १०-१२ दिन बाद तक पड़ेगा। किसी पर प्रभाव २७ अगस्तके बजाय २९ अगस्तसे शुरु होगा। अतः बाजार की चाल देखकर व्यापार करें। हमारी जिम्मेदारी नहीं होगी।

अगस्त १९८०

२० जुलाईसे १० अगस्त तक चांदीमें भयंकर मंदीकी धारणा है। मंदी यदि आई है खरीद करें। ३० अगस्त तेजी अच्छी आवेगी। प्रभाव १५ अगस्तसे नजर आवेगा। लौंगमें मंदी चलनेकी उम्मीद है।

सितम्बर १९८०

१ सितम्बर १९८० से ७ सितम्बर तक सरसों तिलहनमें अच्छी तेजी तो ११-१२ सितम्बरसे १९८० सितम्बर मंदी आवेगी, वही भावकी उम्मीद है जो २६-२७ जुलाईको थे। चांदीमें १ से ७ ता० तक मंदी बादमें तेजी आवेगी, १९ सितम्बर तक। सरसोंमें तेजी। १० सितम्बरको भाव थे वही ३० सितम्बर तक बन जावेंगे। बाजारकी लाइन देखकर व्यापार करें। जवाबी पत्र आने पर जवाबमें तेजी मंदीका संकेत दिया जावेगा।

अक्टूबर १९८०

६ अक्तूबर १९८० से चांदी, सरसों अलसी, तूअर मसूरमें भयंकर तेजीका तूफान शुरु हो सकता है। लौंगमें बड़ी मंदी आ सकती

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

श्रावण भाद्रपद आश्विन सं० २०३७ वि०

[लेखक :—श्री पं० ओंकारप्रसाद ज्योतिषी हापुड़ उ०प्र०]

श्रावणसे आश्विन सं० २०३७ का यह भविष्य यद्यपि सामूहिक है तो भी मीठे पर हम विशेष आकर्षित करते हैं । श्रावण से आश्विनमें तीनों संक्रांति ३० मुहूर्ती हैं और यह भविष्य अंग्रेजी हिसाबसे ता० २८ जुलाई से प्रारंभ होकर ता० २३ अक्तूबर १९८० को समाप्त होगा । इस काल चक्रमें हर्षल ता० ३० जुलाईको ३-२६ पर मार्गी होगा । इस टाइम में बढ़ी हुई कीमतों पर सरकारी अंकुश लगे या अन्य कारण बननेसे भारी मंदीका योग बनेगा । इसलिये हम यह भविष्यवाणी करते हैं कि हर्षल मार्गी साथ ही श्रावण कृष्ण पक्षमें तिथि टूटना मंदीको प्रोत्साहन देगी बड़े स्टाकिस्ट घबड़ा जायेंगे, कुछ वस्तुओंमें रुपयेकी धेली रह जाये तो भी ताज्जुब नहीं, श्रावण शुदीमें स्वतंत्रता दिवस पर तिथि बढ़ना भी सुकालका योग बनाता है । केवल पूर्णिमा भौमवारी उदयमें ४ पांच घड़ी होनेसे तेजीको आगे बल मिलेगा ।

ता० २८ जुलाई १९८० से लेकर ता० २६ अगस्त इन्फीरियर लाइन चलेगी । यह लाइन भावोंको बढ़ानेसे रोकेगी, इसी लाइनमें तारीख १३ अगस्तकी रात्रिमें बुधास्त भारी मंदी करेगा । यहां वायदे सट्टोंमें मंदी ता० १४ को लगाना । अगर १४ को न फले तो १४ को १६ को लगाना, यह इस लाइनका एटमबम जैसा चांस सम्पन्न होगा । जूट पाट बोरी बारदानामें भी यहां भारी मन्दी आयेगी । पर डी. सी. एम. में दुतर्फी लगाना लाभप्रद होगा । श्रावणकी मंदी १ माहमें ही लाभ देगी, अतः जिस वस्तुमें घोर मंदी दीखे उसीको खरीदो, चूको नहीं, भारी तेजीका ऐलान भाद्रपदमें है । घनघोर वर्षा भी अग्निका काम करेगी क्योंकि भाद्रपदमें भादोंका महीना ता० २७ अगस्तसे आरम्भ होकर ता० २४ सितम्बर तक चलेगा । ता० ३० अगस्तको इस माहमें ३ बजेसे ५२ घण्टेमें ५६ या ६८ या सवाई मन्दी रुई चांदी सेंचुरी बिनौला चना सरसोंमें १० तेजी तो १४ मन्दी डाले ।

ता० २ सितम्बरको ११॥ बजे ५० मन्दी तो ५० ही तेजी । गुड़, चांदी, तेल, रुई जूट पाट हैशियन चनामें जरूर डालें, ४ या ५४ घण्टेमें लाभ होगा । ता० ६ सितम्बरको ८ की दुतरफा गली डालें ।

ता० ११ सितम्बर १० बजकर ५३ मिनट तक मन्दी । अगर इसी दिनसे पूर्व चली तो जूट पाट बिनौलामें भारी तेजी आयेगी । वर्ना मार्केट मन्दा होगा, अन्य चान्दी सोनामें

है । वैसे यह तूफान १७ अक्टूबर तिलहनमें अच्छी उम्मीदका है । आगे यह तेजी चली तो ११ नवम्बर १९८० तक चलकर आगे मंदी आवेगी । बड़ी तेजी सरसों अलसीमें १. नवम्बरसे १२ नवम्बर तक चल सकती है । मूंगफलीमें नवम्बरमें मंदीका प्रभाव रहेगा ।

तेजी तो तेल चना अरण्डामें दुतर्फा गली डालें।

ता० १७ को ३ बजकर १५ मि० से २४ घण्टेमें ७८ पैसा तेजी, चना, सरसों, चान्दी, जूट शेयरमें दुतर्फा गली डालें। ता० २४ सि० तक जिस वस्तुमें तेजी आई दीखे उसी वस्तुमें २५ को २६ की मन्दी डालना न भूलना, चान्दी में मन्दी डालें, हैसियन चना में मन्दा लगाना।

गुड़ भादों तैयारीमें तेजीका रुख रहेगा। साथ ही रस पदार्थोंके वायदे ता० २७ अगस्त से २६ अगस्तमें घटाबढ़ी, २६ अगस्तसे ३१ अगस्त तेजी, अगर तेजीके भाव क्रौस हुए तो जोरदार तेजी आयेगी। और भाव क्रोस न हुए तो जोरदार मन्दी आयेगी। आगे तेजी की लाईन गुड़में नहीं चलेगी। लाईनका अनुसरण बदी सप्तमीसे करें, भाव क्रौस नीचेके हों तो भयंकर मन्दीका पैगाम जानना, वर्ना जोरदार तेजी अगले माहमें चली जायेगी। हमारा ध्यान इस लाइनमें १५ दिन मन्दीका है।

इसके बाद आश्विनका माह आरम्भ होगा और आरम्भ होते ही वृहस्पतिका उदय होनेसे जोरदार तेजी जो इस वर्षकी हल्दी गुड़में आखीरी तेजी मानी जायगी और गुड़में यह महीना सर्वोच्च भाव देगा, अतः ऊंचे भावोंको देखकर और अधिक ऊँचेमें नहीं आना, बल्कि ऊँचे भावोंमें बेचनेका काम करना क्योंकि तेजी थम जायेगी और तूफानी मन्दी आगे आयेगी। ता० २९ सितम्बर से ३१ सितम्बर तक मामूली घटाबढ़ी रहेगी।

ता० १ अक्टूबरसे पूर्व मार्केट मन्दा रहा तो २ से तेजी, अगर पहले ही तेजी आ ले तो मन्दी ता० १४ अक्तूबर तक आयेगी। बाद एकदम मार्केट जोरदार मन्दीमें तेजी आयेगी।

साधारणतया यह माह ता० २५ सितम्बर को आरम्भ होकर ता० २३ अक्तूबरको समाप्त होगा खास-खास चांस इस माहके स्पेशल लिख रहे हैं। ता० २६ सितम्बरको ११ बजकर ५४ मिनट तक जिस वस्तुमें मन्दी आये खरीदो २४ घण्टोंमें ही लाभ उठाना।

ता० २९ सितम्बरको ११ बजकर ५५ मिनटसे ३ घण्टेमें या २६ घण्टेमें सोना २ रुपये चांदी ७८)७० से ११४)८० पैसा तेल ७८ से ६५ विनौला ७९ से १)७८ पैसा चना ८७ पैसे से ८९ पैसा तेज। ता० ३ अक्तूबर ११ बजेसे जूट पाट बारदाना शेयरमें २ घण्टे में तेजी। ता० २७ अक्तूबरको १२-२६ से ३ बजकर ३९ मिनट तत चांदी २९) से ५६) पीतल २) कांशा ५) सोना ४)५० पैसे शेयर मोटर ४८ से ८५ पैसे मन्दा। तेल १२४) पैसे विनौला जूट पाटमें १)३० पैसे, २)३२ तक लाइन दुतर्फा गली डालें।

ता० २० अक्तूबर को २। बजे दूसरे दिनके लिए नजराने लगाना। हर वस्तुमें लाभ होगा ऐसा ज्योतिष शास्त्रसे निश्चित हैं। हमारा यह तमाम ऊपरका लेख गुड़ चीनी खांडसारी आदि पर आधारित है। यद्यपि हमने दूसरी वस्तुओंका भी चांसमें वर्णन किया है, अतः स्पेशल रूपसे यह हमारी भविष्यवाणी है कि इस माहकी तेजीको देखकर चीनी, गुड़ में और तेजी आयेगी यह मत मान लेना बल्कि ऐसे अवसर पर माल फरोक्त करें स्टाकको निकालें, अगर कहीं भी भारतके अन्दर अगाऊ सौदोंका मार्केट चल रहा हो तो अगली मिति के सौदोंको बेचें क्योंकि जोरदार मन्दी आने वाली है—जिसका विवरण हम आगामी लेख में इसी ज्योतिष्मतीमें छापेंगे।

श्रीशंकर व्यापार-भविष्य

ता० २७ जुलाईसे २३ अक्टूबर १९८० ई० तक

[लेखक :—पं० श्री शिवचरणलाल शर्मा रमलाचार्य, मोहन नगर जलेसर रोड, फिरोज़ाबाद जिला आगरा (उ० प्र०)

श्रवाण भाद्रपद आश्विन मास

श्रावण मासमें अराजकता अतिवृष्टि किसी उच्च कोटिके नेताकी दुर्घटना पूर्ण मृत्यु या भूकम्प तूफान आदि उत्पातों द्वारा जनता त्रस्त होगी। ता० ३० जुलाई को हर्षल मार्गी हो गया है।

चांदी पुराना सिक्का अन्य धातु पदार्थ—ता० २७ जुलाईसे १३ अगस्त तक चांदी व्यापार वायदा एवं हाजिर मारकेट उछल-उछल कर टूटता जायेगा। ता० १३ अगस्तसे आई मन्दी खरीदो, २६ अगस्त तक जनरल रुख घटबढ़से तेजीका रहेगा।

तिलहन तेलबीयां—ता० २७ जुलाईको आई मन्दी खरीदो, १९ अगस्त तक अलसी अरण्डा सरसों तिल्ली बिनौला (सरकी) खली तेल मूंगफली आदिमें जनरल रुख तेजीका रहेगा। २० अगस्तसे २६ अगस्त तक घटबढ़ से मन्दी बनेगी। मंगल शनिका योग १९ अगस्त तक कन्या राशि पर तेजीका सूचक है।

गुड़ खांड चीनी—रिपोर्ट लिखते समय चीनी धामपुर, सिहोरा, मवाना, किच्छा, काशीपुर आदि मण्डियोंमें भाव ६५०) ६६०) रु० चल रहे हैं। ता० २६ अगस्त तक चीनी नीचेमें ६००) ६२०) रु० ऊँचेमें ६७०) ७००) रु० भाव बन सकते हैं। श्रावणका पूरा महीना गुड़ खांड चीनी रस कसादिमें अच्छी तेजीका सूचक है। मन्दी सूक्ष्म तेजी अधिक बनेगी। गुड़ चाकू खुरपापाड़ लड्डू एवं सूखा कोठ गुड़ भाव १२५) १३०) चल रहा है महीनेके अन्त तक गुड़ १५०) १७०) रु० बन सकता है। उपरोक्त भावोंसे नीचे भावोंकी आशा नहीं करनी चाहिये।

रुई कपास—प्रत्येक किस्मकी रुईमें रुख तेजीका रहेगा।

पाट जूट बारदाना—कलकत्ता वायदा बारदाना भाव ५००) ५०५) रु० चल रहा है। ता० २६ अगस्त तक बारदाना नीचेमें ४३०) ४३५) रु० ऊँचेमें ५००) ५०५ रु० बन सकता है। पाट-जूट बारदानामें तेजी सूक्ष्म मन्दी अधिक बनेगी। ता० १० अगस्तसे जब भी तेजी बने बेचो २६ अगस्त तक घटबढ़से मन्दी प्रधान रहेगी।

किराणा—ता० २७ जुलाई तक हल्दी धनियां जीरा लालमिर्च अजवाइन मैथी कालीमिर्च पोस्तादाना सौंफ सांभर-नमक लाख चपड़ा अमचूर इमलीका स्टाक करलो, श्रावण मासका पूरा महीना तेजीका सूचक है।

धान्यादि दालवाना—शनिका योग कन्या राशि पर चल रहाहै यह योग सर्वत्र अनावृष्टि का सूचक है, अतिवृष्टि होगी। ता० १५

अगस्त तक प्रत्येक धान्यादि दालवानामें आई मन्दी स्टाक कर लो, मन्दी स्थायी नहीं है, पुनः एक बार गेहूँ चना चावल जौमें १५)२५) रु० अरहर मटर मसूर उर्द मूंगमें २०)३०) ४०) रु० तककी तेजी बनेगी। बाजरा जुआरी मक्कामें बाजार समान या मन्दा रहेगा।

तम्बाकू—ता० २७ जुलाई तक तम्बाकू खरीदो श्रावण महीना अच्छी तेजीका सूचक है। इस वर्ष तम्बाकूमें व्यापारी वर्गको अच्छा मुनाफा प्राप्त होगा।

खुश्क मेवा—काजू किसमिस बादाम खुश्क गोला छुआरा अखरोट पर पूरा श्रावण मास तूफानी मन्दीका सूचक है। महीनेके प्रारम्भमें स्टाक निकाल दो।

व्यापार वायदा दैनिक लाइन फलित वस्तु मात्र मन्दी तेजी—ता० ३० जुलाई प्रातः ८। बजे मंगल शनि पैरल योग खुलते बाजरसे चांदी सोना गुड़ खांड चीनी अलसी अरण्डा तेल मूंगफली सरसों खली बिनौला और मिल-शेयर्स रेशमी सूती धागा व्यापार वायदा वस्तु खरीदो घटबढ़ चलते हुये बन्द तक रुख तेजी का रहेगा—३१ के तेज लगादो। ता० १४ अगस्त सूर्य हर्षल केन्द्रयोग ११॥ बजे आज चांदी सोना मारकेट बढ़ कर खुलेगा, खुलते बाजारसे चांदी सोना रुई कपास पाट जूट बारदाना तिलहन तेलबीयां मिल शेयर्स व्यापार वायदा वस्तुमें आई तेजी बेचान करते रहो मारकेट मन्दीमें बन्द होगा।

ता० १९ अगस्त—आज गुड़ खण्डसारी चीनी तिलहन तेलबीयांमें पिछली लाइन परिवर्तन होगी, सर्वत्र बादल वर्षा व तूफानका योग सम्पन्न होगा। रुई चांदी सोना पाट जूट बारदाना तिलहन तेलबीयां रेशमी सूती धागा मिलशेयर्सका मारकेट बढ़कर खुलेगा या प्रातः से खरीदो बन्द तक अच्छी तेजी बनेगी चांदीमें ८ दिनकी तेजी लगा दो।

ता० २० अगस्त रुई चांदी मिलशेयर्स बारदानाका मारकेट बढ़कर खुलेगा, प्रातःसे बन्द तक घटबढ़से तेजी बनेगी।

दिल्ली नगर राजस्थान भाग्यांक अगस्त मास—ता० ५ अगस्त २४।९२।६०। ता० ६ अगस्त ७३।४५।१०६। ता० ९ अगस्त १२। ३३।७७। ता० १३ अगस्त २६।६०।१०४। ता० १९ अगस्त ३१।९७।२२। ता० २३ अगस्त ३२।९१।३९। ता० २४ अगस्त ३१।९५।१७। ता० २५ अगस्त ६८।८०।६५। ता० २६ अगस्त ७५।९६।९८।

बम्बई वरली एवं कलकत्ता भूतनाथ एवं न्यूयार्क काटन फिगर—ता० ४ अगस्त ६।९ ५ अगस्त ३।७ क्लोज। ता० ६ अगस्त १।३ ओपिन ३।६ क्लोज। ता० ७ अगस्त २।४ ओपिन ३।१० क्लोज। ता० ८ अगस्त ६।४ ओपिन ७।२ क्लोज। ता० ११ अगस्त २।४ ओपिन ५।१ क्लोज। ता० १२ अगस्त ४।८ ओपिन ३।५ क्लोज। ता० १४ अगस्त १०।२ ओपिन १।७ क्लोज। ता० २१ अगस्त २।३ ओपिन ३।६ क्लोज। ता० २२ अगस्त ४।९ ओ० ५।३ क्लोज। ता० २५ अगस्त ४।१ ओ० १।२ क्लोज। ता० २६ अगस्त १०।३१ ओ० १।४ क्लोज।

भाद्रपद मास (ता० २७ अगस्त से २४ सितम्बर १९८० तक) ता० ३० अगस्तको

गुरु सिंह राशि पर अस्त हुये हैं यह रुई कपास चांदी सोना समस्त धातु पदार्थ एवं तिलहन तेलवीयां गुड़ खांड चीनी मिल शेयर्स रेशमी सूती नाइलोन धागा आदि वस्तु पर अस्तकाल तक मन्दीके सूचक है । ता० ९ सितम्बरको शनि अस्त हुआ है जो कि तिलहन तेलवीयां की पिछली बनी चालू लाइनमें ब्रेक लगा देगा। ता० ९ सितम्बर तक अलसी अरण्डा तेल मूंगफली बिनौला तिल्ली खली सरसों आदिमें मन्दी आई है, तो भविष्यमें अच्छी तेजी बनेगी, तेज वस्तुएं मन्दी बनेगी।

हाजिर व्यापार धान्यादि दालवाना— ता० ३० अगस्तसे ९ सितम्बर तक जब भी मन्दी बने खरीदो, २४ सितम्बर तक घटबढ़ से जनरल रुख तेजीका रहेगा। अतिवृष्टि हो सकती है।

तिलहन तेलवीयां—ता० ९ सितम्बरको खरीदो यहांसे अलसी अरण्डामें २५) ३०) रु० तेल मूंगफली सरकी (बिनौला) पाम श्रौइल रैपशीडस सरसों खली गोला ८) १० रु० की लाइन १० कि० पर चलेगी। महुआ करन्जी नीम धान छिलका आदि पर ५०) ७०) १००) रु० की लाइन महीनेके अन्त तक चलेगी। ता० १० सितम्बरसे जिधर भी लाइन चले उधर ही व्यापार बढ़ाओ, शनि अस्त तेजीका सूचक है, किन्तु साथमें गुरुका अस्त मन्दीकारक है। मार्केट भावोंमें काफी रस्सा कसी चलेगी। अतः हाजिर व वायदाके व्यापारी मित्रोंको परामर्श है कि अगर साधारण भी लाइन खिलाफ चले तुरन्त सौदा काटकर हमारा परामर्श प्राप्त करें यह चांस अच्छी कमाईका है।

किराणा—महीनेके प्रारम्भसे हल्दी धनियां जीरा लालमिर्च सौंफ सौंठ सांभर नमक अजवाइन मैथी पारा कस्तूरी हींग ईसबगोल लाख चपड़ा गोला पोस्ता दाना कालीमिर्च लवंग इलायची आदिक स्टाक करलो महीनेके अन्त तक उपरोक्त वस्तु मात्रमें तेजी बनेगी।

चाय पत्ती—२७ अगस्तसे ९ सितम्बर तक मन्दी, ९ सितम्बरसे स्टाक करलो चाय पत्तीमें अच्छी तेजी २४ सितम्बर तक बनेगी।

तम्बाकू- पूरा भाद्रपद मास तेजीका सूचक है मिडियम क्वालिटी पर अच्छी तेजी बनेगी।

गुड़ खांड चीनी रस कसादि—ता० ३० अगस्तको वस्तु मात्रमें मन्दीकी सूचक है। गुड़ खांड चीनीके व्यापारी आई तेजी शनैः शनैः स्टाक निकाल दें, जो ऊँचे भाव सितम्बरके प्रारम्भ तक बन चुके हैं वह ऊँचे भाव अब क्रौसिंग नहीं होना चाहिये। भविष्यमें गुड़में एक रु० के ६०।७० पैसे खण्डसारी व चीनीमें एक रु० के ७०।८० पै० भाव बन जाना सम्भव है। कम अधिक भी लाइन चल सकती है।

रुई कपास—ता० ३१ अगस्तसे बेचान कर दो २४ सितम्बर तक घट-बढ़से मन्दी प्रधान रहेगी।

मिल शेयर्स—ता० ३ सितम्बरसे खरीदो १६ सितम्बर तक घटबढ़से तेजी बनेगी। ता० ३।४।१२।१३।१४।१५ सितम्बरमें अच्छी तेजी बनेगी। १५ सितम्बरसे २२ तक मन्दी, २२ से खरीदो २४ सितम्बर तक तेजी बनेगी।

चांदी पुराना सिक्का आदि धातु पदार्थ—

ता० २७ अगस्तको चांदी सोना खरीदो, ३१ अगस्त तक तूफानी तेजी, १ सितम्बर तक तेजीसे निकल जाओ, २४ सितम्बर तक मारकेट उछल-उछल कर टूटता जायेगा। चांदीमें ३००) ४००) रु० सोनेमें ३०) ४०) रु० की मन्दी बन सकती है। तेजी सूक्ष्म मन्दी अधिक बनेगी।

पाट जूट बारदाना—ता० १ सि० तक बारदानामें तेजी बनेगी, १ सितम्बरसे ६ तक मन्दी, ६ सितम्बरको खरीदो अथवा ८ दिनके तेज लगादो १७ सितम्बर तक तेजी बनेगी।

बम्बई कलकत्ता एवं न्यूयार्क काटन फिगर ओपिन क्लोज—ता० १ सितम्बरको २ ओपिन या क्लोज। ता० ५ सितम्बर को २ या समान ओपिन। ता० ८ सितम्बर २ या ५ या समान क्लोज। ता० ११ या १२ सितम्बर में ४४ या ५५ या ३३ या ३७। ता० १५ सितम्बर २ या समान ओपिन। ता० १८ सितम्बर ३५ जोड़ भाव। ता० २२ सितम्बर डबल या जो ओपिन वही क्लोज।

दिल्ली नगर राजस्थान भाग्यांक मन्दी तेजी धारणा—ता० १ सितम्बर ६८।१०।७६। ता० ५ सितम्बर २२।१५।६३। ता० ६ सितम्बर ४५।६४।२७। ता० १२ सितम्बर २६।६०।६१। ता० १४।१५।१६ सितम्बर, ४६।८०।७२। ता० १८ सितम्बर १०।६६।८६। ता० २० सितम्बर ७२।४७।६६। ता० २२ सितम्बर ३६।५६।१५। ता० २३ सितम्बर १६।७६।१००। ता० २४ सितम्बर ६१।८८।६६।

दैनिक लाइन चांस फलित वस्तु मात्र व्यापार वायदा तेजी मन्दी—ता० १ सितम्बर आज गुड़ खांड चीनी रुई कपास मिल शेयर्स तिलहन तेलवीयां चांदी सोना खरीदो, २।३।४ सितम्बर तक जनरल रुख तेजीका रहेगा। ता० ६ सितम्बर आज प्रत्येक तिलहन तेलबीयां खरीदो अथवा ८ दिनके तेज लगादो, यहांसे प्रत्येक धान्यादि दालवाना मिलशेयर्स पाट जूट वारदानामें अच्छी तेजी बनेगी। ता० १३ सितम्बर आज प्रातःसे रुई कपास प्रत्येक मिल-शेयर्स रेशमी सूती धागा चांदी सोना तिलहन तेलवीयां पाट जूट वारदाना खरीदो प्रातःसे रात्री तक तूफानी तेजी बनेगी। १४।१५ सितम्बर जनरल रुख तेजीका रहेगा। ता० २२ सितम्बर अलसी अरण्डा तेल मूंगफली सरसों खली विनौला करड़ी तिल्ली गोला पाम आयल रैपशीडश अन्य तेलोंको खरीदो, अथवा ८ दिनके तेज लगादो माल कमा लोगे। २३।२४ सितम्बरमें तेजी फलित होंगी। यह तेजी आगे भी चलेगी। ता० १४ सितम्बर आज गुरुका उदय हो गया है यहांसे लाइन वस्तु मात्र (गुरु अधीनस्थ वस्तु) की पलटेगी। चांदीमें ३००) ३५०) रु० सोनामें ६०)७०) रु० व व्यापार वायदा हाजिरकी वस्तु मात्रमें तूफानी तेजीका संचार होगा। व्यापारी सप्ताहके नजराने जोटा तेजीके लगादें। कुछ योग मन्दीके भी चल रहे हैं तेजीके साथ-साथ मन्दे भी लगा दें।

आश्विन मास भविष्य—ता० २५ सि० से २३ अक्टूबर १९८० ई० तक आश्विन मास ग्रह योगायोग समीक्षा द्वारा मन्दी तेजी।

ता० २५ सितम्बर गुरुका उदय ता० २६ सि० को गुरुने कन्या राशिके उत्तरा फाल्गुणी नक्षत्र पर प्रवेश किया है उपरोक्त दोनों योग रुई कपास चांदी सोना प्रत्येक तिलहन तेलवीयां

मिल शेयर्स रेशमी सूती धागा धान्यादि दाल-दाना पाट जूट बारदाना गुड़ खांड चीनी हल्दी लालमिर्च कालीमिर्च मैथी अजवाइन ईसबगोल दालचीनी जीरा नमक आदि वस्तु में यहांसे तेजीका संचार होगा। आश्विनके अन्त तक रुख तेजीका रहेगा।

ता० ६ अक्टूबरको राहुने अश्लेषा नक्षत्र पर केतुने श्रवण नक्षत्र पर प्रवेश किया है जो कि मघा नक्षत्रसे वेध करेगा। ता० १० अक्तू० को शनिका उदय हुआ है उपरोक्त दोनों योग तेलों पर तूफानी तेजीके सूचक हैं यह ध्यान रखो कि ६ अक्टूबर तक जिस-जिस वस्तुमें तेजी आई है उन वस्तुओं पर यहांसे मन्दी बनेगी मन्दी वस्तु पर तेजी बनेगी।

ता० २३ अक्टूबरको प्रातः बुध वक्री हो गया है जो कि चांदी सोना एवं धातु पदार्थों की तेजीको प्रोत्साहन देगा। यहांसे प्रत्येक धातु पदार्थोंमें बहुत लम्बी लाइन तेजीकी बनायेगा। धातु पदार्थोंमें अन्य योग भी तेजी के सूचक हैं, अतः चांदी सोना व अन्य धातुका स्टाक कर लो माल कमा लोगे।

ज्योतिष्मतीके ग्राहकोंको शुभ सूचना

पाठकोंकी बेहद माँग पर इस २३वें वर्षके प्रथमांकसे एक प्रश्नोत्तर विभाग स्थापित किया गया है। इच्छुक सज्जन अपनी जन्मपत्री या प्रश्नपत्र लिखनेका समय लिखकर एक साथ दो प्रश्न पूछ सकेंगे।

कुछ सहयोगी ज्योतिष-पत्रिकाओंने भी प्रश्नोत्तर विभाग चालू किया है। वे हर मास अपनी पत्रिकाके एक दो पृष्ठोंमें १०—१५ प्रश्न और उनके संक्षिप्त उत्तर दो तीन पंक्तियोंमें प्रश्नकर्ताके नाम सहित छापते हैं। किन्तु इसमें छपाई और कागजका व्यर्थ व्यय है। केवल मात्र एक प्रश्नकर्ताके अतिरिक्त दूसरे किसी पाठकका उससे कोई लाभ नहीं, तथा कुछ प्रश्नकर्ता अपना नामधाम व प्रश्न दूसरेको बताना भी नहीं चाहते। इस दृष्टिसे ज्योतिष्मती सम्पादकने प्रश्नोत्तर छापनेका नियम नहीं रखा। प्रश्नकर्ताके पते पर उनका उत्तर बन्द लिफाफेमें भेज दिया जाता है। नित्य अनेकों प्रश्न कूपन आते हैं उन सबका तत्काल उत्तर नहीं दिया जा सकता। एकसे डेढ़ मास तक प्रश्नकर्ताको अपने उत्तरकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। प्रश्नोत्तरके लिए ३५ पैसैका डाक टिकट और नीचे (दाहिनी ओर) छपा कूपन काटकर निम्नाङ्कित पते पर सम्पर्क करें।

पं० श्री अमरचन्द महेशचन्द ज्योतिषी
(ज्योतिष्मती-प्रश्नोत्तर विभाग)
पूंगलपाड़ा, जोधपुर (राजस्थान)

ज्योतिष्मती
(वर्ष २३ अंक ४
प्रश्नोत्तर कूपन

त्रैमासिक व्यापार संदेश

[लेखक :—ज्योतिषरत्न श्री राजाराम जैन पर्जन्य एवं अर्घकाण्ड-वाचस्पति मैनपुरी उ० प्र०]

श्रावण मास

इस मासमें ५ सोमवार होनेसे सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन गुड़ खांड संवत् २०२६ में विशेष तेज तथा संवत् २०३२ में सोना चांदी सर्वधातुके साथ सभी वस्तुयें आपातकालीन स्थितिके दौरमें विशेष मन्दी हुई थीं अतः सामयिक स्थिति देखकर व्यापार करें। विगत मार्गशीर्ष कृष्णा १४ को रविवारे स्वाति योग से संवत् १६४३ में भयानक हिन्द व्यापी सूखे से तेजी चली थी, यहां भी वर्षा न होने पर तेजीकी ही आशा करें, अन्यथा मन्दा होगा। इस मासमें उ० प्र० पंजाब हरियाणा राजस्थान म० प्र० में जहां भी पश्चिम व पश्चिमोत्तरकी वायु जितनी जोरसे चलेगी तदनुसार वहां वर्षा भी होगी, किन्तु पश्चिमी वायु चलते ही वर्षा ऐसे बन्द हो जाती है कि जैसे आती हुई ट्रेन को लाल झंडी दिखाई गई हो। २८ जुलाई को सायं मिथुने शुक्र होते ही शनि दृष्ट बुध +शुक्र योगसे घोर वर्षा, वायुवेग तिलहन-दलहन तेज, सोना चांदी सर्वधातु रुईके साथ की वस्तुयें मन्दी भी सम्भव, गुड़ खांड मन्दे पञ्चक नक्षत्रोंमें वर्षा होना (आजसे ५ दिन में) श्रेष्ठ। कृष्णा ४ को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें जहां भी वर्षा होगी तो वहां आगे भी उत्तम वर्षा होगी। ता० ३० को मार्गी हर्षल तूफानी चाल देगा। १ अगस्त तेजी। ता० २ को मन्दा सार्पे रविमें वर्षा होना उत्तम, सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन गुड़ खांड किरानामें भी अच्छी तेजी होगी। कृष्णा ८ रविवारीके क्षयसे तेजी। ता० ४ की रातमें कर्के बुध होते ही राहु-सूर्य-बुध योगसे सोना-चांदी सर्वधातुके साथ अन्य वस्तुयें भी तेज। कृष्णा १० को रोहिणी नक्षत्र होनेसे संवत् २०२० की भांति अच्छी तेजी आवेगी। बिजलीकी गर्जना, बादल रहित हो तो घोर तेजी होगी। कृष्णा ११ को मृगशिरा नक्षत्र भी तेजीका ही समर्थक है। ता० ७ को आर्द्रा में शुक्र तथा पुष्यमें बुधसे कौशल (म० प्र०) कलिंग सिंधु गुजरात कच्छ उ० प्र० में बादल वर्षा, सभी वस्तुयें मन्दी। ता० ८ को सायं चित्रा भौमसे सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन गुड़ खांड गेहूं ता० ६ को एकदम विशेष तेज। ता० ६।१० घोर वर्षाकारक, चांदी तेज, कृष्णा अमावस रविवारी आश्लेषा संयोगी तेजीकारक है १३ अगस्तकी रातको पूर्वास्त बुधसे १ दिन पहलेसे बादल वर्षा वायुवेग, सोना चांदी सर्वधातु रुई पाट रेशम तेज, सभी खाद्य वस्तुओंकी चलती लाइन बदले या एकदम मन्दा, ता० १४ को होगा। शुक्ला ४ गुरुवारी से रुई पाट रेशम सूत कपड़ा कालीमिर्च कागज १ माससे विशेष तेज पीछे कृष्णा ७ का क्षय यहां शुक्ला ४ की वृद्धिसे देशी घी मूंग चावल उड़द मन्दे होंगे। ता० १५ सार्पे बुधसे गुजरात सौराष्ट्रमें घोर वर्षा, तिलहन-दलहन गुड़ खांड तेज, चन्द्र पृथ्वीसे अति दूर चांदीमें तूफानी कोई चाल देगा। ता० १६ को १/१२ बजे शनिवारमें श्री सूर्यदेव सिंहस्थ होंगे फलतः सोनाके साथ चांदी व अन्य धातुयें लालमिर्च

तांबा गुड़ खांड रुईके साथकी वस्तुयें १ सप्ताह में तेज, तिलहनमें अखाद्य तेल महुआ आदि तेज, अलसी एरण्डाका सहयोग पाकर सींगदाना सरसों तिल्ली खोपरा मन्दे होंगे। गेहूँ दलहन में तेजी होगी। १५ दिनमें घोर वर्षा भी यत्र-तत्र सर्वत्र होगी, मंगलवारा चन्द्रोदय तथा सिंह संक्रान्ति शनिवारी तेजीकारक है। शुक्ला ७ (तुलसी-जयन्ती) सोमबारी होना तो श्रेष्ठ है, किन्तु चन्द्र-सूर्यका बादलोंमें रहना निकलना श्रेष्ठ है। ता० १९ को तुलायां भौम बादल वर्षा चांदी हाइड्रो तिलहन मन्दे, उड़द मूंग मोठ तुअर (अरहर) चना खेसारी गेहूं तेज होंगे। ता० २१ को सायं सिंहे बुध होते ही बादल वर्षा वायुवेग। नींबू खट्टे पदार्थ सोना चांदी तेज, तांबा जस्ता पीतल गुड़ खांड कपूर शेयर्समें मन्दे होंगे। ता० २२ को अश्मक विदर्भ (म०प्र०) बरार खानदेश हैदराबाद बर्धा अमरावतीमें घोर वर्षा, महोत्पात। रुई पाट कपड़ा सूत तिलहन कालीमिर्च चांदी शेयर्स मन्दे (बम्बई-साँगली वायदे मन्दे) दलहन तेज होंगे। ता० २६ को १ सप्ताह पूर्वसे अकल्पित चालसे सभी वस्तुयें तेज, आज चांदी गुड़ खांड दलहन विशेष तेज होंगे। श्रावणी पूर्णिमा मंगलवारीसे सभी खाद्य वस्तुओंमें आगे तेजीके लक्षण बनेंगे।

भाद्रपद मास

कृष्णा १ का क्षय मन्दोकारक, इस मास में उ० प्र० हरयाणा पंजाब राजस्थान म०प्र० में अधिक दिनों तक पुरवाई वायु चले तो अधिक वर्षाके कारण मक्काके दाने बढ़ने नहीं पाते, किन्तु पश्चिमी वायु वर्षाको रोकती है। जिस तिथिसे जिस तिथि तक पश्चिमी वायु ज़ोरसे चले तो उस क्षेत्रमें आगामी माघ मासमें उसी तिथिसे उसी तिथि तक पाला भी निश्चित रूपसे पड़ता है, परीक्षा करें। ता० २७ को नेपच्यून-प्लूटो त्रिरेकादशसे यातायातकी वस्तुयें तेज। २८ अगस्त को शी० पूफायां बुधसे सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन गुड़-खांड मन्दे। ता० २९ की रातको शी० स्वात्यां भौमसे सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन गुड़ खांड सुपारी तेज होंगे। ता० ३० को सवेरे पूफायां रविसे उप-र्युक्त क्षेत्रोंमें पूर्वी वायु चले तो घोर वर्षा, यथाफल :—"जो पुरवा पुरवाई पावें। सूखी नदियन नाव चलावें।" सभी वस्तुयें तेज होंगी। ता० ३१ को सवेरे पश्चिमास्त गुरुसे कहीं अतिवृष्टि तो कहीं वर्षा नाश, रुई पाट रेशम कालीमिर्च कागज़ तिलहन दलहन गुड़ खांड किराना हल्दी सोना चांदी सर्वधातुमें भयानक चाल देगा। १ सितम्बरको मार्गी नेपच्यूनसे सभी वस्तुओंमें जबर्दस्त चाल, सायं कर्के शुक्र होते ही राहु+शुक्र योगसे रुईके साथकी वस्तुयें २४ अंश तक मन्दी, सोना चांदी सर्वधातुमें कोई चाल तिलहन-दलहन गुड़ खांड गेहूँ तेज होंगे। ता० २ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर वृश्चिकांशे गुरु-बुधसे प्राय: अनेक स्थानोंमें बादल वर्षा होनेकी आशा है, उपजकी कमी-बेशीकी अफवाह पर कोई चाल जोर-शोरसे निकलेगी। ता० ३ को बुध-गुरु युतिसे घोर वर्षा, तिलहन-दलहन गुड़ खांड तेज। ता० ४ को रात्रिमें सभी खाद्य वस्तुओंके साथ सोना चांदी सर्वधातुयें भी ता० ५ को मन्दी होंगी। ता० ५ को ढाई बजे शनि अस्त (बुध-गुरु-

शनि तीन ग्रह अस्त) से मन्दी वस्तुयें खरीदो। १ मासमें तेजी। ता० ६ को कन्या बुध होते ही शनि+बुध योग साथ ही कर्क शुक्रसे तिलहन दलहन मन्दे, गेहूं चना गुड़ खांड सोना चांदी हल्दी तेज होगी। भाद्रपदी अमावस मंगलवारी सभी वस्तुओंमें आगे घोर तेजीका संकेत करती है। ता० ९ को गुरु-नेपच्यून केन्द्र होनेसे कलसे भयानक मन्दा यातायातकी वस्तुओंमें हो सकेगा।

गुजराती भाद्रपद मास

५ बुधवार होनेसे लाल वस्तुयें गेहूं चना तुअर (अरहर) गुड़ सूत रस-कस तेज। शुक्ल पक्षमें ३ बुधवार होनेसे सभी वस्तुओंमें एकदम घोर तेजी, ११ सितम्बरको पश्चिमोदयी बुध से बादल वर्षा वायुवेग वस्तुओंकी चलती लाइन में अकस्मात् भयानक परिवर्तन अथवा सोना चांदी सर्वधातु रुई पाट रेशम सूत कालीमिर्च कागज शेयर्स मन्दे। शुक्ला २ को सूर्य-चन्द्र बादलोंमें ही रहें तो धान्योत्पत्ति श्रेष्ठ, ता० १३ को ३।३६ बजे सूर्य-गुरु युतिसे गुड़ खांड तेज, अन्य वस्तुयें मन्दी. उफा. रविसे उ० प्र० हरियाणा पंजाब राजस्थान म० प्र० में वर्षा होना श्रेष्ठ, सोना चांदी सर्वधातु तिलहन-दलहन उड़द मूंग गुड़ खांड तेज, रुई पाट रेशम कालीमिर्च ४ दिनमें मन्दी, शुक्ला ४।५। ७।८।११।१५ को उपर्युक्त क्षेत्रोंमें बादल बिजली गर्जना हो तो शीघ्र ही वर्षा होती है। शुक्ला ५ विशाखा नक्षत्र संयोगी ४ मास तक अथवा चौथे मासमें रुई कपासके संग्रहसे लाभ होगा। ता० १४ को बुध-शुक्रका अंशात्मक त्रिरेकादश आगे घोर तेजी तभी लावेगा जबकि वर्षा न हो। शुक्ला ७ को अनुराधा नक्षत्रमें वर्षा हो तो श्रेष्ठ अन्यथा वर्षाकाल समाप्त हुआ जानना चाहिए। शुक्ला ७ को वृद्धिसे सभी वस्तुयें मन्दी, धनुरंशे गुरु-शुक्र वर्षा भी लावेंगे। ता० १५ तेजी ता० १६ को १ बजे श्री सूर्यदेव कन्या राशिस्थ होंगे, फलतः सभी वस्तुओंमें तेजी आवे आश्चर्य नहीं। ता० १७ को सार्पे शुक्रसे देहातोंमें सर्प काटने की दुर्घटनाओं तथा विषाक्त इन्जैक्शनोंका खोटा प्रभाव होगा। चांदी सोना तेज, तिलहन-दलहन चावल मक्का गुड़ खांड मन्दे होंगे। ता० १८ की रातको विशाखायां भौमसे उपज में कमी, उपर्युक्त सभी वस्तुयें तेज, ता० २० की रातको चित्रा बुधसे मन्दीका झटका, शुक्ला ११ के क्षयसे देशी घीके साथ अन्य वस्तुयें भी तेज। ता० २२ को सायं ५ बजे गुरु-हर्षल त्रिरेकादशसे सभी वायदे तेज। ता० २३ को सूर्य-शनि युतिसे वायदेकी सभी वस्तुओं में अच्छी तेजी आवेगी। भाद्रपदी पूर्णिमा पू० भा०-उ०-भा० संयोगी उत्तम, यदि बादल बिजली गर्जना हो तो सभी खाद्य वस्तुयें बेचना, खुला रहे तो स्टाक रोकनेसे आगे लाभ होगा, किन्तु घोर वर्षा जहां भी होगी, वहां रोगोपद्रव भी अवश्य होगा।

आश्विन मास

इस मासमें ५ गुरुवार होनेसे शेयर्स तेज, पश्चिमी हिन्दमें विग्रह। २५ सितम्बरको तिलहन-दलहन गुड़ खांड मन्दे, ता० २६ को पूर्वोदयी गुरु आश्विन मासमें होनेसे सभी वस्तुयें मन्दी अथवा १ सितम्बरसे वस्तुओं की जो भी चली लाइन होगी, वह यहांसे बदलेगी। ता० २६ को सोना चांदी सर्वधातु में संवत् २०२६ की भाँति अच्छा मन्दा सम्भव,

गुड़ खांड चीनीमें भी अच्छा मन्दा, तिलहन-दलहन चना तेज, सामयिक स्थिति देखकर व्यापार करें। प्राय: प्रतिवर्ष आश्विन कृष्णामें उपजकी कमी-वेशी पर तेजी या मन्दीका अच्छा दौर चला करता है, आज ही सायं हस्ते रवि में वर्षा हो तो गेहूं धान ईख (गन्ना) की फसल को लाभ, तिल और कपासको हानि होती है। कल सभी वस्तुयें तेज हो सकेंगी। कृष्णा ४ शनिवारी गुड़ खांडको मन्दा करती है, कृष्णा ५ रविवारीसे आगे माघी अमावससे देशी घी तेज होगा। ता० २९ को सोना तांबा गेहूं जौ चना तुअर लालमिर्च तिलहन तेज, गुड़ खांड चांदीमें मन्दा करेगा। ता० ३० को सोना चांदी सर्वधातु तिलहन मन्दे, १ अक्टोबर को सभी वस्तुयें मन्दी। ता० २ को महोत्पात, सभी वायदे मन्दे। ता० ३ को चांदी तिलहन दलहन चना मटर तुअर (अरहर) खेसारी मन्दे। सोना तांबा खांड लोंग सुपारी हींग केडियम हाइड्रो तेज करेगा, कहीं-कहीं वर्षा भी होगी। ता० ८ को घी० अनुभे भौमसे तिलहन सोना चांदी गेहूँ लालमिर्चमें मन्दा सम्भव, चना चावल दलहन तेज होंगे। कृष्णा १४ को उपर्युक्त क्षेत्रोंमें जहां भी जोरकी वायु चले तो वहां १० दिन बाद अन्नादि तिलहन-दलहन गुड़ खांड तेज होंगे। कृष्णा ३० की वृद्धिसे सभी खाद्य वस्तुयें तेज, रुई पाट रेशम कालीमिर्च मन्दे होंगे। ता० ९ से दो मासमें सोना चांदी सर्वधातु गेहूं चना जौ तिलहन-दलहन गुड़ खांड़ समस्त क्षार सुपारी लोंग इलायची अफीम तेज, समुद्रके किनारे तथा हिमालयके समीप महोत्पात विग्रह करावेगा। १० अक्टूबरको सोना चांदी सर्वधातु रुई पाट रेशम तिलहन-दलहन उड़द मूंग गुड़ खांड तेज। आज जोरदार वर्षा उ०प्र० हरियाणा पंजाब राजस्थान म०प्र० में जहां जहां भी होगी तो वहां उड़द मूंगकी उपज कम होगी। सायं शुक्रवारा चन्द्रोदय (१५ मुहूर्ता) सोना चांदी सर्वधातु रुई पाट रेशम तेज करेगा। रातको शन्युदय पूर्वमें होनेसे यहां तक कि जिन वस्तुओंमें तेजी आ चुकी हो बेचना, मन्दी हो चुकी हो खरीदें। ७ सितम्बरको चली लाइन बड़े जोरसे यहांसे बदलेगी। रुई पाट रेशम सोना चांदी तेज होंगे। गुड़ खांडकी चाल देखकर व्यापार करें। ता० ११ को पूफायां शुक्रसे सभी वस्तुयें मन्दी, ११ की रात को विशाखायां बुधसे सभी वस्तुयें ता० १३ को मन्दी होगी। शुक्ला ५ मंगलवारीसे चांदी तेज, शुक्ला ६ बुधवारीसे अन्नादि तेज। ता० १७ की रातको गुरुवारमें श्री सूर्यदेव तुला राशिस्थ होंगे फलतः गुड़ खांडके साथ सभी वस्तुओंमें मन्दी आनेकी आशा है, स्टाक निकाल दें। वायदेमें बिकवाली करें। शुक्ला १० रविवारी भी मन्दी ही लावेगी। ता० २१ को तिलहन-दलहन गुड़ खांड सोना चांदी तेजी में बेचना। ता० २२ को १२।३४ बजे उफायां शुक्रसे सभी वस्तुयें मन्दी, शुक्ला १४ के क्षय से सभी वस्तुयें तेज, ता० २३ को किराना सोना तेज, तिलहन-दलहन गुड़ खांडमें अच्छा मन्दा। व्यापारियों पर सङ्कट आवेगा।

नोट :—लाभ-हानिका पूर्ण उत्तर दायित्व प्रयोक्ता पर ही रहेगा, अपनी शक्तिके अनुसार कार्य करें।

★

समस्त कष्ट निवारक श्री महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्रस्य ईशान-भैरवो ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, हौं बीजं सः शक्तिः जूं कीलकम् मम (सकुटुम्बस्य यजमानस्य वा) सर्वाबाधा निवारणार्थे जपे विनियोगः।

करन्यास :—

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे तर्जनीभ्यां स्वाहा
ॐ सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् मध्यमाभ्यां वषट्
ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां वौषट्
ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् कनिष्ठिकाभ्यां हुं
ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

एवं हृदयादिन्यासाः

अथ ध्यानम् :—

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतघटैराप्लावयंतं शिरः।
द्वाभ्यां तौ दधतं मृदाक्षवलये द्वाभ्यां वहन्तं परम्॥
अंकन्यस्त करद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवम्।
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटं देवं त्रिनेत्रं भजे॥

अथ मन्त्र :—

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात्। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।

यह मंत्र मुझे ब्रह्मलीन बाबा श्री मोतीलालजी महाराज बम्बई निवासीसे प्राप्त हुआ था जिनके जीवनके विषयमें 'चण्डी' में कई लेख निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं। रोग निवृत्तिके लिये इस महामंत्रकी ४ माला रोगीके पास बैठकर करें।

—कन्हैयालाल शर्मा उपाध्याय

लेखकोंको आवश्यक सूचना

'ज्योतिष्मती' के आगामी २४वें वर्षके 'नववर्षाङ्क' के लिए जो महत्त्वपूर्ण लेख स्पष्टाक्षरों में कागजके एक ओर मार्जन छोड़कर लिखे हुए दिनांक १० सितम्बर १९८० तक सम्पादकके पास पहुंच जावेंगे वे ही छप सकेंगे। कागजके दोनों ओर अस्पष्ट घसीट अक्षरोंमें लिखे हुए या टाइप की हुई अस्पष्ट प्रेस कापी स्वीकार न होगी। त्रैमासिक व्यापार-स्तम्भ एवं राशिफलके विद्वान् लेखक महानुभाव समयका ध्यान रखकर १० सितम्बर तक लेख पहुँचा दें। अन्यथा विलम्ब करनेसे लेख छप नहीं सकेगा।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन १७३२१२ (हिमाचलप्रदेश)

दारिद्र्यनाशन तथा नवग्रहोंकी शांति हेतु

अनुभूत तांत्रिक विधान

[यह प्रयोग ४ वर्ष पूर्व ज्योतिष्मतीमें छपा था। कई पाठकोंने लाभ उठाया और अब कई नये पाठक उक्त अंककी या विधानकी प्रतिलिपिकी मांग कर रहे हैं, वह अंक हमारे संग्रहमें नहीं है। वर्तमान वर्षके पंचांगमें भी वह छापा था परंतु अब पंचांग भी उपलब्ध नहीं है, अतः वह प्रयोग यहां हम पाठकोंके लाभार्थ पुनः प्रकाशित कर रहे हैं।
—सम्पादक]

मन्त्र—"ॐ नमो भास्कराय अमुकस्य सर्व ग्रहाणां पीड़ा नाशनं कुरु कुरु स्वाहा।"

विधि—आक, धतूरा, ओंगा (चिरचिटा या अपामार्ग) की जड़, दूब, बड़, पीपल, इनकी जड़, शमी (खेजड़ी) पत्र, आम पत्र, गूलर पत्र, ये सब वस्तुएँ मिट्टीके पात्रमें रखकर उसमें घी, दूध डाल देवें तथा चावल, चना, मूंग, गेहूं, तिल, गोमूत्र, सफेद सरसों, कुश, चन्दन, शहद छाछ (मठा) ये सब वस्तुएं भी उसी कुल्हड़में रखें, फिर इनको शनिवारके दिन सायंकालके समय उपरोक्त मन्त्रसे १०८ बार मन्त्रित करके इस कुल्हड़को पीपलकी जड़में गाड़ देवें तो घोर पातक महान् दारिद्रय तथा ग्रहोंकी पीड़ा, भय आदि सर्व उपद्रव तत्काल ही नष्ट हो जाते हैं। निःसन्देह लक्ष्मीकी शीघ्र प्राप्ति होती है। इस विधानसे अनेक भाइयोंने अब तक लाभ उठाया है। परीक्षित है।

रोजी मिले धनकी वृद्धि होवे

मन्त्र—"ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वजन मोहनी सर्व कार्य करणी मम विकट संकट-हरणी मम मनोरथपूरणी मम चिन्ता चूरणी ॐ नमो ॐ पद्मावती नमः स्वाहा।"

विधि—पवित्र हो मनको एकाग्र चित्त करके त्रिकाल इस मंत्रकी १-१ माला धूप देता हुआ जो प्राणी जाप करता है और १५ का यंत्र केशरसे लिखकर सामने रखकर धूप दीप पुष्प नैवेद्यसे पूजन करता है तो देवी साधकको उसकी इच्छानुसार धनधान्यसे पूरित करके सुखशांति प्रदान करती है।

('ज्योतिष्मती' वर्ष १९ अंक ३ से)

ज्वालामुखी योगका फल

जन्में सो जीवे नहीं बसे तो ऊजड़ थाय।
स्त्री चूड़ो पहिन ले (तो) आचरण सेती जाय॥
कुए न पाणी सांचरे खाट पड़ो न जीवंत।
गांव गयो नहीं बाहूड़े जोसी यूं कहवंत॥
चोथ४ चवदश१४ नवमी९ जाण।
रवि शनि मंगलवार बखाण॥
तीनों उत्तरा बालक जायो।
सहदेव कहै यो बीज परायो॥
चोथ नवमी चवदश रेवे।
जाया पुत्र ने बांधव सेवे॥
आप मरे अरु कुटुम्ब संहारे।
नाम दिरायां सूं जोसी मारे॥
ऐसो पूत जणो मत माई।
छठे महीने मारे दाई॥

कुछ ग्रहोंका संचार भी देखना चाहिये।

—अम्बालाल शर्मा

पं० श्री शंकरलालजी जोशीका नागरिक अभिनन्दन

एवं

पं० श्री मानचन्द ज्योतिष-निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण

जोधपुरके संसद सदस्य श्री अशोक गहलोतके मुख्य आतिथ्यमें रविवार दिनांक ३० मार्च ८० को चण्डूवंश-विभूषण, ज्योतिषाचार्य, रमलशास्त्री, ८४ वर्षीय पं० श्री शंकरलालजी जोशीका नागरिक अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ। उन्हें इक्यावन-सौ रुपयेकी थैली एवं गर्म शाल भी भेंट की गई। जोधपुरकी विभिन्न विद्वत्-संस्थाओं, प्रतिष्ठित नागरिकों एवं ज्योतिर्विदोंने, जिनमें सर्वश्री आचार्य रमानन्दजी शास्त्री सारस्वत, श्री शिवनारायणजी दवे, श्री जयनारायणजी जोशी व श्री भोजराजजी शास्त्रीके नाम उल्लेखनीय हैं। ज्योतिष जगत्में जोशीजी द्वारा की गई सेवाओं की मुक्तकण्ठसे सराहना करते हुए दीर्घायुकी कामना व्यक्त की गई। -

मारवाड़के इतिहासमें यह प्रथम गौरवका दिन था जब एक वयोवृद्ध ज्योतिषीका नागरिक अभिनन्दन हुआ। इसका श्रेय पं० श्री अमरचन्दजीको है जिन्होंने श्री खुशहालचन्दजी पुरोहित व श्री हस्तीमलजी गट्टाणीकी अध्यक्षता एवं मन्त्रित्वमें ग्यारह सदस्यी 'पं० शंकरलालजी जोशी नागरिक अभिनन्दन समिति' का गठन कर समारोहके आयोजनको सफल बनाया।

इस समारोहके साथ-साथ पं० श्री अमरचन्द द्वारा अपने पिताश्रीकी स्मृतिमें घोषित पं० मानचन्द ज्योतिष निबन्ध प्रतियोगिताके प्रथमवर्षीय पुरस्कार भी वितरण किये गये। प्रथम पुरस्कार १५१) रु० का श्री राजेन्द्रकृष्ण बिस्सा व ५१)५१) के दो द्वितीय पुरस्कार श्री जगदीश सिंह सिसोदिया व श्री मदनमोहन दवेराको संसद सदस्य श्री अशोक गहलोत द्वारा ही प्रदान करवाये गये।

—संयोजक

दिवंगत हिन्दी-सेवी

हमने हिन्दीमें अच्छी सन्दर्भ मूलक परिचय-सामग्रीके अभावका अनुभव करके 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' नामक एक ऐसे आकर-ग्रन्थके निर्माणका पावन संकल्प किया है जिसमें फोर्ट विलियम कालिजकी स्थापना (सन् १८००) से लेकर आज तकके उन सभी दिवंगत मनीषियों, साहित्यकारों पत्रकारों और कवियोंके जीवन तथा कृतित्वसे सम्बन्धित विशद एवं प्रामाणिक सामगी प्रस्तुत की जायगी।

इतने विशाल देशमें फैले हुए हिन्दी-सेवियोंके कार्य क्षेत्रको देखते हुए उनके जीवन और कार्योंसे सम्बन्धित प्रामाणिक सामग्रीका संकलन करना सर्वथा कठिन और दुस्साध्य समझकर अपनी

योजनाके प्रारूपको प्रस्तुत करते हुए हमने हिन्दीके सभी विद्वानों, और अध्येताओंसे सानुरोध निवेदन किया था कि वे उस 'प्रारूप' में अंकित अपने-अपने क्षेत्रोंके दिवंगत हिन्दी-सेवियोंके जीवन और कृतित्वके सम्बन्धमें पूर्ण परिचय-सामग्री और चित्र आदि यथाशीघ्र हमारे पास भेजकर इस 'साहित्य यज्ञ' की सफलतामें अपना सौजन्यपूर्ण सहयोग प्रदान करनेकी अनुकम्पा करें।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि न केवल सुधी विद्वानों, पत्रकारों, प्रेमी पाठकों और हिन्दी-प्रेमियोंने हमारा इस प्रकारका उन्मुक्त हृदयसे स्वागत किया, प्रत्युत सभी ओरसे सौजन्यपूर्ण सहयोग और साहाय्यका सबल सम्बल भी हमें प्राप्त हुआ। 'दिवंगत हिन्दी-सेवी' ग्रन्थके लिए परिचय-सामग्रीमें हिन्दी सेवी के चित्रके साथ (१) पूरा नाम, (२) जन्म-तिथि, (३) निधन-तिथि, (४) जन्म-स्थान, (५) सभी प्रकाशित कृतियोंके नाम-उनके प्रथम संस्करणके सन्‌के उल्लेख सहित, (६) साहित्य-सेवा तथा (७) अन्य विशेष उल्लेखनीय सन्दर्भ वांछित हैं।

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'

अजय निवास, दिलशाद कालोनी, शाहदरा—दिल्ली—३२

श्री संजय गांधीका दुःखद निधन

भारतकी प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधीके कनिष्ठ सुपुत्र, उदीयमान नेता एवं भारतीय युवावर्गका प्रिय सम्बल श्री संजय गांधीका दि. २३ जून ८० को प्रातः ८॥ बजे नई दिल्लीमें एक विमान दुर्घटनामें निधन हो गया। भारतको आशाका केन्द्र एक उभरता हुआ नेतृत्व समाप्त हो गया। श्री संजय गांधीने गत ५ वर्षसे राजनीतिमें प्रवेश किया था और अब १९८० में वे एक प्रकाशमान नक्षत्रकी भांति चमके थे, किन्तु दुर्दैवने उनकी आशाओं को पूर्ण नहीं होने दिया।

श्रीमती गांधी पर जो यह अनभ्र वज्रपात हुआ उसकी पीड़ाको मातृहृदय ही जान सकता है। किन्तु, श्रीमती गांधी केवल संजयकी माँ ही नहीं, अपितु करोड़ों भारतीय युवाजनों की मातृरूपा वीर धीर गम्भीर आदर्श महिला हैं। उनके वीर पुत्रकी अस्थियां—शक्तिशाली संगठित युवावर्गका सम्बलरूप—वज्रास्त्र बनकर राष्ट्रद्रोही वृत्रासुरका वध करनेमें समर्थ होंगी। ज्योतिष्मती-परिवार श्री संजय गांधीको श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए प्रभुसे प्रार्थना करता है कि श्रीमती गांधी एवं पारिवारिक जनोंको यह दारुण दुःख सहन करनेकी शक्ति एवं राष्ट्रसेवारत रहनेका बल प्रदान करे।

—हरदेव शर्मा त्रिवेदी

लाभदायक सूचना

'ज्योतिष्मती' के वर्तमान २३वें वर्षके इस चौथे अंक तक कुल ९२ अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इन अंकोंमें ज्योतिष, आयुर्वेद, सामुद्रिक, रमल और मंत्र-तंत्र-यंत्र सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण उपयोगी लेख छपे हैं, जो अन्यत्र उपलब्ध होना असम्भव है। दुर्लभ सामग्रीके कारण इन अंकोंमें ३२ अंक अब उपलब्ध नहीं है। शेष ६० अंकोंकी भी थोड़ी प्रतियां बची हैं। गत ६ वर्षोंसे कई महत्वपूर्ण उपयोगी लम्बे लेख क्रमशः दो तीन अंकोंमें प्रकाशित हुए हैं, अतः वर्षभरकी पूरी फायलके ारों अंक जिन पाठकोंके पास होंगे वे ही पूरा लाभ उठा सकते हैं। प्रत्येक गत अंकका मूल्य ३/२५ तीन रुपये पच्चीस पैसे हैं। गत २२वें वर्षका अन्तिम चौथा अंक और वर्तमान २३वें वर्षका पहला नववर्षाङ्क' और तीसरा अङ्क (गताङ्क) किसी भी मूल्यमें उपलब्ध नहीं है।

ज्योतिष्मती' का वार्षिक मूल्य १५/—रुपये हैं। पंचवर्षीय ६०/—रु० हैं। आजीवन सदस्य ल्क अब १५१/—है। आजीवन सदस्योंको 'ज्योतिष्मती' के गत १२ अंक ३९/—मूल्यके निःशुल्क ने जावेंगे। जो सज्जन 'ज्योतिष्मती' के दो नये ग्राहक बनाकर ३०/—रु० वार्षिक मूल्य मनीआर्डर ः भिजवा देंगे—उन्हें 'ज्योतिष्मती' के ३ गतांक ९/७५ मूल्यके उपहारमें बिना मूल्य भेजे जावेंगे। ये ग्राहकोंको पूरा नाम पता और मनीआर्डर रसीदका नम्बर लिखना होगा।

'ज्योतिष्मती' और पञ्चांग न मिलनेकी शिकायतें

गतवर्षसे 'ज्योतिष्मती' के अङ्क न पहुंचनेके उपालम्भ कई ग्राहकोंके आ रहे हैं। हमारे यहांसे 'ज्योतिष्मती' का प्रत्येक अंक छपते ही तत्काल दो दिनमें डाक द्वारा भेज दिया जाता है। प्रत्येक ग्राहकका पता भलीभांति जांचकर लिखा जाता हैं। फिर भी हरबार शिकायतें मिलने पर लगभग डेढ दो सौ अंक हम दुबारा भेजते हैं। इन दिनों डाक-विभागमें इतनी गड़बड़ी है कि पत्र-पत्रिकाएं समय पर पहुँचती नहीं। दूसरी बार बेरंग और पोस्टिंग सर्टीफिकेटसे भेजे हुए अंक भी कुछ ग्राहकोंको नहीं मिले हैं। एक ही ग्राहकको तीन बार अंक भेजनेमें हम असमर्थ हैं। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि पूर्णिमासे १० दिन बाद तक जिन ग्राहकोंको अंक न मिले तो वे तत्काल पत्र लिखकर दुबारा बेरंग मंगवा लें। गताङ्क (वर्ष २३ अंक ३) न मिलनेकी शिकायत अब तीन मास तक कई ग्राहक लिख रहे हैं उनको अभी तक हम २०० अंक दुबारा भेज चुके हैं अब गताङ्ककी प्रतियां शेष नहीं हैं।

'श्रीविश्वविजयपंचांग' भी इस वर्ष कई स्नेहीसज्जनोंको न मिलनेकी शिकायतें आई हैं। क रुपयेका पोस्टेज अधिक लगाकर रिकार्डेड डिलीवरीसे पंचांग हमने भेजे—जिनकी पोस्टल ीदें हमारे पास हैं। परंतु कई सज्जनोंको रिकार्ड डिलीवरीसे भी पंचांग नहीं मिला। अतः र्तमान वर्षका पंचांग अब न तो हमारे पास शेष हैं और नाहीं प्रकाशकके पास दिल्लीमें। नये वर्ष ं० २०३८ वि० के दोनों पंचांग छप रहे हैं, दीपावली तक प्रकाशित हो सकेंगे।

जन्मपत्र वर्षफलादि बनाने देखने आदिका ज्योतिष सम्बन्धी अन्य सब कार्य स्थगित है, अतः इस सम्बन्धमें कोई सज्जन सम्पादकसे पत्र व्यवहार न करें।

—व्यवस्थापक

'ज्योतिष्मती' सोलन (हि०प्र०)

"JYOTISHMATI" REGISTRAR NEWS PAPERS FOR INDIA R.N., 4941/57

हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा कुमार प्रि० प्रैस सोलनमें छापकर ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलनसे प्रकाशित।